संसार में कितनी सिन्डरैला

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Sansar Mein Kitni Cinderella (Cinderella in the World)
Cover Page picture: Cinderella Shoes
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

संसार में कितनी सिन्डरैला 7

1 चॉद की भौंह वाली 9

2 ये–शैनः एक सिन्डरैला कहानी 19

3 नीच सौतेली मॉ 26

4 काली गाय की कहानी 32

5 सुदेवा बाई 39

6 कोरियन सिन्डरैला 58

7 मारिया और सुनहरी जूते 66

8 आश्चर्यजनक बिर्च 74

9 बाबा यागा 98

10 अक्लमन्द वासिलीसा और बाबा यागा 108

11 सुनहरा जूता 127

12 टैम ओर कैम की कहानी 141

13 गरीब टर्की लड़की 158

14 टर्की का झुंड 175

15 इन्डियन सिन्डरैला 180

16 छिपा हुआ 190

17 मिश्र की सिन्डरैला 199

18 राडोपिस और उसके सुनहरी जूते 207

20 नैटिकी 224

21 नोमी और जादू की मछली 230

22 समुद्र क्यों कराहता है 236

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000**, तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

संसार में कितनी सिन्डरैला

बच्चो सिन्डरैला की कहानी तो तुम सबने सुनी होगी जिसमें एक बिन माँ की बेटी की शादी एक राजकुमार से हो जाती है और उसकी एक या दो सौतेली बहिनें देखती रह जाती हैं। पर यह कहानी अकेली ही नहीं है। सिन्डरैला जैसी बहुत सारी कहानियाँ हैं। आज हमने इस पुस्तक में तुम्हारे लिये सिन्डरैला और उसकी जैसी कई कहानियाँ यहाँ इकट्ठी कर के रखी हैं। तुम लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि सिन्डरैला की कहानी संसार भर में कई रूपों में पायी जाती है। इसके **365** रूप अब तक इकट्ठा किये जा चुके हैं।[2]

ये कहानियाँ ऐसी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाने पर भी सुनने में एक सी लगती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही कहानियाँ दी जा रही हैं। ये सब कहानियाँ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियाँ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। ऐसी कहानियाँ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियाँ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम **11** पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ"। इसमें "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियाँ थीं।[3] इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियाँ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[4]

अब प्रस्तुत है इस सीरीज़ की **12**वीं पुस्तक "सिन्डरैला जैसी कहानियाँ"। सिन्डरैला की बहुत सारी कहानियाँ होने की वजह से इस पुस्तक को कई भागों बाँट दिया गया है। सिन्ड्रैला की कहानी यूरोप की एक बहुत ही प्रसिद्ध और प्रचलित कहानी है। इसके पहले दो भागों में यूरोप के देशों में कही जाने वाली कहानियाँ दी गयी थीं। अब प्रस्तुत है इसका तीसरा भाग — "संसार में कितनी सिन्डरैला"। इसमें सिन्डरैला की वे कहानियाँ हैं जो यूरोप के अलावा संसार के दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं। ये सब कहानियाँ हमने तुम्हारे लिये विभिन्न स्रोतों से एकत्र की हैं।

तीनों भागों में दी गयी सिन्डरैला की कहानियों की सूची इस पुस्तक के अन्त में दी गयी है। तो लो इतनी सारी सिन्डरैला की कहानियाँ अब हिन्दी में। आशा ही सिन्डरैला जैसी इतनी सारी कहानियाँ पढ़ कर तुम्हें अवश्य ही आश्चर्य भी होगा और खुशी भी।

---

[2] See this site - http://www.365cinderellas.com/

[3] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[4] "One Story Many Colors-3" – like "Tom Thumb"

1 चॉद की भौंह वाली[5]

सिन्डरैला जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के अफगानिस्तान देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि अफगानिस्तान में एक सौदागर रहता था। उसने अपनी बेटी को पढ़ने के लिये एक मदरसे[6] में दाखिल करा दिया था।

उस मदरसे की टीचर एक स्त्री थी। उसने सुना कि वह सौदागर तो एक बहुत ही अमीर आदमी था सो उसने कुछ प्लान बनाना शुरू कर दिया।

एक दिन उसने उस लड़की से पूछा कि उसके घर में क्या क्या था। लड़की ने जवाब दिया "सिरका"। अब उसने लड़की के दिल में बुराई के बीज बोने शुरू कर दिये। बहुत जल्दी ही उसने लड़की का प्यार जीत लिया।

फिर उसने उससे अपने घर के बड़े से बैरल[7] में से सिरका लाने के लिये कहा और कहा कि जब

---

[5] Moon Brow – a fairy tale from Afganistan, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.365cinderellas.com/search/label/Afghanistan
Taken from Dundess, A. Cinderella: a casebook. NY: Wildman Press. 1982.
[My Note: There is some vulgarity in this tale. To remove that vulgarity from this tale I have changed a couple of statements. I apologize for that. Besides it has very little coherency. To maintain its coherency I have to add several expressions. I apologize for that too.]

[6] Madarsaa means school

[7] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern

उसकी मॉ उसको सिरका दे दे तो वह उसको धकेल कर उस बैरल में डाल दे और बैरल को ढक दे। वह उस बैरल में गिर कर मर जायेगी। फिर वह अपने पिता से कह दे कि उसकी मॉ उस बैरल में फिसल कर गिर गयी और मर गयी।

उसने घर जा कर ऐसा ही किया तो उसकी मॉ उस बैरल में गिर कर मर गयी। बाद में सौदागर ने अपनी पत्नी को सिरके के बैरल में मरा पाया और एक नयी पीली गाय घोड़ों के अस्तबल में पायी।

अभी इस बात को एक महीना भी नहीं हुआ था कि सौदागर ने अपनी बेटी की टीचर से शादी कर ली।

तो अब इसके पास एक पत्नी हो गयी और एक गाय हो गयी। उसकी नयी पत्नी ने लड़की को गाय को मैदान में चराने का काम दे दिया। कुछ दिनों बाद टीचर को बच्चे की आशा हो गयी तो वह सौदागर की लड़की से नफरत करने लगी क्योंकि अब तो उसका अपना बच्चा आने वाला था।

बाद में उसने एक बेटी को जन्म दिया। दोनों बहिनें साथ साथ बड़ी होने लगीं।

अब उस सौदागर की बेटी जब भी गाय चराने बाहर जाती तो उसकी सौतेली मॉ उसको पुरानी रोटी का केवल एक टुकड़ा ही खाने

---

barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter.

के लिये देती। साथ में जब वह गाय चर रही होती तो उसको बहुत सारी रुई साफ करने के लिये और कातने के लिये भी देती।

अब लड़की को तो कातना आता नहीं था सो वह घर से रुई ले तो गयी पर जब वह मैदान में अकेली रह गयी तो वह रोने लगी। तभी उसने किसी की आवाज सुनी। अरे यह तो उस पीली गाय की आवाज थी जिसको वह चराने के लिये ले कर आयी थी।

वह उससे कह रही थी कि वह उसे अपनी पुरानी रोटी और रुई दोनों खाने के लिये दे दे। लड़की ने वैसा ही किया जैसा कि गाय ने उससे करने के लिये कहा था। गाय ने रोटी खा ली और शाम तक उस रुई का सूत कात दिया।

ऐसा तीन दिन तक लगातार चलता रहा। बस वे सुबह और शाम को सौदागर के घर जाती थीं। तीसरे दिन बहुत ज़ोर से हवा चली जिससे कि उनके सूत का गोला उस हवा में उड़ गया और सीधा एक कुँए में जा गिरा।

इससे पहले कि वह लड़की अपने सूत का गोला लाने के लिये उस कुँए में नीचे उतर पाती गाय ने उसको खास तरीके से कहा कि वहाँ उसको एक बुढ़िया "बारज़ंगी" मिलेगी जिसको उसे जा कर सलाम[8] करना चाहिये।

[8] Salaam is a common greeting in Muslims.

फिर जब वह उससे यह कहे कि "मेरे सिर में से जूँ[9] निकाल दो।" तो वह उससे यह कहे कि "आपके बाल तो बिल्कुल ठीक हैं बल्कि वे तो मेरे बालों से भी ज़्यादा साफ हैं।" उसके बाद ही वह उसके सिर में से जूँ निकाले।

यह सुन कर वह लड़की उस कुँए में नीचे उतर गयी। गाय के कहे अनुसार उसको वहाँ एक बुढ़िया मिली जिसको उसने जाते ही सलाम किया। उसके साथ वही हुआ जो गाय ने कहा था और उसने भी वही किया जो गाय ने उससे करने के लिये कहा था।

बाद में बुढ़िया ने उससे कहा कि वह अपना सूत का गोला फलाँ कमरे में से निकाल ले जहाँ उसको बहुत सारे जवाहरात भी मिलेंगे।

जब वह उस कमरे में से अपना सूत का गोला लेने गयी तो उसने वहाँ सचमुच में ही बहुत सारे जवाहरात देखे। पर उन्होंने उसको ललचाया नहीं। उसने अपना सूत का गोला उठाया और वहाँ से चली आयी। उसने बुढ़िया को फिर से सलाम कहा और कुँए में से बाहर निकलने के लिये सीढ़ियाँ चढ़ने लगी।

जब वह सीढ़ियों पर आधे रास्ते पर थी तो उसने बहुत ज़ोर की एक चीख सुनी। वह बुढ़िया की चीख थी। वह इसलिये चीखी थी कि वह उस लड़की पर जवाहरात चुराने का इलजाम लगा रही थी।

[9] Translated for the word "Lice" – see its picture above.

पर क्योंकि उसका कोई जवाहरात चोरी नहीं हुआ था तो वह उस लड़की से बहुत खुश हो गयी। उसने उसके लिये दुआ की कि उसकी दोनों भौंहों के बीच मे एक चॉद उग आये।

जब वह कुँए के बाहर आ गयी तब उस बुढ़िया ने उसको एक और आशीर्वाद दिया कि उसकी ठोड़ी पर एक तारा आ जाये।

उसने लड़की को यह भी चेतावनी दी कि वह अपने परदे[10] को अपने चेहरे के चारों तरफ कस कर लपेट ले ताकि उसकी सौतेली मॉ उसके चेहरे पर उनको न देख सके।

इसके बाद लड़की घर चली गयी। पर उस रात उसके चेहरे से उसका परदा खिसक गया और उसके परिवार ने उसके चेहरे पर लगे चॉद और तारा देख लिये।

अब तक उसकी सौतेली मॉ को उसके सूत कातने की रफ्तार पर भी बहुत आश्चर्य था और कुछ शक भी था कि उसने इतनी सारी रुई इतनी जल्दी कैसे कात ली सो अगले दिन उसने अपनी बेटी को भी उस लड़की के साथ साथ गाय चराने के लिये भेजा।

टीचर की बेटी ने देखा कि सौदागर कै बेटी वह रुई गाय को खिला देती है और वह गाय उसको सूत कात कर दे देती है।

जिस दिन टीचर की अपनी बेटी गाय चराने के लिये गयी उसने उसको खाने के लिये पुरानी रोटी नहीं दी बल्कि मीठी रोटी दी।

[10] Translated for the word “Veil”

सो तीन दिन तक गाय मीठी रोटी खाती रही और रुई का सूत निकालती रही पर अबकी बार वह इतना सूत नहीं निकाल रही थी जितना कि वह तब निकाल रही थी जब वह पुरानी रोटी खा रही थी।

तीसरे दिन हवा का एक ज़ोर का झोंका आया और उसका सूत का गोला कुँए में नीचे उड़ा कर ले गया। तो पीली गाय ने टीचर की बेटी को भी कुँए में जाने से पहले नीचे कुँए वाली स्त्री के बारे में सलाह दी कि वहाँ जा कर उसको क्या कहना चाहिये और क्या करना चाहिये।

पर टीचर की बेटी तो बहुत ही लालची और बहुत ही खराब बरताव करने वाली थी।

जब वहाँ बुढ़िया ने अपने सिर के बारे में उससे सहायता माँगी तो वह बोली — "आपके बाल तो बहुत ही गन्दे हैं मेरी माँ के बाल तो बहुत साफ हैं।"

जब बुढ़िया ने उसको यह बताया कि उसको उसके धागे का गोला कहाँ मिलेगा तो उस लड़की ने वहाँ से कुछ जवाहरात भी उठा लिये और कुँए में से बाहर की तरफ चल दी। जब बुढ़िया ने सीढ़ी हिलायी तो वे नीचे गिर पड़े।

बुढ़िया ने उसे शाप दिया "तुम्हारे सिर पर बकरे का सींग उग आये।" और उसके बाद कहा "और एक साँप तुम्हारी ठोड़ी से भी।"

जब लड़की घर पहुँची तो उसकी मॉ तो उसकी शक्ल देख कर ही डर गयी। उसने तुरन्त ही उसके सिर से बकरे का सींग और उसकी ठोड़ी से सॉप काटा और नमक की पुल्टिस बनायी। पर रात भर में वे दोनों तो उसके चेहरे पर फिर से उग आये।

सौदागर की बेटी को अब तक पीली गाय का पता चल गया था कि वह कौन थी। वह उसकी मॉ थी। सो वह उस गाय को रोटी और मीठे चने खिलाने लगी।

जैसी कि उम्मीद की जाती थी जल्दी ही सौतेली मॉ को यह पता चल गया सो उसने कहा कि वह बहुत बीमार है और उसकी बीमारी का इलाज केवल उस पीली गाय का मॉस ही था।

उस रात जब पीली गाय की बेटी उसको खाना खिलाने आयी तो उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी कल ये लोग मुझे मार डालेंगे।" फिर उसने अपनी बेटी को आने वाली मुश्किलों के बारे में बताया और बताया कि वह उसको मारे जाने के बाद क्या करे।

उसने उससे कहा कि उसके मारे जाने के बाद वह उसका मॉस बिल्कुल भी न खाये और उसकी हड्डियॉ एक थैले में छिपा कर रख दे जिन्हें बाद में वह गाड़ दे।

अगले दिन उस गाय को मार दिया गया। उसकी बेटी ने जैसा उसकी मॉ ने कहा था वैसा ही किया।

उसके अगले दिन उसकी सौतेली मॉ को अपनी बेटी को एक दूसरे शहर में एक शादी में ले कर जाना था सो उसने उसके चेहरे से

बकरे का सींग और उसकी ठोड़ी से सॉप काटा और उस पर नमक की पुल्टिस लगायी।

फिर उसने एक बालटी ली बहुत सारा बाजरा लिया और उसमें बहुत सारे बहुत छोटे छोटे टोगु के बीज मिलाये और अपनी सौतेली बेटी को देते हुए बोली — "मेरे आने से पहले पहले इन अनाजों को को बीन कर अलग अलग कर के रखना और इस बालटी को अपने ऑसुओं से भर कर रखना।"

ऐसा कह कर वे दोनों मॉ बेटी चली गयीं। जब लड़की अकेली रह गयी तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे सो वह वहीं बैठ कर रोने लगी। उसको ऑसू से बालटी भरना तो इतनी बड़ी समस्या नहीं लगी पर अनाज के इन दानों को वह कैसे अलग करेगी।

तभी उसको एक मुर्गी अपने कई बच्चों के साथ आती दिखायी दी। मुर्गी ने लड़की से कहा कि वह बालटी में पानी भर कर उसमें थोड़ा सा नमक मिला दे तो वह उसके ऑसू बन जायेंगे।

फिर वह एक अच्छा सा घोड़ा ले अच्छे कपड़े पहने जो उसे घुड़साल में से मिल जायेंगे और आराम से शादी में जाये। अनाज वह और उसके बच्चे अलग कर देंगे।

शादी में से उसको जल्दी ही वापस आ जाना चाहिये। जब वह शादी से वापस आ रही होगी तो उसका एक जूता पानी में गिर

पड़ेगा। उसको इस डर से वह उठाने की चिन्ता न करे कि कोई उसको ढूँढ लेगा।

इस तरह से वह लड़की शादी में खूब अच्छे कपड़े पहन कर गयी। वहाँ उसकी सौतेली बहिन ने उसको पहचान लिया और अपनी माँ से बोली — "माँ देखो तो वह अपनी माहपेशानी[11]।"

यह देखते ही कि वह पहचान ली गयी है सौदागर की बेटी वहाँ से भाग ली। रास्ते में उसका एक जूता पानी में गिर पड़ा। मुर्गी की बात मान कर वह उसको उठाने के लिये नहीं गयी और घर आ गयी।

जब उसकी सौतेली माँ घर वापस आयी तो वह फटे कपड़ों में बैठी बैठी अनाज साफ कर रही थी जो वह उसको दे कर गयी थी।

दो दिन बाद एक राजकुमार वहाँ पानी के पास से गुजर रहा था जहाँ सौदागर की बेटी अपना जूता छोड़ कर आयी थी। वहाँ उसके घोड़े को प्यास लगी तो वह पानी पिलाने के लिये उसको वहीं ले गया पर वहाँ जा कर घोड़ा तो पानी पिये ही नहीं।

राजकुमार ने देखा कि वहाँ क्या बात है जो घोड़ा पानी नहीं पी रहा है तो उसने देखा कि वहाँ तो एक जूता पड़ा हुआ है। उसने उस जूते को उठा लिया और घर ले गया। वहाँ जा कर उसने अपने पिता से कहा कि वह उसी लड़की से शादी करना चाहता था जिसका यह सुन्दर सा जूता है।

[11] Means "Moon Brow"

सो राजा और उसका वज़ीर[12] वहाँ की सारी लड़कियों को वह जूता पहना कर देखते रहे। अब सब लड़कियों की यही इच्छा थी कि वह जूता उनके पैर में आ जाये ताकि वे राजकुमार से शादी कर के रानी बन जायें पर वह जूता तो वहाँ किसी के नहीं आया।

जब वे लोग चाँद की भौंह वाली के घर के पास आये तो उस लड़की की सौतेली माँ ने उसको रोटी बनाने वाले ओवन[13] में घुसा दिया और उसका दरवाजा बन्द कर दिया।

तभी एक मुर्गा ऊपर से उड़ कर आया और आ कर ओवन के ऊपर बैठ गया और बोलने लगा — "एक चाँद ओवन में है एक सिर तेरे पास है, कुकड़ूँ कू।"

यह सुन कर राजकुमार ने ओवन में देखा तो उसको वह लड़की मिल गयी जिसे वह ढूँढ रहा था। इस तरह वह लड़की वहाँ पा ली गयी।

राजा ने उसको भी जूता पहन कर देखने के लिये कहा तो वह जूता तो उसके बिल्कुल अच्छी तरह आ गया। यह देख कर राजकुमार बहुत खुश हुआ और उसने उससे शादी कर ली

[12] Vazeer means Prime Minister

[13] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance, and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special-purpose ovens, used in pottery and metalworking, respectively.

2 ये–शैनः एक सिन्डरैला कहानी[14]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी एशिया महाद्वीप के चीन देश की कहानियों से ली गयी है।

यह चिन और हान साम्राज्य[15] के समय की बात है कि चीन के एक जंगली सरदार वू[16] ने दो शादियॉ कीं। समय आने पर उन दोनों ने एक एक बेटी को जन्म दिया।

पर बदकिस्मती से कुछ दिनों बाद ही सरदार वू और उसकी एक पत्नी चल बसे। अपने पति को और उसकी दूसरी पत्नी की छोड़ी हुई बेटी को उसकी सौतेली मॉ ने पाला। उस बच्ची का नाम था ये–शैन।

ये–शैन की सौतेली मॉ उसको बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती थी क्योंकि वह उसकी अपनी बेटी से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी। वह हमेशा ही उससे खराब व्यवहार करती। ये–शैन को करने के लिये वह हमेशा नीचे नीचे काम देती जबकि अपनी बेटी को वह बड़े आराम से रखती।

---

[14] Yeh-Shen: a Cinderella story – a Chinese Cinderella story by Aai-Ling Louie.
Taken from the Web Site : http://misskelly.org/cinderella/chinese.htm
It is the oldest tale recorded in Orient appeared in "Miscellany of Forgotten Lore" by Tuan Cheng-shih around 856-860 AD.

[15] Of the time of Chin and Han Dynasty

[16] Chief Wu – name of the Chief who married two women

ये–शैन की बस एक ही दोस्त थी और वह थी एक मछली जिसकी बड़ी बड़ी सुनहरी ऑखें थीं। वह मछली रोज पानी में से निकल कर किनारे पर आ जाती और ये–शैन उसको रोज खाना खिलाती।

हालॉकि ये–शैन के पास तो अपने खाने के लिये ही काफी खाना नहीं होता था पर फिर भी उसके पास जो कुछ भी होता था उसी में से वह उस मछली को थोड़ा बहुत खाना जरूर खिलाती।

एक दिन ये–शैन की सौतेली मॉ को उस मछली के बारे में पता चला तो उसने ये–शैन का रूप रखा और उस मछली को पानी में से बाहर निकाल कर चाकू से मार दिया। वह उसको मार कर घर ले आयी और उसको शाम के खाने में पका दिया।

ये–शैन को जब यह पता चला कि उसकी मछली मार दी गयी तो उसका दिल टूट गया और वह रो पड़ी।

कि तभी उसने एक आवाज सुनी। उसने ऊपर देखा तो वहॉ एक बूढ़ा अक्लमन्द आदमी[17] खड़ा था। उसने बहुत ही मोटे और खुरदरे कपड़े पहन रखे थे और उसके लम्बे बाल उसके कन्धों से नीचे लटक रहे थे।

उसने ये–शैन को बताया कि उस मछली की हड्डियॉ एक ताकतवर आत्मा की ताकत से भरी हुई थीं। सो जब उसको किसी चीज़ की बहुत जरूरत हो तो वह उन हड्डियों के सामने घुटने टेक

[17] Translated for the words “Old Wise Man”

कर बैठ जाये और अपनी इच्छा कहे तो वे हड्डियॉ उसकी इच्छा जरूर पूरी कर देंगी। पर साथ में उसको यह चेतावनी भी दी कि वह उनकी दी हुई भेंटों को बरबाद न करे।

सो वह तुरन्त ही घर गयी और कूड़े के ढेर में से उसने मछली की हड्डियॉ निकाली और उनको एक सुरक्षित जगह छिपा दिया।

समय गुजरता गया और अब वसन्त का त्यौहार[18] आ रहा था। इस त्यौहार पर गॉव में नौजवान लड़के लड़कियॉ आपस में मिलते जुलते थे और वहीं अपना जीवन साथी भी चुनते थे।

ये–शैन भी इस त्यौहार में जाना चाहती थी पर उसकी सौतेली मॉ उसको जाने की इजाज़त नहीं दे रही थी क्योंकि उसको डर था कि कोई उसकी अपनी बेटी से पहले ये–शैन को चुन लेगा।

सो सौतेली मॉ और उसकी बेटी ने ये–शैन को घर में अकेला छोड़ा और वे दोनों उस त्यौहार में हिस्सा लेने चली गयीं।

पर ये–शैन वहॉ जाने के लिये बहुत बेचैन थी सो वह उन हड्डियों के पास गयी और उनसे उसने वसन्त के त्यौहार में पहनने के लिये कपड़े मॉगे।

अचानक उसने देखा कि वह तो गहरे नीले रंग का एक बहुत ही बढ़िया गाउन पहने थी

[18] Translated for the words “Spring Festival”. In Northern hemisphere spring comes after the Winter but before the Summer, ie during the months of March and May. People celebrate it normally in the month of March.

और उसके कन्धों के चारों ओर किंगफ़िशर चिड़िया के पंखों का शाल लिपटा हुआ था।

उसके पैरों में बहुत सुन्दर जूते थे। वे जूते सोने के तारों से मछली की खाल की शक्ल में बुने हुए थे। उनका तला खालिस सोने का बना हुआ था।

उन जूतों को पहन कर जब वह चली तो वह बहुत ही हल्का महसूस कर रही थी जैसे वह हवा में उड़ रही हो। उसको कहा गया कि वह अपने जूतों का खयाल रखे उन्हें खोये नहीं। सो उनको पहन कर वह वसन्त के त्यौहार में पहुँच गयी।

जैसे ही वह वहाँ पहुँची तो सारे लोग उसी की तरफ देखने लगे। उसकी सौतेली माँ और बहिन ने भी उसकी तरफ देखा। जब उनको लगा कि उन्होंने उसको पहचान लिया तो वे भी उसके पास आ गयीं।

उनको पास आता देख कर ये–शैन को लगा कि वह तो जल्दी ही पहचान ली जायेगी तो तुरन्त ही वह वहाँ से गाँव के बाहर भाग ली। इस जल्दी में उसके पैर का एक सुनहरी जूता निकल गया। पर फिर भी वह वहाँ से भागती चली गयी।

वह उस जूते को उठाने के लिये रुक नहीं सकती थी सो वह उसको वहीं छोड़ कर वहाँ चली आयी। जब वह घर पहुँची तो वह फिर से अपने फटे पुराने कपड़े पहने हुए थी।

उसने उन हड्डियों से फिर बात करने की कोशिश की पर अब की बार हड्डियॉ नहीं बोलीं। बड़ी नाउम्मीद हो कर उसने अपना दूसरा जूता अपने बिस्तर के नीचे रख लिया और सो गयी।

कुछ समय बाद एक सौदागर को उसका वह खोया हुआ जूता मिल गया। उसकी कीमत का अन्दाजा लगाते हुए उसने उसे एक दूसर सौदागर को बेच दिया। उस दूसरे सौदागर ने उसे एक टापू के राजा तो हान[19] को दे दिया।

राजा को यह जूता इतना पसन्द आया कि उसने इसके मालिक की खोज शुरू कर दी। उसने सारे राज्य में अपने बहुत सारे आदमी उस जूते को पहनने वाले की खोज में भेजे पर वह जूता किसी के भी पैर में नहीं आया।

फिर उसने वह जूता उसी सड़क के किनारे एक जगह पर रखवा दिया जहॉ वह पहले सौदागर को मिला था और यह मुनादी पिटवा दी कि "हमें किसी का सुनहरी जूता मिला है। वह जूता उसी को वापस कर दिया जायेगा जिसका वह जूता होगा सो जिसका वह जूता हो वह उसको आ कर हमसे ले ले।"

यह कर के राजा के आदमी छिप कर यह देखने लगे कि देखें वह जूता किसके पैर में आता है और कौन उसको ले कर जाता है।

बहुत सारी लड़कियॉ और स्त्रियॉ वहॉ उस जूते को पहन कर देखने के लिये आयीं पर वह जूता किसी के पैर में भी नहीं आया।

[19] T'o Han – name of the King of the island kingdom

ये–शैन ने भी यह मुनादी सुनी तो उसने सोचा कि वह वहॉ जा कर अपना जूता ले आती है।

सो एक रात ये–शैन अपने घर से चुपचाप निकल पड़ी और वहॉ पहुॅची जहॉ वह जूता रखा हुआ था। उसने उसे वहॉ से उठाया और उसे ले कर अपने घर के लिये वापस चल दी।

पर राजा के आदमी तो बराबर उस जूते को देख रहे थे सो जैसे ही ये–शैन उस जूते को उठा कर अपने घर के लिये पलटी उन्होंने उसको पकड़ लिया। पकड़ कर वे उसको राजा के पास ले गये।

राजा उस लड़की को देख कर बहुत ही चकित रह गया क्योंकि वह यह विश्वास ही नहीं कर सका कि इतना कीमती जूता उस फटे पुराने कपड़े पहनने वाली लड़की का होगा।

फिर उसने उसके चेहरे को करीब से देखा तो वह तो उसकी सुन्दरता को देख कर भी आश्चर्यचकित रह गया। फिर उसने देखा कि उसके तो पैर भी बहुत ही छोटे थे।

राजा ने उससे पूछा — "क्या तुम्हारे पास इसका दूसरा जूता है?"

"जी राजा साहब।"

सो राजा ने अपने कुछ आदमी उसके साथ उसके घर भेजे जहॉ पहुॅच कर उसने उनको अपना दूसरा जूता दिखाया। जैसे ही उसने दोनों जूते पहिने तो उसके तो कपड़े भी उन्हीं गाउन और पंखों के

शाल में बदल गये जिनको पहिन कर वह वसन्त के त्यौहार में गयी थी।

उसको देख कर राजा को लगा कि वह तो उसी के लिये बनी है। बस उसने उससे शादी कर ली और फिर वे दोनों हमेशा खुशी खुशी रहे।

उसके बाद ये–शैन की सौतेली मॉ और उसकी सौतेली बहिन को ये–शैन से मिलने की इजाज़त नहीं दी गयी। जब तक वे जिये उनको वहीं उसी गुफा में ही रहना पड़ा जिसमें वे रहते चले आ रहे थे।

एक दिन बहुत सारे पत्थर उड़ कर वहॉ आये और वह गुफा बन्द हो गयी। वे दोनों मॉ बेटी उसी में बन्द हो कर मर गयीं।

3 नीच सौतेली मॉ[20]

तुम लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि सिन्डरैला जैसी कहानी अपने भारत देश में भी कही सुनी जाती है। और केवल एक ही नहीं बल्कि उस जैसी कई कहानियॉ कही सुनी जाती हैं।

इस पुस्तक में हम वहॉ की तीन कहानियॉ तुम्हारे लिये दे रहे हैं। तो लो पढ़ो भारतीय सिन्डरैला की यह पहली कहानी। यह कहानी भारत के काश्मीर राज्य में कही सुनी जाती है।

एक दिन एक ब्राह्मण ने अपनी पत्नी को अपने बिना खाना खाने से मना किया ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह बकरी बन जाये। इसके जवाब में उसकी पत्नी ने भी उससे यही कहा कि वह भी उसके बिना खाना नहीं खायेगा ताकि कहीं वह चीता न बन जाये। दोनों राजी हो गये।

इस तरह काफी दिन निकल गये और दोनों में से किसी ने अपना वायदा नहीं तोड़ा। दोनों एक दूसरे के साथ ही खाना खाते थे पर एक दिन उस ब्राह्मण की पत्नी ने अपने बच्चों को खाना देते समय उस खाने में से चखने के लिये एक कौर खुद खा कर देख लिया।

---

[20] The Wicked Stepmother – a fairy tale from India (Kashmir), Asia.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Translated and edited by DL Ashliman.
Charles Perrault took it from the book : Folk-Tales of Kashmir . by J Hinton Knowles. 1893. Hindi translation of this Book is available from hindifolktales@gmail.com in four parts.

उस समय क्योंकि उसका पति वहॉ था नहीं सो उसकी पत्नी तुरन्त ही एक बकरी बन गयी। जब वह ब्राह्मण घर आया तो उसने देखा कि एक बकरी उसके घर के चारों तरफ घूम रही है।

यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह तुरन्त ही जान गया कि वह बकरी और कोई नहीं बल्कि उसकी अपनी प्यारी पत्नी थी। उसने उसको अपने घर के ऑगन में बॉध दिया और उसकी बड़ी सावधानी से सेवा करने लगा।

कुछ साल बाद उसने दूसरी शादी कर ली पर उसकी दूसरी पत्नी उसकी पहली पत्नी के बच्चों के साथ बिल्कुल भी अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। वह तो उनको खाना भी बहुत कम देती थी। वे बच्चे बेचारे बहुत परेशान रहते थे।

उनकी बकरी मॉ उनकी शिकायतों को सुनती रहती पर वह बेचारी भी कुछ नहीं कर सकती थी।

उन बच्चों की मॉ ने यह भी देखा कि उसके बच्चे दुबले होते जा रहे हैं। इसलिये एक दिन उसने अपने बच्चों में से एक बच्चे को अपने पास बुलाया और उससे दूसरों को भी यह बात चुपचाप बताने के लिये कहा कि जब भी उनको भूख लगे तो वे एक डंडी से उसके सीगों को मारें। ऐसा करने से उसके सीगों में से कुछ खाना निकल आयेगा जिसे वे खा सकते थे।

बच्चों ने ऐसा ही किया। अब जब भी उनको भूख लगती तो वे अपनी बकरी मॉ के सींगों में डंडी मारते, इससे उनमें से कुछ

खाना निकल आता और वे उसको खा कर अपना पेट भर लेते। इससे धीरे धीरे उनकी तन्दुरुस्ती अच्छी होने लगी।

पर यह तो उस सौतेली मॉ की उम्मीदों के खिलाफ हो रहा था। उसके सौतेले बच्चे तो बजाय दुबले होने के और ज़्यादा तन्दुरुस्त होते जा रहे थे जबकि वह खुद उनको बहुत कम खाना देती थी। वह उनको इतना तन्दुरुस्त देख कर बहुत ही ताज्जुब में पड़ गयी कि यह सब कैसे हो रहा था।

कुछ समय बाद उस ब्राह्मण की दूसरी पत्नी ने एक एक ऑख की बेटी को जन्म दिया। वह अपनी उस कानी बेटी को बहुत प्यार करती थी और उसकी किसी भी जरूरत को तुरन्त ही पूरा करने को तैयार रहती थी जिसको वह समझती थी कि वह उसको चाहिये।

कुछ दिनों बाद जब वह लड़की काफी बड़ी हो गयी, चलने फिरने लगी, बोलने चालने लगी, अच्छी तरह बात करने लगी तो उसकी मॉ उसको दूसरे बच्चों के साथ बाहर खेलने के लिये भेजने लगी।

उसने उसको यह भी कहा कि वह अपने बड़े भाई बहिनों पर निगाह रखे कि वे कब और कैसे खाते पीते हैं। लड़की ने कहा "ठीक है।"

वह लड़की उनके साथ सारे दिन रही और उसने वह सब कुछ देखा जो उनके साथ हुआ।

यह सुन कर कि बकरी उसके सौतेले बच्चों को खाना दे रही थी वह दूसरी पत्नी बहुत गुस्सा हुई। उसने तय कर लिया कि वह उस बकरी को जल्दी से जल्दी मरवा देगी।

एक दिन उसने बहाना किया कि वह बहुत बीमार है और अपने इलाज के लिये एक हकीम[21] को बुलवाया। उसने उस हकीम को रिश्वत दी और कहा कि वह उसके लिये दवा के तौर पर बकरी का मॉस खाने के लिये बताये। उस हकीम ने ऐसा ही किया।

ब्राह्मण अपनी पत्नी की बीमारी के लिये बहुत चिन्तित था और हालॉकि वह बकरी को बिल्कुल मारना नहीं चाहता था फिर भी वह अपनी दूसरी पत्नी को ठीक करने के लिये उस बकरी को मारने को लिये तैयार हो गया।

पर यह सुन कर उसकी पहली पत्नी के छोटे छोटे बच्चे बहुत रोये। वे बहुत दुखी हो कर अपनी बकरी मॉ के पास गये और उसको जा कर सब बताया।

उनकी मॉ ने कहा — "मेरे प्यारे बच्चों रोओ नहीं। जो ज़िन्दगी मैं जी रही हूँ ऐसी ज़िन्दगी से तो मर जाना अच्छा है। रोओ नहीं। मुझे तुम्हारे खाने को ले कर कोई दुख नहीं है क्योंकि अगर तुम मेरा कहा करोगे तो खाना तो तुमको उसके बाद भी मिलता रहेगा।

[21] Hakeem (or Hakim) – a traditional doctor using Greek medical system

मेरे मरने के बाद तुम लोग मेरी हड्डियॉ इकट्ठी कर लेना और उनको किसी ऐसी जगह दबा देना जहॉ उनको कोई ढूँढ न सके। फिर जब भी तुमको भूख लगे तो तुम वहॉ आ जाना तुमको वहॉ खाना मिल जायेगा।"

उस बकरी ने उनको यह सलाह बड़े समय से दे दी थी क्योंकि जैसे ही उसने अपनी बात खत्म की और उसके बच्चे वहॉ से गये कि तभी एक कसाई अपना बड़ा सा चाकू ले कर वहॉ आ पहुँचा और उसने उस बकरी को मार दिया।

उस बकरी के शरीर को टुकड़ों में काट कर पका दिया गया। ब्राह्मण की पत्नी ने उस बकरी के मॉस को खाया पर बच्चों को केवल हड्डियॉ ही मिलीं।

बच्चों ने उन हड्डियों का वही किया जो उनकी बकरी मॉ ने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने उसकी हड्डियॉ एक ऐसी जगह दबा दीं जहॉ उन्हें कोई ढूँढ नहीं सकता था।

जब उनको खाने की जरूरत होती तो वे वहॉ जाते और उन हड्डियों से खाना मॉग लेते और उनको खाना मिल जाता। सो अब उनको फिर से खाना रोज और खूब मिल रहा था। अब वे भूखे भी नहीं रहते थे। उनकी तन्दुरुस्ती फिर से ठीक होती जा रही थी।

उस बकरी के मर जाने के कुछ समय बाद ब्राह्मण की पहली पत्नी की एक बेटी पानी के नाले में अपना चेहरा धो रही थी कि

उसकी नाक की लौंग[22] खुल गयी और पानी में गिर गयी। एक मछली पानी के साथ साथ उसको भी पी गयी।

अब हुआ यह कि एक मछियारे ने वह मछली पकड़ ली और राजा के रसोइये को बेच दी।

रसोइये ने जब उस मछली को पकाने के लिये काटा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके अन्दर तो नाक की एक लौंग थी। वह उसको ले कर राजा के पास गया तो राजा को भी उसमें रुचि हो गयी।

राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जिस किसी की भी नाक की लौंग खो गयी हो वह उसको राजा से आ कर ले जाये।

कुछ ही दिनों में उस लड़की का भाई राजा के पास आया और बोला कि वह नाक की लौंग उसकी बहिन की थी। उसकी यह नाक की लौंग उसका चेहरा धोते समय नाले में गिर पड़ी थी।

राजा ने उस लड़की को बुलाया तो वह उसकी सुन्दरता और अच्छा व्यवहार देख कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने उससे शादी कर ली और उसके परिबार की भी खूब सहायता की।

[22] Translated for the words “Nose Ring”. Nose ring is very common to wear for Indian girls and women. It can be of several types and shapes. Two of their shapes are given here. See their pictures above.

4 काली गाय की कहानी[23]

सिन्डरैला जैसी कहानियों में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के भारत देश की कहानियों से ली है। यह कहानी वहॉ के मध्य भारत के शिमला प्रदेश में कही सुनी जाती है।

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि भारत में एक ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी एक बहुत ही छोटे से बेटे को छोड़ कर चल बसी थी। कुछ समय तक तो वे पिता और बेटा दोनों खुशी खुशी रहे पर फिर उस ब्राह्मण को दूसरी शादी करनी पड़ी।

उसकी इस दूसरी पत्नी के अपनी भी एक बेटी थी। वह अपनी बेटी को तो बहुत अच्छे से रखती थी पर अपने सौतेले बेटे को बिल्कुल भी नहीं चाहती थी।

रोज दोनों बच्चे जानवरों को ले कर बाहर जाते और रोज शाम को घर लौट कर खाना खाते।

शाम को वह सौतेली मॉ अपने सौतेले बेटे के लिये तो राख की रोटी बनाती जिसमें उसको खाना दिखाने के लिये केवल बहुत थोड़ा सा आटा मिला होता ताकि उसका पिता को इस बात का पता न चल पाये कि वह राख की रोटी है।

---

[23] Story of the Black Cow – a fairy tale from India, Asia. This story is taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/stories/blackcow.html
Appears in the book : "Simla Village Tales, or Folk Tales from the Himalayas", by Alice Elizabeth Dracott. London: John Murray, 1906.

और उसका वह सौतेला बेटा भी उसको चुपचाप खा लेता क्योंकि वह शिकायत करने से डरता था। पर वह जब जंगल में होता तो बहुत रोता क्योंकि उसको भूख लगी होती।

एक दिन उसके जानवरों के झुंड में एक काली गाय ने यह देख लिया तो उसने उस लड़के से पूछ ही लिया "तुम क्यों रोते हो बेटा?"

उस लड़के ने उसे सब बता दिया। उसने तुरन्त ही अपने खुर जमीन पर मारे तो उसमें से कई तरह की मिठाइयॉ निकल पड़ीं। लड़के ने उनको खुद भी खूब खाया और अपनी सौतेली छोटी बहिन को भी खूब खिलाया।

उसने उसको यह भी कहा कि वह इस काली गाय ने उनको क्या दिया है यह बात किसी को न बताये ताकि कहीं ऐसा न हो कि उसकी सौतेली मॉ गुस्सा हो जाये।

कुछ दिन बाद लड़के की सौतेली मॉ ने देखा कि लड़का तो तन्दुरुस्त हो रहा है सो उसने सोचा कि वह उसको देखेगी कि वह उसके पीछे क्या खाता है क्योंकि उसको शक हो गया था कि वह जब गायों को चराने ले जाता है तो वह किसी गाय का दूध पीता है।

उसने अपनी बेटी से कहा कि जब वह जंगल जाये तो वह उसके ऊपर नजर रखे कि वह वहॉ क्या करता है और फिर आ कर

उसको बताये। आखिर लड़की को उसको बताना ही पड़ा कि वे दोनों वहॉ मिठाइयॉ खाते थे।

उस दिन जब ब्राह्मण घर आया तो उसकी पत्नी ने उससे कहा कि वह अपनी काली गाय को बेच दे। उसने यह भी कहा कि जब तक वह उस गाय को बेचेगा नहीं वह न तो खायेगी और न सोयेगी।

लड़के ने जब यह सुना तो वह तो बहुत दुखी हो गया। फिर तुरन्त ही वह उसके पास गया और उसके गले से लग कर रो पड़ा।

गाय बोली — "रो मत मेरे बच्चे रो मत। तू मेरी पीठ पर बैठ जा। मैं तुझे एक ऐसी सुरक्षित जगह ले जाऊॅगी जहॉ मैं और तू फिर एक साथ रह सकेंगे।"

लड़का उसकी पीठ पर बैठ गया और वह गाय उसको जंगल में ले कर चली गयी। वहॉ वे काफी दिनों तक शान्ति से सुरक्षित रहे।

उस जंगल में एक छेद था जो एक बड़े सॉप के घर तक जाता था। वह सॉप एक बैल के साथ मिल कर सारे सौर मंडल[24] को अपने ऊपर सॅभाले हुए था।

वह काली गाय उस सॉप के पीने लिये रोज इस छेद में पॉच सेर दूध डाला करती थी। इस बात से सॉप इतना खुश हुआ कि एक दिन उसने सोचा कि "मुझे खुद दुनियॉ में ऊपर जाना चाहिये और

[24] Translated for the word "Universe"

देखना चाहिये कि ऐसा कौन सा भला आदमी है जो मेरे लिये इतना अच्छा दूध भेजता है।"

सो वह ऊपर की तरफ चल दिया। ऊपर आने पर उसने देखा कि एक गाय वहॉ चर रही है और एक लड़का उसके पास ही खड़ा है।

सॉप ने उस गाय से कुछ मॉगने के लिये कहा तो उसने अपने लिये तो कुछ नहीं मॉगा पर कहा कि वह अपने बेटे के लिये, जैसा कि वह उस ब्राह्मण के बेटे को बोलती थी, सिर से ले कर पैर तक सोने के कपड़े चाहती है। साथ में वह यह भी चाहती है कि उसका शरीर भी सोने जैसा दमक जाये।

सॉप ने उसकी दोनों इच्छाऐं पूरी करने का वायदा किया पर बाद में गाय अपनी इच्छाऐं उसको बता कर पछतायी क्योंकि उसको लगा कि उसके बेटे को तो चोर डाकुओं से ही डर हो जायेगा।

एक दिन वह लड़का नदी में नहाया और उसने अपने लम्बे सुनहरी बालों में कंघी की तो उसके कुछ बाल पानी में गिर पड़े। एक मछली उन बालों को निगल गयी।

एक मछियारा उस नदी में मछली पकड़ रहा था तो उसने वह मछली पकड़ ली जिसने उस लड़के के सुनहरे बालों को निगला था और उसको राजा के महल के रसोईघर में बेच आया।

जब उन्होंने उसको पकाने के लिये काटा तो उनको उसमें सुनहरे बाल मिले। वे उन बालों की तारीफ करने लगे और उनको राजकुमारी को दिखाया।

जब राजकुमारी ने उन बालों को देखा तो वह तो उस बाल वाले के प्रेम में इतनी पागल हो गयी कि उसने कह दिया कि जब तक वह उस बाल वाले से नहीं मिल लेती वह खुश नहीं रह सकती।

सो उस मछियारे को बुलाया गया जिसने वह मछली पकड़ी थी और उससे पूछा गया कि उसने वह मछली कहॉ पकड़ी थी। उसके बाद तो राजा के कई नाविक नदी में उस आदमी की तलाश में इधर उधर घूमने लगे।

आखिर एक नाव में बैठे एक आदमी ने देखा कि दूर कोई एक चमकीली चीज़ नदी में नहा रही थी। सो उसने अपनी नाव को उधर ले जाने के लिये कहा। जब वह नाव उसके पास आयी तो नाव में बैठे आदमी ने देखा कि एक सुनहरे रंग वाला आदमी नदी में नहा रहा था। उसने उसको अपने पास बुलाया।

पहले तो उस ब्राह्मण के लड़के ने सुना नहीं पर फिर वह उस नाव के पास आया तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उस नाव वाले आदमी ने उसको पकड़ लिया और बॉध कर राजा के पास ले गया।

वहॉ जा कर वह राजकुमारी से मिला। उसने देखा कि राजकुमारी तो बहुत सुन्दर थी। उसको देख कर तो वह सब कुछ भूल गया और बस उसी के बारे में सोचता रहा।

कुछ समय बाद उन दोनों की शादी हो गयी। वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी साथ साथ रहे।

एक बार इत्तफाक से किसी ने उसको दही की बनी हुई मिठाई दी जैसी कि वह काली गाय उसको दिया करती थी सो उसको देख कर उसको अपनी गाय की याद आ गयी। बस वह अपनी गाय को देखने के लिये दूर जंगल में उस जगह चल दिया जहॉ वह उससे आखिरी बार मिला था।

जब वह वहॉ पहुँचा तो उसको वहॉ गाय तो नहीं मिली बस केवल हड्डियॉ ही दिखायी दीं। यह देख कर उसका दिल टूट गया। उसने वे सारी हड्डियॉ बटोरीं और उनकी एक चिता[25] बनायी और बोला कि वह वहॉ अपनी जान दे देगा।

पर जब वह ऐसा करने ही वाला था तो बताओ कि वहॉ कौन प्रगट हो गया? उसकी अपनी काली गाय।

वे दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हो गये। काली गाय ने बताया कि उसने वे हड्डियॉ तो केवल उसके प्यार को परखने के लिये रखी थीं वह खुद तो ज़िन्दा थी।

[25] Translated for the words “Funeral Pyre”

और अब वह उससे बहुत सन्तुष्ट थी कि वह उसको भूला नहीं था सो दोनों ने कई दिनों तक इसका उत्सव मनाया फिर वे दोनों अपने अपने रास्ते चले गये।

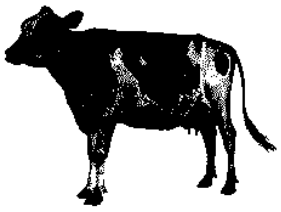

5 सुदेवा बाई[26]

सिन्डरैला जैसी कहानियों की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के भारत देश की कहानियों से ली है। यह कहानी वहॉ के दक्षिणी भारत में कही सुनी जाती है।

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि भारत में एक राजा और रानी रहते थे। उनके केवल एक ही बेटी थी और वह दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी थी। उसका चेहरा इतना सुन्दर और कोमल था जितनी की चॉदनी। उन्होंने उसका नाम रखा सुदेवा बाई[27]।

जब उसका जन्म हुआ तो उसके पिता ने अपने राज्य के बहुत सारे अक्लमन्द लोगों को बुला भेजा ताकि वे उसकी किस्मत के बारे में कुछ बता सकें।

उन्होंने बताया कि वह बड़ी हो कर किसी भी स्त्री से कहीं बहुत अमीर और खुशकिस्मत बनेगी। और फिर ऐसा ही हुआ। जैसे जैसे वह बड़ी होती गयी वह और बहुत अच्छी और बहुत प्यारी होती गयी।

---

[26] Sodewa Bai – a fairy tale from India, Asia. This story is taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/stories/sodewa.html
Appears in the book : Old Deccan Days; or, Hindoo Fairy Legends Current in Southern India, by Mary Frere. 1868. This book is availabale at the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Old_Deccan_Days . Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[27] Sodewa means “Good Fortune”

जब भी वह कुछ बोलने के लिये मुँह खोलती तो उसके मुँह से मोती और जवाहरात जमीन पर गिरते। और जब वह चलती तो वे उसके रास्ते के दोनों तरफ बिखरते जाते।

इस तरह से उसका पिता राजा कुछ ही दिनों में दुनियॉ का सबसे अमीर राजा हो गया क्योंकि उसकी बेटी तो बिना जवाहरात नीचे गिराये अब कमरा भी पार नहीं कर सकती थी। और ये जवाहरात भी इतने सारे होते कि उनसे एक लड़की का अच्छा खासा दहेज दिया जा सकता था।

इसके अलावा सुदेवा बाई अपने गले में एक सोने का हार पहने पैदा हुई थी। सो राजा ने ज्योतिषियों से उसके बारे में भी पूछा तो उन्होंने कहा कि वह कोई मामूली बच्ची नहीं थी।

उसके गले का सोने का हार उसकी आत्मा थी इसलिये उनको उस हार की सब तरह से रक्षा करनी चाहिये। क्योंकि अगर वह हार उतार लिया गया और किसी दूसरे ने पहन लिया तो यह मर जायेगी।

इसलिये रानी ने उस हार को उसके गले से कस कर बॉध दिया ताकि वह उसके गले से निकल ही न सके। और जैसे ही वह इतनी बड़ी हो गयी कि वह समझदार हो गयी तो उसको उसने उसके बारे में सब कुछ बता दिया। और उससे कहा कि वह किसी भी हालत में उस हार को उतरने न दे।

अब इसकी कहानी शुरू होती है। सुदेवा बाई चौदह साल की हो गयी थी पर अभी तक वह कुँआरी ही थी। क्योंकि उसके माता पिता ने यह सोच रखा था कि वह उसकी शादी तब तक नहीं करेंगे जब तक उसकी अपनी इच्छा नहीं होगी।

हालॉकि बहुत सारे राजा और कुलीन लोग उसका हाथ मॉगने आये पर उसने उन सबको मना कर दिया था।

एक बार सुदेवा बाई के पिता ने सुदेवा बाई के जन्मदिन पर उसे एक बहुत सुन्दर सोने के जवाहरातों से जड़े जूते दिये। उसका वह एक एक जूता सौ सौ हजार मुहरों का था। ऐसा जूता तो दुनियॉ भर में कोई दूसरा नहीं था।

सुदेवा बाई इन जूतों की बहुत कद्र करती थी। जब भी वह बाहर जाती तो पत्थरों से अपने पैरों को बचाने के लिये वह इन्हीं को पहन कर जाती थी।

एक दिन जब वह अपनी सहेलियों और दासियों के साथ उस पहाड़ पर घूम रही थी खेल रही थी फूल चुन रही थी जिस पर उसका किला बना हुआ था तो उसका पैर फिसल गया और उसका एक जूता उस पहाड़ की ढलान पर नीचे की तरफ गिरता चला गया।

वह चट्टानों और पत्थरों पर से फिसलता हुआ नीचे जंगल में जा गिरा।

सुदेवा बाई ने अपनी एक दासी को उस जूते की खोज में भेजा। उधर राजा ने भी अपने मुनादी पीटने वालों को यह मुनादी पीटने को लिये कह दिया कि वह शहर भर में यह कह दें कि जो कोई भी सुदेवा बाई का वह जूता ढूँढ कर लायेगा उसको बहुत भारी इनाम दिया जायेगा।

पर उस जूते को दूर में और पास में ऊँचाई पर और नीचाई में सब जगह ढूँढा गया पर वह जूता तो मिल कर ही नहीं दिया।

इत्तफाक से कुछ समय बाद एक राजकुमार जो मैदानों में रहता था शिकार खेलने के लिये निकला तो उसी जंगल में पहुँच गया जहाँ सुदेवा बाई का जूता पड़ा हुआ था जो पहाड़ की ऊँचाई से नीचे जंगल में गिर पड़ा था।

उस छोटे से सुन्दर से जूते को देख कर उसने वह जूता उठा लिया और घर ले जा कर उसे अपनी माँ को दिखाया और बोला — "माँ वह कितनी सुन्दर होगी जिसका यह जूता होगा।"

"हाँ मेरे बच्चे। यह तो सचमुच में ही किसी सुन्दर सी राजकुमारी का जूता होना चाहिये। क्या तुम ऐसी ही सुन्दर पत्नी पा सकते हो?"

इस पर उन्होंने राज्य भर में यह जानने के लिये अपने आदमी भेज दिये कि वे यह पता लगा कर लायें कि वह जूता किसका था। पर वह लड़की भी नहीं मिली।

आखिरकार कई महीने बीतने के बाद कुछ यात्रियों ने राजा को यह खबर ला कर दी कि बहुत दूर देश में एक ऊँचे से पहाड़ के ऊपर एक बहुत सुन्दर राजकुमारी रहती है जिसका एक जूता खो गया है।

और उसके पिता ने उसको बहुत बड़ा इनाम देने का वायदा किया है जो कोई भी उसकी बेटी का जूता ला कर उसको देगा।

और उन लोगों ने जो कुछ भी उसके बारे में बताया उससे सबको ऐसा लगा कि यह वही राजकुमारी है जिसकी राजकुमार को तलाश थी।

तब उसकी माँ बोली — "मेरे बेटे, मुझे यकीन है कि यह जूता पहाड़ पर रहने वाली उसी राजकुमारी का है।

सो तुम इस जूते को उसके पास ले जाओ और जब राजा तुमसे कोई इनाम माँगने के लिये कहे तो तुम उससे न तो सोना माँगना न चाँदी माँगना बल्कि उससे उस लड़की का हाथ माँग लेना। इस तरह तुम उसको अपनी पत्नी के रूप में पा सकोगे।"

राजकुमार ने वैसा ही किया जैसा उसकी माँ ने उससे करने के लिये कहा था।

और जब एक लम्बी यात्रा के बाद वह सुदेवा बाई के पिता के दरबार में पहुँचा तो उसने वह जूता उसको दिया और बोला — "मैंने आपकी बेटी का जूता ढूँढ लिया है और उसे आपको देने के लिये अब मैं अपना इनाम चाहता हूँ।"

राजा ने पूछा — "बोलो तुम्हें क्या चाहिये? मैं तुम्हें क्या दूँ? घोड़े सोना चॉदी?"

राजकुमार बोला — "नहीं, इनमें से मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं एक राजा का बेटा हूँ जो मैदानों में रहता है। और मैंने यह जूता जंगलों में पाया है जहॉ मैं शिकार के लिये गया हुआ था। मैने कई थकान भरे दिन इसको यहॉ लाने में लगाये हैं। मैं इसके लिये केवल आपकी बेटी का हाथ मॉगता हूँ।

अगर इसमें आपकी खुशी हो तो आप मुझे अपना दामाद स्वीकार कर लें।"

राजा बोला — "मैं तुमसे इसका वायदा तो नहीं कर सकता क्योंकि मैंने यह फैसला किया है कि मैं अपनी बेटी की इच्छा के खिलाफ उसकी शादी किसी से नहीं करूँगा। इसलिये यह बात तो केवल वही बता सकती है कि वह तुमसे शादी करना चाहती है या नहीं।

अगर वह तुमसे शादी करना चाहेगी तो मैं उसकी शादी तुमसे कर दूँगा पर यह बात मैं नहीं बता सकता यह तो वही बतायेगी।"

अब हुआ यह कि सुदेवा बाई ने अपनी खिड़की से राजकुमार को महल के दरवाजे तक आते देख लिया था।

और जब उसे इस बात का पता चला कि वह उसका जूता ले कर वहॉ आया है तो उसने अपने पिता से कहा — "मैंने राजकुमार

को देख लिया है पिता जी और मैं उससे शादी करने के लिये तैयार हूँ।"

सो उन दोनों की शादी बड़ी धूमधाम से हो गयी।

जब सुदेवा बाई के दूसरे उम्मीदवारों ने उसकी पसन्द के बारे में सुना तो वे बड़े चकित हुए और साथ में गुस्सा भी हुए।

उन्होंने कहा — "सुदेवा बाई ने उस राजकुमार में क्या देखा जो उससे शादी कर ली। वह तो कोई बहुत सुन्दर भी नहीं है और वह तो गरीब भी बहुत है। यह तो सबसे ज़्यादा बेवकूफी की शादी है।"

पर वे सब शादी में आये और महल में उनका बहुत अच्छा स्वागत हुआ जहाँ शादी का उत्सव कई दिनों तक मनाया गया।

जब सुदेवा बाई और वह राजकुमार वहाँ कुछ दिन रह लिये तो राजकुमार ने अपने ससुर से कहा — "अब मैं अपने लोगों को देखना चाहता हूँ तो आप मुझे मेरी पत्नी को मेरे घर ले जाने की इजाज़त दें।"

राजा बोला — "ठीक है। तुमको अपने घर जाना ही चाहिये। पर देखो तुम अपनी पत्नी की ठीक से देखभाल करना। उसको अपनी आँख के तारे की तरह रखना।

और दूसरे यह कि उसके गले से यह सोने का हार कभी भी निकलने मत देना और किसी दूसरे को देना भी नहीं। क्योंकि अगर ऐसा कुछ हुआ तो यह मर जायेगी।"

राजकुमार ने इसके लिये राजा से वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा और सुदेवा बाई को ले कर अपने राज्य आ गया।

जब वे लोग वहॉ से जाने लगे तो पहाड़ के राजा ने उनको बहुत सारे जवाहरातों पैसा परदे कपड़े और कालीनों के अलावा बहुत सारे हाथी घोड़े ऊॅट और दास आदि भी दिये।

मैदान के राजा और रानी ने भी अपने बेटे और बहू का बड़े ज़ोर शोर के साथ स्वागत किया। वहॉ वे लोग बेरोक टोक के बहुत दिन तक शान्ति से रह सकते थे अगर वहॉ एक बहुत ही बदकिस्मत घटना न घटी होती...

इस राजकुमारी के पति रावजी की एक और पत्नी थी जिससे उसकी शादी उसके बचपन मे ही हो गयी थी। यह सुदेवा बाई का जूता मिलने से बहुत समय पहले की बात है। इसलिये यह उसकी पहली और बड़ी रानी थी पर वह सुदेवा बाई को ज़्यादा प्यार करता था।

उधर रावजी के माता पिता भी अपनी बड़ी बहू की जगह सुदेवा बाई को ही ज़्यादा चाहते थे।

बड़ी रानी अपने अलावा किसी दूसरी स्त्री के रानी होने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी खास कर के किसी दूसरी ऐसी स्त्री के बारे में जिसे लोग उससे ज़्यादा प्यार करें। इसलिये मन ही मन वह सुदेवा बाई से बहुत कुढ़ती थी और नफरत करती थी।

वह बाहर से तो यह दिखाती थी कि वह उसे बहुत चाहती है पर मन में वह उसको मारने की तरकीबें सोचती रहती थी।

रावजी के माता पिता को यह तो मालूम था कि उनकी बड़ी बहू सुदेवा बाई को नहीं चाहती इसलिये वे भी यह नहीं चाहते थे कि वे दोनों साथ साथ बैठें उठें।

पर क्योंकि उनका डर कुछ बेबुनियाद सा था और उनके पास उसका कोई पक्का सबूत नहीं था तो वे इससे ज़्यादा कुछ और नहीं कर सकते थे कि वे उनके ऊपर बराबर ध्यान रखे रहें।

सुदेवा बाई तो इस बारे में बिल्कुल ही अनजान थी सो जब भी उसके सास ससुर उसको बड़ी रानी से मिलने जुलने से मना करते तो वह उनका कहा नहीं मानती।

बल्कि वह यह कहती — "मुझे उनसे कोई डर नहीं है। मुझे तो लगता है कि मैं भी उन्हें प्यार करती हूँ और वह भी मुझे प्यार करती हैं। हम आपस में झगड़ा क्यों करें? हम दोनों बहिनें नहीं हैं क्या?"

एक दिन रावजी को अपने पिता के राज्य में किसी काम से दूर जाना पड़ा। वह सुदेवा बाई को अपने साथ ले नहीं जा सकता था सो वह उसको अपने माता पिता की देखभाल में छोड़ गया और उनसे वायदा कर गया कि वह जल्दी ही लौट आयेगा। उसके पीछे वह उसका ठीक से ख्याल रखें।

उन्होंने भी उससे वायदा किया कि वे उसका ठीक से ख्याल रखेंगे।

रावजी के जाने के थोड़ी देर बाद ही उसकी बड़ी रानी सुदेवा बाई के कमरे में गयी और उससे बोली — "रावजी तो अब चले गये हैं अब हम दोनों ही यहाँ अकेले रह गये हैं तो तुम मेरे पास अक्सर आ जाया करना और मैं तुम्हारे पास अक्सर आ जाया करूँगी। इस तरह से हम आपस में बात कर के अपना समय अच्छे से गुजार सकेंगे।"

सुदेवा बाई राजी हो गयी। सुदेवा बाई उसको खुश करने के लिये अपने सारे जवाहरात आदि उसको दिखाने के लिये ले आयी।

जब वे उनको देख रही थीं तो बड़ी रानी ने सुदेवा बाई से पूछा — "मैं देखती हूँ कि तुम सोने के मोतियों का यह हार हमेशा ही अपने गले में पहने रहती हो। ऐसी क्या बात है इसमें? क्या कोई खास बात है इस हार में कि वही हार तुम हमेशा ही पहने रहो?"

सुदेवा बाई ने बिना कुछ सोचे विचारे जवाब दिया — "हाँ। मेरा जन्म इस हार के साथ ही हुआ था तो अक्लमन्द लोगों ने मेरे माता पिता से कहा कि इस हार में मेरी आत्मा है और अगर किसी और ने इसे पहना तो मैं मर जाऊँगी। इसलिये मै इसे हमेशा ही पहने रहती हूँ। मैंने इसको एक बार भी अपने गले से नहीं उतारा है।"

जब बड़ी रानी ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुई फिर भी उन मोतियों के हार को चुराने में उसे डर ही लगा रहा। एक डर तो

उसको यह था कि उसकी चोरी पकड़ी जायेगी और दूसरे यह था कि वह ऐसा कुछ अपने हाथ से नहीं करना चाहती थी।

घर लौटने के बाद उसने अपनी एक विश्वास की अफ्रीकन नौकरानी को बुलाया और उससे कहा — "आज शाम को तुम सुदेवा बाई के कमरे में जाना और जब वह सो रही हो तो उसके गले से सोने के मोतियों का हार निकाल लेना।

उसको अपने गले में पहन लेना और मेरे पास आ जाना। उन मोतियों में उसकी जान है तो जैसे ही तुम उनको पहनोगी वह मर जायेगी।"

वह नौकरानी वही करने के लिये राजी हो गयी जो बड़ी रानी ने उससे करने के लिये कहा था। क्योंकि उसको यह बहुत पहले से ही पता था कि उसकी मालकिन सुदेवा से पहले से ही बहुत नफरत करती थी। वह केवल उसकी मौत चाहती थी।

सो उस रात वह नौकरानी बहुत ही हल्के कदमों से सुदेवा बाई के कमरे में गयी, उसका वह सोने का हार चुराया और अपने गले में पहन लिया।

इससे पहले कि कोई और जान पाता कि वहाँ क्या हुआ था वह उस कमरे से बाहर निकल आयी।

जैसे ही नौकरानी ने सुदेवा बाई का हार उतार कर अपने गले में पहना तो सुदेवा बाई तो मर गयी। उसकी आत्मा उसका शरीर छोड़ गयी।

अगले दिन राजा और रानी रोज की तरह जब अपनी छोटी बहू को देखने गये तो जा कर उन्होंने उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया तो उन्होंने फिर से उसका दरवाजा खटखटाया।

पर उसके बाद भी जब किसी ने कोई जवाब नहीं दिया तो वे दरवाजा खोल कर अन्दर चले गये तो देखा कि वह तो वहाँ मरी पड़ी है बिल्कुल संगमरमर की तरह ठंडी।

हालाँकि जब उन्होंने उसको पहले दिन देखा था तब तो वह देखने में ठीक लग रही थी फिर रात भर में क्या हो गया उसको।

उन्होंने उसकी दासियों से पूछा जो उसके दरवाजे के ठीक बाहर सोती थीं कि क्या वह उस रात को बीमार हो गयी थी या फिर उसके कमरे में कोई गया था?

पर उन्होंने बताया कि उन्होंने उसके कमरे से कोई आवाज नहीं सुनी और न ही कोई उसके कमरे के पास गया था।

राजा और रानी ने यह देखने के लिये राज्य के सबसे अक्लमन्द डाक्टरों को बुलवाया कि क्या अभी भी उसके अन्दर ज़िन्दगी के कोई निशान बाकी थे पर सबने यही कहा कि छोटी रानी मर चुकी थी और अब उसके ज़िन्दा होने की कोई उम्मीद नहीं थी।

राजा और रानी दोनों दुख के सागर में डूब गये और ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। वे दिल से चाहते थे कि रावजी एक बार आ कर अपनी पत्नी को फिर से देख ले।

सो उन्होंने उसके शरीर को दफ़न करने की बजाय एक तालाब के पास एक छत के नीचे एक कब्र में रख दिया। कब्र के ऊपर एक छत लगी हुई थी। वे उसको रोज देखने के लिये जाते थे और उसको देर तक देखते रहते।

और तब एक दिन एक ऐसा चमत्कार हुआ जैसा उस देश में पहले कभी नहीं हुआ था। सुदेवा बाई का शरीर न तो खराब हुआ न उसके चेहरे का रंग बदला।

एक महीने बाद जब उसका पति रावजी लौटा तब भी वह उतनी ही सुन्दर और प्यारी लग रही थी जितनी कि वह अपनी मौत की रात को थी। उसके गालों और होठों का रंग अभी भी ताजा था। वह तो बस ऐसी लग रही थी जैसे केवल सोयी हुई हो।

रावजी ने जब उसकी मौत की खबर सुनी तो उसका दिल तो इतना टूट गया कि उसके माता पिता को लगा कि उसके दुख में वह भी मर जायेगा।

उसने अपनी बदकिस्मती के उस पल को कोसा जब वह उसके आखिरी शब्द भी नहीं सुन पाया था जो उसने उसको विदा करते समय कहे थे। अगर वह उसको न बचा पाया तो...

वह सुबह शाम उसकी कब्र पर जाता और रोता रहता। उसके रोने की आवाज से वहॉ की हवा भर जाती। वह उस जाली के अन्दर देखता रहता जिसके अन्दर वह कब्र के ऊपर लेटी हुई थी। उसके ऊपर छत अभी भी लगी हुई थी।

वह वहॉ जब भी जाता यही कहता — "मैं तुम्हारे चेहरे को एक बार आखिरी बार देख लूँ फिर कल चाहे तुमको मौत आ जाये, ओ मेरी प्यारी चमकीली पत्नी।"

यह सब देख कर राजा और रानी को यही डर लगा रहता कि या तो वह मर जायेगा या फिर पागल हो जायेगा सो उन्होंने उसका सुदेवा बाई के पास जाना बन्द करना चाहा पर कोई फायदा नहीं हुआ। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह अपनी ज़िन्दगी में केवल उसी की चिन्ता करता था और किसी की नहीं।

उधर जिस नौकरानी ने सुदेवा बाई का हार चुराया था वह उसको सारे दिन तो पहने रखती पर हर रात कुछ रात बीत जाने पर उसको अगली सुबह तक के लिये उतार कर रख देती।

जब वह उसको उतार देती तब सुदेवा बाई की आत्मा उसमें से उड़ कर सुदेवा बाई के शरीर में पहुँच जाती।

इस तरह से सुदेवा बाई सारी रात ज़िन्दा रहती पर जब वह नौकरानी सुबह को फिर से वह हार पहन लेती तो वह फिर से मर जाती।

पर क्योंकि वह कब्र वहॉ के किसी भी घर से थोड़ी दूर थी और राजा और रानी और रावजी वहॉ केवल दिन में ही जाते थे किसी को इस बात का पता ही नहीं चल सका कि सुदेवा बाई वहॉ रात को ज़िन्दा हो जाती थी।

जब सुदेवा बाई पहली बार इस तरह ज़िन्दा हुई तो वह तो अपने आपको अँधेरे में अकेला पा कर बहुत डर गयी। उसको लगा कि वह जेल में बन्द है पर बाद में वह उसकी आदी हो गयी।

एक दिन रात को जब वह ज़िन्दा हुई तो उसने सोचा कि जब सुबह होगी तब वह अपने आस पास की जगह को देखेगी और अपने महल का रास्ता खोज लेगी और फिर महल में आ कर अपना हार भी ढूँढ लेगी जिसको कि वह सोचती थी कि शायद वह उससे खो गया है।

उस कब्र के चारों तरफ कुछ जंगल था और रात में उस जंगल में से हो कर जाना बहुत खतरनाक था। वहाँ वह सारी रात जंगली जानवरों की चीखें सुनती रहती थी जिनसे वह डरी डरी रहती।

पर सुबह तो कभी आयी ही नहीं क्योंकि जैसे ही सुबह होती तो वह नौकरानी वह हार फिर से पहन लेती और सुदेवा बाई फिर से मरे जैसी हो जाती।

खैर, हर रात जब रानी ज़िन्दा हो जाती तो वह अपनी कब्र के पास वाले तालाब पर जाती और ठंडा पानी पी कर वहाँ से वापस आ जाती पर उसके लिये खाना वहाँ कहीं नहीं था।

इसके अलावा अब उसके मुँह से मोती और जवाहरात भी नहीं गिरते थे क्योंकि इस समय उससे बात करने वाला भी कोई नहीं था। पर हर बार जब भी वह उस तालाब के पास जाती तो वह अपने रास्ते पर जवाहरात बिखेरती जाती।

एक दिन जब रावजी उसको देखने के लिये उसकी कब्र पर गया तो उसने देखा कि वहॉ तो जवाहरात बिखरे पड़े हैं। यह सोचते हुए कि यह तो एक बड़ा आश्चर्य है उसने तय किया कि वह यह देखेगा कि वे जवाहरात कहॉ से आये।

हालॉकि यह बात उसके दिमाग में सपने में भी नहीं आयी कि उसकी पत्नी ज़िन्दा भी हो सकती है।

सो वह सारे दिन वहीं बैठा रहा और देखता रहा पर यह पता नहीं लगा सका कि वे जवाहरात कहॉ से आये क्योंकि सारे दिन तो सुदेवा बाई मरी जैसी पड़ी रहती। वह तो केवल रात को ही ज़िन्दा होती थी।

अब तक उसको वहॉ लेटे हुए दो महीने बीत चुके थे और रावजी उसको रोज केवल दिन में ही देख रहा था। कि उसने एक बेटे को जन्म दिया। जैसे ही वह बच्चा जन्मा दिन निकल आया और उसकी मॉ फिर मर गयी।

उस अकेले बच्चे ने रोना शुरू कर दिया पर वहॉ उसका रोना सुनने वाला कौन था। इत्तफाक की बात कि उस दिन रावजी भी उधर नहीं गया।

क्योंकि उसने सोचा कल तो मैंने वहॉ सारा दिन खर्च किया और फिर भी कुछ मिला नहीं इसलिये आज दिन में न जा कर मैं शाम का इन्तजार करता हूँ और तब देखता हूँ कि वे जवाहरात कहॉ से आये।

सो जब शाम हुई तब वह उधर गया तो उसने उस कब्र के अन्दर से एक बहुत हल्की सी रोने की आवाज सुनी पर वह क्या था यह वह नहीं जान सका। हो सकता है वह कोई बुरी आत्मा हो।

अभी वह यह सोच ही रहा था कि कब्र का दरवाजा खुला और सुदेवा बाई उसको तालाब की तरफ जाती हुई नजर आयी। उसकी गोद में एक बच्चा था।

जैसे जैसे वह चलती जा रही थी जवाहरात उसके रास्ते पर दोनों तरफ बिखरते जा रहे थे। रावजी को लगा वह तो सपना देख रहा था।

पर जब उसने देखा कि रानी ने तालाब से पानी पिया और फिर कब्र की तरफ लौट आयी तो वह अपनी जगह से उछल पड़ा और उसके पीछे पीछे चल दिया।

सुदेवा बाई ने जब अपने पीछे किसी के आने की आवाज सुनी तो वह डर गयी और कब्र की तरफ भागी। अन्दर जा कर उसने कब्र का दरवाजा बन्द कर लिया।

रावजी बाहर से चिल्लाया — "दरवाजा खोलो मुझे अन्दर आने दो।"

रानी ने पूछा — "तुम कौन हो? क्या तुम कोई राक्षस हो या फिर कोई आत्मा हो?"

क्योंकि उसको लगा कि शायद वह कोई भयानक जीव हो और उसे और उसके बच्चे को मारना चाहता हो।

रावजी चिल्लाया — "नहीं नहीं मैं राक्षस नहीं हूँ। मैं तुम्हारा पति हूँ अगर तुम वाकई ज़िन्दा हो तो मुझे अन्दर आने दो ओ सुदेवा बाई।"

जैसे ही रावजी ने सुदेवा बाई का नाम लिया तो उसने उसकी आवाज पहचान ली और उसने उसके लिये दरवाजा खोल दिया और उसको अन्दर आने दिया।

जब रावजी ने देखा कि वह अपने बच्चे को गोद में ले कर कब्र पर बैठी हुई है तब उसको विश्वास हुआ कि वह सपना नहीं देख रहा था।

वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला — "मुझसे कहो सुदेवा बाई कि यह सपना नहीं है।"

सुदेवा बाई बोली — "नहीं यह सपना नहीं है। मैं वाकई ज़िन्दा हूँ। और यह हमारा बच्चा कल रात को ही पैदा हुआ है। पर मैं रोज दिन में मर जाती हूँ और रात को ज़िन्दा हो जाती हूँ। जब तुम यहाँ नहीं थे तो किसी ने मेरा हार चुरा लिया।"

तब पहली बार रावजी ने देखा कि सोने के मातियों का वह हार उसके गले में नहीं था। उसने उससे कहा कि वह डरे नहीं वह उसका हार ढूँढ कर ही रहेगा और उसको वापस ले कर आयेगा।

कह कर वह महल वापस चला गया। वह वहाँ सुबह सवेरे ही पहुँच गया। घर पहुँच कर उसने अपने सारे घर के लोगों को अपने सामने बुलाया।

जब सब वहॉ आ गये तो उसने देखा कि उसकी बड़ी रानी की अफ्रीकन नौकरानी के गले में वह हार पड़ा हुआ था। उसने तुरन्त ही वह हार उसके गले से निकाल लिया और उसको जेल में डलवा दिया।

वह नौकरानी डर गयी और उसने स्वीकार किया कि यह सब उसने बड़ी रानी के हुक्म पर किया था और साथ में यह भी बताया कि उसने यह सब कैसे किया।

जब रावजी को यह पता चला कि यह उसकी बड़ी रानी की चाल थी उसने उसको भी ज़िन्दगी भर के लिये जेल भेज दिया।

फिर राजा, रानी और रावजी सब कब्र पर गये और सुदेवा का हार उसके गले में पहनाया जिससे वह फिर हमेशा के लिये ज़िन्दा हो गयी। वे लोग अपनी बहू और पोते को ले कर खुशी खुशी घर लौटे।

यह खबर कि छोटी रानी किस तरह ज़िन्दा हो गयी सारे राज्य में फैल गयी और यह सुन कर सब लोग बहुत खुश हुए। राज्य में बहुत दिनों तक इसकी खुशियॉ मनती रहीं।

राजा रानी रावजी छोटी रानी जो अब बड़ी रानी बन गयी थी अपने बेटे के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

6 कोरियन सिन्डरैला[28]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी एशिया महाद्वीप के कोरिया देश में रहने वाले लोगों में कही सुनी जाती है।

कोरिया देश में जहॉ जादुई लोग और जानवर बहुत सामान्य हैं, या कहना चाहिये जैसे कि वहॉ बन्द गोभी बहुतायत में होती है वैसे ही वे भी वहॉ जादुई लोग और जानवर भी बहुतायत में होते हैं।

वहॉ एक बच्ची रहती थी जिसका नाम था नाशपाती का फूल। यह नाशपाती का फूल बच्ची इतनी ही प्यारी थी जितना कि उसके जन्म दिन पर लगाया गया नाशपाती का पेड़।

एक जाड़े की सुबह जब उस नाशपाती के पेड़ की डंडियॉ अभी भी नंगी थीं तो नाशपाती के फूल की मॉ चल बसी। उसका पिता अपनी पत्नी के लिये बहुत रोया बहुत रोया कि अब उसकी नाशपाती के फूल की देखभाल कौन करेगा।

यही सब सोच कर उसने अपना घोड़े के लम्बे बालों वाला टोप पहना और गॉव के एक शादी कराने वाले के पास गया।

---

[28] The Korean Cinderella – a Korean Cinderella story from Korea, Asia.
Written by Shirley Climo. Taken from the Web Site :
http://fourthgradespace.weebly.com/uploads/1/3/3/9/13397069/text-_korean_cinderella_story.pdf
[Originally appeared at : http://park.org/Guests/Tampines/story2.shtml by Shirley Climo]

वह शादी कराने वाली एक ऐसी विधवा को जानती थी जिसके नाशपाती के फूल जितनी बड़ी एक बेटी थी। उस विधवा का नाम ओमोनी था उसकी भी एक बेटी थी जिसका नाम पियोनी था।[29]

शादी कराने वाली ने नाशपाती के फूल के पिता को विश्वास दिलाया कि उस विधवा की बेटी नाशपाती के फूल की एक अच्छी बहिन साबित होगी सो उसको उससे शादी कर लेनी चाहिये।

सो नाशपाती के फूल के पिता ने उससे शादी कर ली और वे दोनों मॉ बेटी नाशपाती के फूल के घर आ गयीं।

पर जब ओमोनी और पियोनी ने नाशपाती के फूल को देखा कि वह कितनी सुन्दर थी तो वे दोनों ही उससे जलने लगीं। ओमोनी उससे घर के बहुत सारे काम कराती और उसके हर काम में हमेशा ही कुछ न कुछ गलती निकालती रहती।

एक दिन गॉव में एक त्यौहार मनाया जा रहा था। सब वहॉ जाने की तैयारी में थे। जब नाशपाती के फूल ने वहॉ जाने की इच्छा प्रगट की तो ओमोनी अपनी इतनी मीठी आवाज में बोली जितनी कि बाजरे की चीनी होती है — "नाशपाती का फूल वहॉ जा तो सकती है पर वह तभी जा सकती है जबकि वह चावल के खेतों की घास साफ कर दे।"

[29] Omoni was the name of the widow and Piyoni was the name of her daughter.

कह कर उसने नाशपाती के फूल के हाथों में एक टोकरी पकड़ा दी जिसमें कुछ पुराने शलगम रखे हुए थे। यह उसका दोपहर का खाना था। नाशपाती के फूल ने वह टोकरी पकड़ी, माँ को धन्यवाद दिया और चावल के खेतों की घास निकालने चल दी।

जब वह चावल के खेत पर पहुँची तो उसने दुखी हो कर अपनी शलगम की टोकरी नीचे पटक दी। चावल के खेत उसके सामने हरी झील की तरह से लहरा रहे थे। उसकी घास निकालना तो हफ्तों का काम था। वह यह काम इतनी जल्दी खत्म कैसे कर सकती थी।

वह यह कहते हुए वहीं बैठ गयी – "हे भगवान यह मैं कैसे करूँ?"

तभी एक काला बैल लम्बी लम्बी घास में से निकल आया और उससे बोला — "करो, करो।"

और यह कह कर वह चावल के खेत में उगी हुई घास खाने लगा। वह खेत में लगे चावल के पौधों की कतारों के बीच में हवा से भी ज़्यादा तेज़ी से घूम रहा था और उसकी घास खाता जा रहा था।

इससे पहले कि नाशपाती का फूल कुछ कह पाती उसने देखा कि वह बैल तो चावल के खेत की घास खा कर गायब भी हो चुका था।

अब न तो वहॉ वह बैल था और न चावल के खेत में कोई घास थी। और सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि चावल का एक पौदा भी कुचला नहीं था।

नाशपाती के फूल ने अपने हाथ अपने मुँह पर रख लिये और खुशी से चिल्लायी — "हे भगवान तुमको हजारों धन्यवाद।"

नाशपाती का फूल यह सब देख कर बहुत खुश हुई और अपने गॉव के त्यौहार को देखने गॉव की तरफ दौड़ पड़ी।

वहॉ जाने का रास्ता एक टेढ़ी मेढ़ी नदी के साथ साथ जाता था और उसके ऊपर बहुत सारे छोटे छोटे पत्थर पड़े हुए थे। ऐसी सड़क पर चलते हुए उसके सैन्डिल में एक पत्थर घुस गया।

उस पत्थर की वजह से गिरने से बचने के लिये और उसको निकालने के लिये उसने अपना पैर झटका तो उसका तिनकों का बना एक सैन्डिल उसके पैर में से निकल गया।

कि तभी उसने एक आवाज सुनी — "चलती जा चलती जा। मजिस्ट्रेट के पास तक चलती जा।"

इस आवाज के साथ साथ ही उसने देखा कि चार आदमी एक पालकी के चार डंडे अपने कन्धों पर उठाये हुए उसकी तरफ भागे चले आ रहे हैं।

उस पालकी की कुरसी पर एक नौजवान बहुत ही बढ़िया पोशाक पहने और उसके ऊपर जेड[30] का एक बहुत ही अच्छा सा गहना पहने बैठा है।

उसको देख कर नाशपाती का फूल तो बस अपने एक हाथ में अपना तिनकों का एक सैन्डिल हाथ में लिये एक टॉग पर ही खड़ी रह गयी – सारस की तरह।

उसके गाल लाल मिर्च की तरह से लाल हो गये और फिर वह कूद कर एक विलो के पेड़[31] के पीछे खड़ी हो गयी जो वहीं नदी के पास ही था। जैसे ही वह कूदी तो उसके हाथ से उसका वह सैन्डिल भी छूट गया और उस नदी के पानी में गिर पड़ा।

नदी का बहाव तेज़ था सो उसका वह सैन्डिल जल्दी ही उसमें एक नाव की तरह से बहता चला गया और उससे दूर चलता चला गया।

उस पालकी में वहॉ का मजिस्ट्रेट जा रहा था।

वह चिल्लाया — "रुक जाओ।"

असल में यह उसने अपने पालकी ले जाने वाले कहारों से कहा था पर नाशपाती के फूल को लगा जैसे वह उस पर चिल्लाया। नाशपाती का फूल डर गयी और वहॉ से भाग ली।

---

[30] Jade is a semi-precious stone. It is very common in Eastern countries – China, Korea, Philippines etc countries. It comes in several colors. Here it is shown in green color – in its very common color. See its picture above.

[31] Willow tree is a shady kind of tree.

मजिस्ट्रेट तो उसको देखता ही रह गया। वह कितनी सुन्दर थी। उसने अपने लोगों को उसका सैन्डिल पानी में से निकालने का और उसको गॉव वापस ले जाने का हुक्म दिया।

जब तक नाशपाती का फूल गॉव के त्यौहार में पहुॅची वह अपने खोये हुए सैन्डिल की बात बिल्कुल ही भूल गयी थी।

वह वहॉ पर बहुत देर तक रस्सी पर चलते हुए और कलाबाजी दिखाते हुए लोगों को देखती रही जब तक उसको उनको देखते देखते चक्कर नहीं आने लगे। वह वहॉ बज रहे बॉसुरी और ढोल की आवाज पर भी झूमती रही।

तभी अचानक उसने किसी के चिल्लाने की आवाज सुनी — "तू यहॉ क्या कर रही है?" यह इसकी सौतेली मॉ की आवाज थी।

उसने जवाब दिया — "मैं यहॉ एक काले बैल की वजह से हूॅ मॉ क्योंकि उसने चावल के खेत की सब घास खा ली थी।"

मॉ बोली — "ओह, अच्छा। काले बैल की वजह से? ओ झूठी।"

इतने में ही वहॉ मजिस्ट्रेट की पालकी के कहारों की आवाज गूॅजी जो उसकी पालकी को लिये हुए भीड़ में चले आ रहे थे — "सुनो सुनो सुनो। हम एक ऐसी लड़की को ढूॅढ रहे हैं जिसके पैर में एक ही जूता हो।"

पियोनी ने तुरन्त ही अपनी बहिन की तरफ इशारा किया और बोली — "अरे यह तो नाशपाती का फूल है। लगता है इसका एक जूता खो गया है क्योंकि यही है जो केवल एक जूता पहने है।"

कहारों ने पालकी नाशपाती के फूल के पास नीचे रख दी और उसमें बैठे मजिस्ट्रेट ने वह तिनकों का बना सैन्डल आगे कर दिया।

नाशपाती के फूल की सौतेली मॉ चिल्लायी — "मजिस्ट्रेट तुझे गिरफ्तार करने आये हैं। तूने जरूर ही कोई जुर्म किया होगा। अच्छा हुआ। तुझे इसकी सजा मिलनी ही चाहिये।"

मजिस्ट्रेट बहुत ही कोमल आवाज में बोला — "नहीं इसने कोई जुर्म नहीं किया बल्कि यह तो मेरी पत्नी होने के लायक है क्योंकि इसके इस जूते ही ने तो मुझे इसके पास तक पहुॅचाया है।"

फिर वह नाशपाती के फूल से बोला — "यह तो मेरी खुशकिस्मती होगी अगर इस जूते को पहनने वाली मेरी पत्नी बनने के लिये राजी हो।"

यह सुन कर नाशपाती का फूल मुस्कुरा दी। वह तो शरम के मारे बोल भी नहीं सकी। उसने उसके हाथ से अपनी सैन्डिल ली और उसको अपने दूसरे पैर में पहन लिया।

मजिस्ट्रेट ने उसको अपनी पालकी पर चढ़ा लिया और पालकी के कहार उस पालकी को ले कर भीड़ में चल दिये।

ओमोनी और पियोनी तो उन दोनों के जाने के बाद वहॉ हक्का बक्का सी खड़ी देखती रह गयीं। यह तो उनके लिये एक डरावना सपना सा था।

जब वे घर पहुॅचीं तो उन्होंने देखा कि घर में तो बारह नाशपाती के पेड़ फूल गये थे और घरेलू चिड़ियें उन पर "ईव्हा ईव्हा"[32] चहचहा रही थीं।

[32] Ewha – in Korean language Ewha means "Pear Blossom"

7 मारिया और सुनहरी जूते[33]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी एशिया महाद्वीप के फिलीपीन्स देश में कही सुनी जाती है और आज से करीब सौ साल पहले प्रकाशित की गयी थी।

पर इसके सौ साल पहले प्रकाशित होने का मतलब यह नहीं है कि यह कहानी केवल सौ साल से ही चली आ रही है। यह कहानी तो उससे भी पुरानी है पर केवल प्रकाशित ही सौ साल पहले हुई थी।

यह फिलीपीन्स देश की बात है कि एक बार वहाँ एक पति पत्नी अपनी एकलौती बेटी के साथ रहते थे। उनकी बेटी का नाम था मारिया[34]। जब मारिया छोटी ही थी तो उसकी माँ चल बसी।

उसकी माँ के मरने कुछ साल बाद ही उसका पिता एक विधवा के प्रेम में पड़ गया। उस विधवा का नाम था जुआना[35]।

---

[33] Maria and the Golden Slipper – a fairy tale from Philippines, Asia.
This story taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Translated and edited by DL Ashliman.
Charles Perrault took it from the book : Filipino Popular Tales by Dean S Fansler, Lancaster, PA, and NY: American Folk-Lore Society, 1921), no. 45B, pp. 314-16.
Dean S Fansler took it from "Narrated by Dolores Zafra, a Tagalog from Pagsanjan, Laguna". She says that this is a Tagalog story, and was told to her when she was a little girl."

[34] Maria – name of the girl

[35] Juana – name of the stepmother

जुआना की अपनी भी दो बेटियॉ थीं। उन दोनों बेटियों में से बड़ी बेटी का नाम था रोज़ा और छोटी का नाम था दामियाना।[36]

जब मारिया थोड़ी बड़ी हो गयी तो उसके पिता ने जुआना से शादी कर ली। मारिया अपने पिता और अपनी सौतेली मॉ के साथ रहती रही पर जुआना और उसकी दोनों बेटियॉ उसको बिल्कुल पसन्द नहीं करती थीं और उसको नौकर की तरह से इस्तेमाल करतीं।

मारिया को ही घर का सारा काम करना पड़ता – खाना बनाना पड़ता, कपड़े धोने पड़ते, फर्श साफ करने पड़ते। और उसको पहनने को मिलते केवल फटे और मैले कपड़े और खाने के लिये बचा खुचा खाना।

एक बार वहॉ के राजकुमार मैलकैडेल[37] ने सोचा कि वह अब शादी करेगा सो उसने एक बहुत बड़े नाच का इन्तजाम किया।

उसमें उसने राज्य भर की सब लड़कियों और स्त्रियों को बुलाया। उसने कहा कि उन लड़कियों और स्त्रियों में से जो भी सबसे अधिक सुन्दर होगी वह उसी से शादी करेगा।

जब रोज़ा और दामियाना को इस बात का पता चला कि राजकुमार ने एक नाच का इन्तजाम किया है और उसमें सब लड़कियों और स्त्रियों को बुलाया है तो वे बहुत खुश हुईं और

[36] Rosa and Damiana – names of the two daughters of the man

[37] Malecadel – the name of the Prince

उन्होंने इस बारे में आपस में बात करनी शुरू कर दी कि वे उस दिन क्या क्या पहनेंगी पर बेचारी मारिया तो उस समय नदी पर अपने कपड़े धो रही थी।

मारिया बहुत दुखी थी और वह रो भी रही थी क्योंकि उसके पास तो कोई और कपड़ा ही नहीं था जिसको पहन कर वह राजकुमार के यहाँ नाच में जा सकती।

जब वह कपड़े धो रही थी तो एक केंकड़ा[38] उसके पास आया और उसने मारिया से पूछा — "मारिया तुम क्यों रो रही हो? तुम मुझे बताओ क्योंकि मैं तुम्हारी माँ हूँ।"

मारिया ने केंकड़े से कहा — "मेरी सौतेली माँ और बहिनें मुझे बहुत तंग करते हैं। वे मुझे नौकर की तरह से इस्तेमाल करते हैं। आज रात को राजकुमार के महल में नाच है और मैं भी नाच में जाना चाहती हूँ पर मेरे पास कोई ऐसा कपड़ा नहीं है जिसे पहन कर मैं उस नाच में जा सकूँ।"

जब वह उस केंकड़े से बात कर रही थी उसी समय वहाँ उसकी सौतेली माँ जुआना आ गयी। वह मारिया से बहुत गुस्सा थी सो उसने उससे उस केंकड़े को पकड़ कर उसके लिये पकाने के लिये कहा।

मारिया ने उस केंकड़े को पकड़ लिया और उसे घर ले आयी। पहले तो वह उसको पकाना नहीं चाहती थी क्योंकि उसको मालूम

[38] Translated for the word "Crab" – see its picture above.

था कि वह उसकी मॉ थी पर जुआना ने उसको इतना मारा कि मारिया को उसका कहा मानना ही पड़ा।

इससे पहले कि उस केंकड़े को किसी मिट्टी के बरतन में पकने के लिये रखा जाता केंकड़े ने मारिया से कहा — "मारिया, तुम मेरा मॉस नहीं खाना बल्कि जब सब लोग मेरा मॉस खा लें तो मेरे ऊपर का खोल निकाल लेना और उसके टुकड़े कर के घर के पास वाले बागीचे में गाड़ देना।

वे एक पेड़ के रूप में उग आयेंगे। फिर तुमको जब भी जो कुछ भी चाहिये तुम उस पेड़ से मॉग सकती हो।"

यह सुन कर मारिया ने केंकड़े को मार दिया और पका दिया। जब केंकड़ा पक गया तो उसके माता पिता ने तो उसका मॉस खा लिया पर मारिया ने नहीं खाया।

मारिया ने उसके खोल के टुकड़े इकट्ठे कर लिये और उनको अपने घर के पास वाले बागीचे में गाड़ दिया।

जब शाम का धुँधलका हुआ तो मारिया ने देखा कि जहॉ उसने केंकड़े का खोल गाड़ा था वहॉ एक छोटा सा पेड़ उग आया है।

जब रात हुई तो रोज़ा और दामियाना तो राजकुमार के महल में नाच के लिये चली गयीं और अपनी बेटियों के जाने के बाद जुआना सोने चली गयी।

मारिया ने जब देखा कि उसकी सौतेली माँ सो गयी तो वह बागीचे में गयी और राजकुमार के महल में नाच में जाने के लिये जो कुछ उसको चाहिये था उस पेड़ से उसने वह सब माँगा।

पेड़ ने उसके फटे मैले कपड़े बहुत ही सुन्दर कपड़ों में बदले, उसको चार घोड़ों से खींची जाने वाली एक गाड़ी दी और एक जोड़ी सुनहरे जूते दिये।

उनको पहन कर वह वहाँ से जाने ही वाली थी कि पेड़ ने कहा — "एक बात का ध्यान रखना बेटी। तुम यहाँ पर रात को बारह बजे से पहले पहले ही आ जाना। अगर तुम नहीं आयीं तो ये तुम्हारे बढ़िया कपड़े फिर से फटे और मैले कपड़ों मे बदल जायेंगे और तुम्हारी यह गाड़ी भी गायब हो जायेगी।"

मारिया ने कहा कि वह इस बात को याद रखेगी और वह नाच में चली गयी जहाँ राजकुमार ने उसका बहुत ही शानदार स्वागत किया।

वहाँ बैठी हुई सारी स्त्रियों ने जब उसको देखा तो उसकी बहुत तारीफ की क्योंकि मारिया वहाँ बैठी सभी स्त्रियों में सबसे सुन्दर लग रही थी। फिर वह अपनी दोनों बहिनों के बीच में बैठने चली गयी। पर न तो रोज़ा और न ही दामियाना उसको पहचान सकीं।

राजकुमार तो उसके साथ सारी शाम ही नाचता रहा। पर मारिया ने जब देखा कि रात के साढ़े ग्यारह बज गये हैं तो उसने राजकुमार और सब स्त्रियों को विदा कहा और वहाँ से चली आयी।

घर आ कर वह फिर अपने उसी पेड़ के पास गयी और उस पेड़ ने उसके कपड़े फिर से बदल दिये और उसकी गाड़ी भी गायब हो गयी। उसके बाद वह सोने चली गयी।

जब उसकी बहिनें घर लौट कर आयीं तो उन्होंने उसको वह सब बताया जो वहॉ हुआ था।

अगली रात राजकुमार ने एक और नाच का इन्तजाम किया। जब रोज़ा और दामियाना अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर तैयार हो कर चली गयीं तो मारिया फिर बागीचे में अपने उसी पेड़ के पास गयी और नाच में जाने के लिये उससे अच्छे कपड़े मॉगे।

इस बार उसको चार घोड़ों की बजाय पॉच घोड़ों से खींची जाने वाली गाड़ी दी गयी। उसको एक बार फिर से कहा गया कि वह रात को बारह बजे से पहले पहले आ जाये।

जब वह तैयार हो कर महल पहुॅची तो राजकुमार उसको देख कर बहुत खुश हुआ और वह फिर से सारी शाम उसी के साथ नाचता रहा।

आज मारिया उसके साथ नाचने में इतनी खो गयी कि उसको समय का पता ही नहीं चला। जब वह नाच रही थी तभी उसने घड़ी को बारह का घंटा बजाते सुना। यह घंटा सुनते ही वह जितनी तेज़ी से भाग सकती थी वहॉ से भाग ली, कमरा पार कर के सीढ़ियों से नीचे और महल के दरवाजे से बाहर।

पर इस जल्दी में उसके पैर से उसका एक सुनहरी जूता निकल गया। क्योंकि बारह बज चुके थे तो उसके अच्छे कपड़े भी गायब हो गये और उसकी पॉच घोड़ों वाली गाड़ी भी।

उसको अपने फटे और मैले कपड़ों में पैदल ही घर वापस आना पड़ा। बस उसके एक पैर में सुनहरी जूता था और दूसरा तो वहीं महल में ही छूट गया था।[39]

वह छूटा हुआ जूता महल के चौकीदार को मिल गया। उसने वह जूता राजकुमार को दे दिया। चौकीदार ने उसको बताया कि यह जूता उस लड़की का था जो रात के बारह बजते ही महल के बाहर भाग गयी थी।

राजकुमार ने वहॉ बैठे सब लोगों से कहा — "यह जूता जिस लड़की के पैर में भी आ जायेगा वही मेरी पत्नी होगी।"

अगली सुबह राजकुमार ने वह जूता अपने एक चौकीदार को दिया और उससे कहा कि वह उसको ले कर घर घर जाये और उस जूते की मालकिन का पता लगाये।

इत्तफाक से वह चौकीदार सबसे पहले मारिया के ही घर पहुँचा। वहॉ सबसे पहले रोज़ा ने उस जूते को पहन कर देखा तो उसका पैर तो उस जूते के लिये बहुत बड़ा था।

[39] This is very strange that Maria's all other things disappeared at the midnight except the one shoe which she was wearing….. Well.

फिर उस जूते को दामियाना ने पहन कर देखा तो उसका पैर उस जूते के लिये बहुत छोटा था। दोनों बहिनों ने उस जूते को बार बार पहन कर देखा पर वह जूता किसी के पैर में भी ठीक नहीं बैठा।

तब मारिया ने कहा कि अब वह उस जूते को पहन कर देखेगी पर उसकी बहिनों ने कहा — "तुम्हारे पैर तो बहुत गन्दे हैं। यह सुनहरा जूता तुम्हारे पैर में नहीं आयेगा क्योंकि तुम्हारे पैर तो हमारे पैरों से भी बड़े हैं।" और इतना कह कर वे हॅस दीं।

पर वे चौकीदार जो उस जूते को ले कर आये थे बोले — "उसको भी पहन कर देखने दो क्योंकि राजकुमार का हुकुम है कि सभी लड़कियों को यह जूता पहन कर देखना चाहिये।" कह कर एक चौकीदार ने वह जूता मारिया की तरफ बढ़ा दिया।

मारिया ने उसको पहन कर देखा तो वह तो उसके बिल्कुल ठीक आया। उस एक जूते को पहनने के बाद उसने अपनी पोशाक में से दूसरा जूता निकाला और अपने दूसरे पैर में पहन लिया।

जब दोनों बहिनों ने उसके पैर में दोनों जूते देखे तो वे तो आश्चर्य से करीब करीब बेहोश सी ही हो गयीं।

राजकुमार ने मारिया से शादी कर ली और फिर उसके बाद से वह अपनी सौतेली मॉ और बहिनों की भी प्यारी हो गयी।

8 आश्चर्यजनक बिर्च[40]

सिन्डरैला की यह कहानी एशिया महाद्वीप के रूस देश में कही सुनी जाती है। यह कहानी भी बहुत पुरानी है – **1890** से भी पुरानी।[41]

एक बार की बात है कि रूस देश में एक पति पत्नी रहा करते थे। उनके एक एकलौती बेटी थी। एक बार उनकी एक भेड़ कहीं इधर उधर खो गयी तो वे उसको ढूँढने के लिये निकले। दोनों उसको ढूँढने के लिये जंगल के अलग अलग हिस्सों में चले गये।

भेड़ ढूँढते ढूँढते पत्नी को एक जादूगरनी[42] मिल गयी। जादूगरनी ने उससे कहा — "ओ बदकिस्मत स्त्री, अगर तुम मेरे चाकू के खोल[43] में थूको या फिर मेरी टाँगों के बीच में से निकल जाओ तो मैं तुमको काली भेड़ बना दूँगी।"

---

[40] The Wonderful Birch – a fairy tale from Russia, Asia.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Translated and edited by DL Ashliman.
Charles Perrault took it from "The Red Fairy Book", by Andrew Lang. 5th ed. London, Longmans, Green, and Company, 1890, pp. 123-32.
And Andrew Lang took it from the book : "From the Russo-Karelian".

[41] In the previous book "Cinderella Europe Mein-1" we have given a list of some stories of Cinderella. In it it is written that this story is from Finland. It may be possible but there are several other stories too which have reached Russia from the Norse countries that is why it might have been given like this there.

[42] Translated for the word "Witch"

[43] Translated for the words "Sheath of knife" – a leather case in which the knife is kept. See its picture above.

यह सुन कर उस स्त्री ने न तो उसके चाकू के खोल में थूका और न ही वह उसके पैरों के बीच में से निकली पर फिर भी उस जादूगरनी ने उसको काली भेड़ में बदल दिया और खुद उसने उस स्त्री का रूप रख लिया।

फिर उसने उस स्त्री के पति को बुलाना शुरू किया — "हलो हलो, देखो मुझे वह भेड़ मिल गयी।"

उसके पति ने समझा कि वह जादूगरनी उसकी अपनी पत्नी है पर उसको यह पता नहीं था कि उसकी पत्नी तो जादूगरनी है और वह काली भेड़ उसकी पत्नी है।

सो वह अपनी पत्नी और भेड़ के साथ खुशी खुशी घर चला गया क्योंकि उसकी भेड़ तो उसको मिल ही गयी थी।

जब वे लोग घर पहुँचे तो जादूगरनी ने आदमी से कहा — "सुनो, हमको इस भेड़ को मार डालना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि यह फिर से जंगल में भाग जाये और हमें इसे फिर से ढूँढने जाना पड़े।"

आदमी बहुत ही शान्त स्वभाव वाला था सो उसने उसकी बात मान ली और कहा "ठीक है। मार दो।"

उस आदमी की बेटी ने उन दोनों की बातें सुन ली थीं। वह बहुत दुखी हुई और दौड़ी दौड़ी भेड़ों के झुंड में गयी और ज़ोर ज़ोर

से रोने लगी — "ओह मेरी प्यारी मॉ। वे लोग तुमको मारने वाले हैं।"[44]

काली भेड़ बोली — "अच्छा। अगर वे मुझको मार भी देते हैं तो तुम एक काम करना। तुम न तो मेरा मॉस खाना और न ही मॉस का रस पीना बल्कि मेरी हड्डियॉ इकट्ठी कर लेना और उनको मैदान के किनारे गाड़ देना।"

लड़की बोली "ठीक है।"

थोड़ी देर बाद ही वे लोग वहॉ से उस काली भेड़ को ले गये और उसे मार दिया। जादूगरनी ने उसके मॉस का सूप बनाया और उसकी बेटी को पीने के लिये दिया पर उस लड़की ने अपनी मॉ की बात याद रखी और उस सूप को नहीं पिया।

बाद में उसने अपनी मॉ की हड्डियॉ इकट्ठी कीं और मैदान के किनारे गाड़ आयी। कुछ दिनों में वहॉ एक बहुत ही प्यारा सा बिर्च का पेड़[45] उग आया।

कुछ समय निकल गया तो उस जादूगरनी ने भी एक बच्ची को जन्म दिया। उस बच्ची के जन्म के बाद वह जादूगरनी उस आदमी की बेटी से नफरत करने लगी और उसको हर तरीके से तंग करने की कोशिश करने लगी।

---

[44] [My Note – this story does not tell as how the daughter came to know that her mother had been transformed into the black sheep while her father could not recognize his wife?]

[45] Birch tree is a long slender tree with a peeling kind of skin.

अब हुआ यह कि महल में एक दिन एक बहुत बड़ा त्यौहार मनाया जाने वाला था तो राजा ने सोचा कि उस त्यौहार में सब लोगों को बुलाया जाये सो उसने इस बात की मुनादी पिटवा दी —

आओ आओ सब लोग आओ गरीब और बदकिस्मत एक अकेले और सब कोई भी हो अन्धा या लूला लॅगड़ा चाहे घोड़े पर आओ या फिर समुद्र के रास्ते आओ

इस तरह की मुनादी सुन कर राजा के महल में सब तरह के लोग इकट्ठा होना शुरू हो गये – लॅगड़े, लूले, जाति से बाहर वाले, जाति के अन्दर वाले बड़े छोटे, – यानी सभी लोग।

उस आदमी के घर में भी राजा के महल में त्यौहार मनाने के लिये जाने की तैयारियॉ शुरू होगयीं। जादूगरनी अपने पति से बोली — "तुम हमारी छोटी बेटी को ले कर पहले चले जाओ और मैं बड़ी वाली बेटी को घर का काम दे कर वहॉ आती हूँ ताकि वह घर में बैठी बैठी कहीं आलसी न हो जाये।"

सो उस आदमी ने अपनी छोटी बेटी को लिया और महल की तरफ चल दिया। उसके जाने के बाद जादूगरनी ने भट्टी में आग जलायी।

फिर उसने आग में एक बरतन भर कर जौ की बालियॉ[46] डालीं और लड़की से बोली — "अगर तूने रात होने से पहले इस राख में से ये जौ नहीं बीने और

[46] Translated for the word "Barleycorn" – barleycorn is similar to wheatcorn. See its picture above.

वापस बरतन में नहीं रखे तो मैं तुझे खा जाऊँगी।" यह कह कर वह वहाँ से जल्दी जल्दी महल चली गयी।

वह बेचारी लड़की वहीं घर में अकेली रोती रह गयी। उसने राख में से वे जौ इकट्ठा करना शुरू किये पर उसने देखा कि उसकी मेहनत तो बेकार ही जा रही थी। उसके हाथ जल ज़्यादा रहे थे और उस आग में से जौ कम निकल रहे थे।

सो वह दौड़ी दौड़ी अपनी माँ की कब्र पर गयी और बिर्च के पेड़ के नीचे बैठ कर रोने लगी।

उसकी माँ तो वहाँ पेड़ के नीचे दबी पड़ी थी और इस हालत में वह उसकी कोई सहायता नहीं कर सकती थी। पर जब वह लड़की रो रही थी तो अचानक उसने अपनी कब्र में से आती अपनी माँ की आवाज सुनी — "मेरी प्यारी बेटी, तू क्यों रो रही है?"

वह लड़की बोली — "माँ उस जादूगरनी ने जौ की बालियाँ भट्टी में डाल दी हैं और मुझे उस राख में से जौ के दाने चुनने के लिये कहा है। अगर मैंने वे दाने नहीं चुने तो वह रात को मुझे खा जायेगी। मै इसी लिये रोती हूँ।"

उसकी माँ ने उसको तसल्ली देते हुए कहा — "बेटी तू रो नहीं। तू मेरी एक शाख तोड़ ले और उससे उस भट्टी को एक बार इधर से और एक बार उधर से मार और फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।"

लड़की ने ऐसा ही किया। उसने भट्टी को उस बिर्च की शाख से एक बार इधर से और एक बार उधर से मारा तो लो, वे सारे जौ के दाने तो अपने आप ही बरतन में आ कर गिर गये।

वह लड़की फिर से बिर्च के पेड़ के पास गयी और वह बिर्च की शाख अपनी मॉ की कब्र पर रख दी।

तब उसकी मॉ ने उसको उस पेड़ के तने के एक तरफ से नहाने के लिये कहा, दूसरी तरफ से अपने आपको सुखाने के लिये कहा और तीसरी तरफ से कपड़े पहनने के लिये कहा।

लड़की ने वैसा ही किया तो वह तो इतनी सुन्दर हो गयी कि पूरी धरती पर सुन्दरता में उसका मुकाबला करने वाला कोई नहीं था।

उसको बहुत ही शानदार कपड़े पहनाये गये। एक बहुत ही सुन्दर घोड़ा दिया गया। उस घोड़े के बाल कुछ सुनहरी थे, कुछ रुपहले थे और कुछ और भी कीमती थे। वह लड़की कूद कर घोड़े की जीन[47] पर बैठ गयी और तीर की तरह से राजा के महल की तरफ चल दी।

जैसे ही वह महल के ऑगन में पहुॅची तो राजा का बेटा खुद उसको लेने के लिये बाहर तक आया। उसने उसके घोड़े को एक खम्भे से बॉधा और उसको अन्दर ले गया।

[47] Translated for the word "Saddle". See its picture above.

जब वे महल के कमरों से हो कर अन्दर जा रहे थे तो राजकुमार ने उसको पल भर के लिये भी अकेला नहीं छोड़ा। वह उसके साथ साथ ही रहा।

दूसरे लोग भी उसको देखे जा रहे थे और सोच रहे थे कि वह सुन्दरी कौन थी और किस राजा के महल से आयी थी जिसको राजा का बेटा छोड़ ही नहीं रहा था। पर कोई उसके बारे में कुछ बता ही नहीं पा रहा था क्योंकि उसको कोई जानता ही नहीं था।

जब दावत हुई तो राजकुमार ने उसको अपने पास ही बिठाया। यह उस लड़की के लिये बड़ी इज़्ज़त की बात थी। पर जादूगरनी की बेटी तो मेज के नीचे बैठी हुई हड्डियॉ ही चबाती रही।

राजकुमार उसको देख भी नहीं पाया। यह सोचते हुए कि वहॉ कोई कुत्ता था उसने उसको पैर से एक धक्का भी दिया जिससे उसकी एक बॉह टूट गयी।

बच्चो क्या तुमको उस जादूगरनी की बेटी के लिये अफसोस नहीं है? क्योंकि अगर वह जादूगरनी की बेटी थी भी तो इसमें उस बेचारी का क्या कुसूर? थी तो वह भी एक इन्सान ही न।

जब शाम हुई तो आदमी की बेटी ने सोचा कि अब घर चला जाये। जब वह घर जाने लगी तो उसकी अँगूठी दरवाजे के कुंडे में अटक गयी क्योंकि राजकुमार ने वहॉ टार[48] लगा दिया था।

[48] Tar – a black strong sticky substance, a byproduct of wood, petroleum or coal etc.

उस लड़की के पास इतना समय नहीं था कि वह उसमें से अपनी अँगूठी निकालती सो वह उसको वहीं छोड़ कर और खम्भे से अपना घोड़ा खोल कर तीर की तरह वापस अपने घर चली गयी।

वहाँ जा कर वह सीधी बिर्च के पेड़ के पास गयी अपने दावत वाले कपड़े उतारे और अपने पुराने कपड़े पहन कर अँगीठी के पास जा कर बैठ गयी।

कुछ देर बाद आदमी और जादूगरनी भी आ गये। जादूगरनी ने लड़की से कहा — "ओह बेचारी। तो तू अभी तक यहीं है? तू नहीं जानती कि महल में आज हमने कितना अच्छा समय गुजारा। राजकुमार मेरी बेटी को ले कर इधर उधर घूमता रहा। पर मेरी बेटी बेचारी गिर पड़ी और उससे उसकी एक बाँह टूट गयी।"

लड़की को तो सब मालूम था कि वहाँ क्या सब कैसे हुआ था पर उसने यह दिखाया जैसे उसको कुछ मालूम नहीं है और चुपचाप अँगीठी के पीछे की तरफ बैठी रही।

अगले दिन वे लोग राजा के महल में दावत के लिये फिर से बुलाये गये थे।

जादूगरनी आदमी से बोली — "तुम जल्दी से कपड़े पहन लो हम लोग आज भी दावत में बुलाये गये हैं। इस छोटी बेटी को तो तुम ले जाओ और दूसरी बेटी को मैं कुछ काम दे कर आती हूँ ताकि वह आलसी न हो जाये।"

उसने आग जलायी और उसकी राख में एक बरतन भर कर रुई के बीज[49] डाले और उस लड़की से कहा — "अगर तूने इन सबको राख में से बाहर निकाल कर बरतन में वापस नहीं डाला तो मैं तुझे जान से मार दूँगी।"

यह कह कर वह महल दावत में चली गयी। लड़की ने फिर रोना शुरू कर दिया। पर वह फिर बिर्च के पेड़ के पास गयी।

उसकी माँ ने उसको फिर वैसा ही करने के लिये कहा। सो उसने उस पेड़ की एक शाख तोड़ी और उसको पहले की तरह पहले एक तरफ से भट्टी को मारा फिर दूसरी तरफ से। इससे वह सारे बीज बरतन में आ कर अपने आप ही इकट्ठा हो गये।

फिर वह उस पेड़ के तने के एक तरफ से नहायी, दूसरी तरफ से उसने अपने आपको सुखाया और तीसरी तरफ से कपड़े पहनने के लिये कहा।

इस बार उसको पहले दिन से भी ज़्यादा सुन्दर पोशाक पहनने के लिये दी गयी और एक बहुत सुन्दर घोड़ा। बस वह उस घोड़े पर चढ़ी और राजा के महल की तरफ दौड़ गयी।

राजकुमार फिर से उसको बाहर से लेने आया और उसका घोड़ा खम्भे से बाँध कर उसको अन्दर ले गया। दावत की मेज पर राजकुमार ने उस लड़की को इज़्ज़त की जगह अपने पास ही बिठाया जैसा कि उसने पहले दिन किया था।

[49] Translated for the word "Cottonseed". In Hindi they are called "Binaulaa".

पर जादूगरनी की बेटी फिर से मेज के नीचे हड्डियॉ चूसती रही। राजकुमार ने गलती से उसको फिर पैर से धक्का दे दिया तो इस बार उसकी एक टॉग टूट गयी।

राजकुमार ने उसको अपनी मेज के नीचे आते नहीं देखा था। वह लोगों के पैरों के बीच में से घुटनों के बल चलती हुई वहॉ आ गयी थी। उसकी भी बेचारी की क्या बदकिस्मती थी।

जब शाम हुई तो वह फिर जल्दी जल्दी घर जाने के लिये तैयार हुई पर राजकुमार ने फिर से दरवाजे पर टार लगा रखा था। इस बार उस लड़की का सोने का छोटा ताज[50] उसमें फॅस गया।

पर इस बार भी उसके पास अपने उस ताज को निकालने का समय नहीं था सो वह उसको वहीं छोड़ कर अपना घोड़ा खोल कर घर दौड़ गयी।

वह सीधी बिर्च के पेड़ के पास गयी। वहॉ उसने अपने कपड़े बदले और घोड़ा छोड़ा और अपनी मॉ से कहा — "मॉ वहॉ मेरा आज छोटा ताज रह गया। दरवाजे पर टार लगा था। वह उसमें मजबूती से चिपक गया था और मैं उसे उसमें से निकाल ही नहीं पायी क्योंकि मेरे पास समय ही नहीं था।"

[50] Translated for the word "Circlet". It means a decorated precious metal band worn around head. See its picture above.

मॉ बोली — "अगर तुमने वहॉ अपने दो ताज भी छोड़ दिये होते तो अबकी बार मैं तुमको तुम्हें और बढ़िया वाला ताज देती।"

जब उसके माता पिता दावत से वापस घर आये तब वह लड़की वहीं अपनी जगह अॅगीठी के पास बैठी हुई थी।

आते ही वह जादूगरनी उससे बोली — "ओह बेचारी। यहॉ इसके पास उसके मुकाबले में देखने के लिये क्या है जो हमने महल में देखा।

राजकुमार मेरी बेटी को एक कमरे से दूसरे कमरे में ले कर घूम रहा था पर आज वह उससे फिर नीचे गिर पड़ी और उसकी एक टॉग टूट गयी।"

पिता की बेटी चुपचाप यह सब सुनती रही और चूल्हे में कुछ कुछ करती रही। रात निकल गयी और सुबह होने को थी कि जादूगरनी ने अपने पति को जगाया और कहा — "हमको आज फिर शाही दावत में बुलाया गया है। चलो उठो।"

पति उठा तो जादूगरनी ने उस दिन भी उसको अपनी बच्ची को थमाते हुए कहा — "तुम इसको ले कर चलो और मैं बड़ी वाली को कुछ काम सौंप कर आती हूॅ नहीं तो वह घर में अकेले बैठे बैठे बोर हो जायेगी।"

इस बार भी उस जादूगरनी ने पहले की तरह से ही किया। इस बार उसने एक बरतन दूध लिया और उसको राख में डाल कर कहा

— "अगर तूने यह दूध इस राख में से निकाल कर फिर से बरतन में नहीं भरा तो तुझे इसका नतीजा भुगतना पड़ेगा।"[51]

इस बार तो लड़की बहुत ही डर गयी। वह दूध राख में से कैसे निकालेगी। वह तुरन्त ही बिर्च के पेड़ के पास भागी गयी और उसकी जादुई ताकत से उसका काम हो गया। वह फिर से उस पेड़ की सहायता से तैयार हुई और महल में दावत के लिये जा पहुँची।

इस बार जब वह महल के ऑगन में पहुँची तो उसने देखा कि राजकुमार तो वहीं खड़ा उसका इन्तजार कर रहा था। पहले की तरह से उसने उस लड़की का घोड़ा बॉधा, उसको दावत वाले कमरे में ले गया और वहॉ जा कर उसने उसको अपने पास वाली कुरसी पर बिठाया।

पर जादूगरनी की बेटी तो उनकी मेज के नीचे हड्डी चूसती रही। जब वह लोगों की टॉगों के बीच में से घुटनों के बल चल रही थी तो उसकी एक ऑख में चोट लग गयी जिससे उसकी वह ऑख जाती रही।

उस आदमी की बेटी के बारे में पहले किसी ने नहीं सुना था कि वह कहॉ से आयी थी। अबकी बार भी राजकुमार ने दरवाजे की देहरी पर टार लगा रखा था इससे अब जब वह वहॉ से शाम को लौटी तो उसके दोनों जूते वहीं चिपक कर रह गये।

[51] [My Note – This seems very illogical that milk like liquid could be taken out from the ashes and poured in the pot again.]

पहले की तरह से उसके पास उन जूतों को निकालने का समय नहीं था सो वह उनको वहीं छोड़ कर चली गयी। वह वहॉ से सीधी बिर्च के पेड़ के पास गयी।

वहॉ जा कर उसने अपने सब कपड़े और गहने उतार कर एक तरफ रखे और मॉ से कहा — "मॉ आज मेरे दोनों सुनहरे जूते वहीं रह गये।"

मॉ बोली — "कोई बात नहीं बेटी। अगर तुमको और जूते चाहिये तो मैं तुमको और उससे भी अच्छे जूते दे दूँगी।"

और वह लड़की अपने चूल्हे के पास आ कर बैठ गयी। वह वहॉ आ कर बैठी ही थी कि उसके पिता और जादूगरनी भी घर आ गये। आते ही जादूगरनी ने उस लड़की का मजाक बनाना शुरू कर दिया।

"ओह बेचारी। तेरे लिये यहॉ देखने के लिये क्या है। हम लोग तो महल में बहुत अच्छी अच्छी चीज़ें देख कर आ रहे हैं। मेरी बच्ची को आज राजकुमार ने फिर से चारों तरफ घुमाया गया पर बदकिस्मती से उससे वह फिर गिर पड़ी और आज उसकी एक ऑख चली गयी। तू तो बेवकूफ है तू क्या जाने।"

इस बार लड़की ने जवाब दिया — "आप ठीक कहती हैं। मैं क्या जानूँ। मेरे लिये तो इस चूल्हे की सफाई ही काफी है।"

राजकुमार ने उस लड़की ने जितनी भी चीज़ें वहॉ छोड़ी थीं वे सभी उठा कर रखी हुई थीं। उसने तुरन्त ही उन चीज़ों के मालिक को ढूँढने का इरादा कर लिया।

इसलिये उसने चौथे दिन एक और दावत दी। सब लोग उस दावत में महल में बुलाये गये थे। वह जादूगरनी भी वहॉ जाने के लिये तैयार हुई।

जादूगरनी ने अपनी बच्ची के पैर की जगह लकड़ी की एक बीटिल बॉध दी थी और उसकी बॉह की जगह एक लकड़ी की डंडी बॉध दी थी और ऑख की खाली जगह पर एक पत्थर लगा दिया था। इस तरह वह अपनी बच्ची को ले कर महल चली।

जब वहॉ सब लोग जमा हो गये तो राजकुमार आगे बढ़ा और बोला — "जिस किसी लड़की की उँगली पर यह अँगूठी आ जायेगी जिस किसी लड़की के सिर पर यह छोटा ताज आ जायेगा और जिस किसी लड़की के पॉव में यह जूते आ जायेंगे वही मेरी दुलहिन बनेगी।"

यह सुन कर वहॉ बैठी सारी लड़कियॉ उन सबको पहन कर देखने के लिये उठीं पर उन चीज़ों को तो किसी भी लड़की के आना ही नहीं था।

राजकुमार बोला — "पर सिन्डर नौकरानी तो यहॉ है ही नहीं। जाओ और उसको ले कर आओ और उसको भी ये चीज़ें पहन कर देखने दो।"

उस लड़की को बुलाया गया। राजकुमार वे सब चीज़ें उसको देने ही वाला था कि जादूगरनी ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोली — "आप ये चीज़ें उसको न दें। वह ये सब चीज़ें राख से खराब कर देगी। इससे तो अच्छा है कि आप उनको मेरी बेटी को दे दें।"

सो राजकुमार ने वह अँगूठी उसकी बेटी को दे दी। उस जादूगरनी ने उस अँगूठी को काट पीट कर छोटा कर के अपनी बेटी को पहना दिया। यही उसने उस छोटे ताज और जूते के साथ भी किया।

वह जादूगरनी उन चीज़ों को उस सिन्डर नौकरानी को देने ही नही दे रही थी। उसने उन चीज़ों को ठीक करा कर अपनी बेटी को पहना लिया।

अब क्या हो सकता था। राजकुमार को उसकी बेटी से शादी करनी पड़ी चाहे वह उसको चाहता था या नहीं। वह उस लड़की को साथ ले कर उसके पिता के घर चला गया क्योंकि वह उस अजीब सी दुलहिन से अपने महल में शादी करने से शरमा रहा था।

कुछ दिन तक तो वह दुलहिन के पिता के घर रहा पर फिर उसको उसे अपने महल में ले कर आना ही पड़ा। सो वह अपने महल जाने के लिये तैयार हुआ।

जैसे ही वे लोग महल जाने के लिये तैयार हो रहे थे कि सिन्डर नौकरानी अपने चूल्हे के पास से वहॉ इस बहाने से आयी जैसे वह कहीं से कुछ लाने जा रही हो और गायों के घर की तरफ चली।

गायों के घर की तरफ जाते समय वह राजकुमार के कान में फुसफुसायी — "राजकुमार, मेहरबानी कर के मेरे सोने और चॉदी को मुझसे मत लूटो।" इससे राजकुमार सिन्डर नौकरानी को पहचान गया।

वह दोनों लड़कियों को महल ले गया। महल जाते समय रास्ते में एक नदी पड़ती थी। राजकुमार ने जादूगरनी की बेटी को तो नदी के उस पार फेंक दिया इससे वह उस नदी के ऊपर एक पुल बन गयी और राजकुमार सिन्डर नौकरानी को ले कर वहॉ से अपने महल चला गया।

वह जादूगरनी की बेटी उस नदी पर पुल की तरह पड़ी रही हिल भी नहीं सकी। वह बहुत दुखी थी। वहॉ कोई उसकी सहायता करने वाला भी मौजूद नहीं था।

इस दुख में वह बहुत ज़ोर से चिल्लायी — "भगवान करे कि मेरे शरीर का एक सोने का हैमलौक[52] बन जाये। शायद मेरी मॉ मेरी इस निशानी से मुझे पहचान जाये।"

[52] Hemlock is a coniferous poisonous plant. See its picture above.

जैसे ही उसने ये शब्द बोले कि उसके शरीर से एक पौधा उगा और उस पुल पर खड़ा हो गया

जैसे ही राजकुमार ने उस जादूगरनी की बेटी से छुटकारा पाया उसने सिन्डर नौकरानी को अपनी दुलहिन कह कर बुलाया। फिर वे दोनों उस लड़की की मॉ की कब्र पर उगे बिर्च के पेड़ के चारों तरफ घूमे।

वहॉ से उनको बहुत तरीके के खजाने मिले – तीन थैले भर कर सोना मिला। इतनी ही चॉदी मिली। एक बहुत बढ़िया घोड़ा मिला जिस पर बैठ कर वे महल चले गये। वे काफी दिनों तक साथ साथ रहे। फिर उस लड़की के एक बेटा हुआ।

तुरन्त ही यह सन्देश जादूगरनी को भेजा गया कि उसकी बेटी के बेटा हुआ है क्योंकि उन सबको तो यही मालूम था कि उस जादूगरनी की बेटी ही राजकुमार की पत्नी थी। सो जादूगरनी बहुत खुश थी। जादूगरनी ने सोचा कि अब मुझे अपनी बेटी और उसके बच्चे के लिये कुछ भेंट ले कर जाना चाहिये। और वह महल की तरफ चल दी।

वह भी उसी नदी के किनारे आयी जहॉ उसकी बेटी पुल बनी पड़ी थी तो उसने उस नदी के ऊपर के पुल पर एक बहुत ही सुन्दर सोने का हैमलौक का पेड़ उगा हुआ देखा।

जब उसने अपने धेवते[53] के लिये उसे काटने की कोशिश की तो उसने उसमें से एक दुखी सी आवाज सुनी — "प्यारी मॉ, मुझे मत काटो।"

जादूगरनी ने पूछा — "अरे क्या तुम यहॉ हो?"

"हॉ मॉ मैं यहॉ हूॅ। उन्होंने मुझे पुल बना कर इस नदी के आर पार डाल दिया है।"

जादूगरनी ने उस पुल को एक पल में ही कण कण कर के बिखेर दिया और जल्दी जल्दी महल की तरफ चल दी। वहॉ पहुॅच कर वह रानी के पलॅग तक गयी और अपने जादू के शब्द कह कर उस पर अपना जादू चलाने लगी।

"थूक ओ नीच थूक, मेरे चाकू की धार पर थूक। मेरे चाकू की धार को तू जादू की बना दे और मैं तुझे जंगल का रेनडियर[54] बना दूॅगी।"

रानी बोली — "आप यहॉ फिर से मुझे तंग करने के लिये आ गयीं?"

रानी ने न तो थूका और न ही कुछ और किया लेकिन फिर भी जादूगरनी ने उसको अपने जादू से रेनडियर में बदल दिया[55] और उसके बदले में अपनी बेटी को राजकुमार की पत्नी की जगह रख दिया।

---

[53] Grandson – the daughter's son

[54] Reindeer – a kind of deer – see its picture above.

[55] [My Note – if you remember she did the same thing with her mother also.]

पर अब बच्चा बेचैन हो गया क्योंकि उसको अपनी मॉ की देख भाल नहीं मिल पा रही थी। सो उसको दरबार में ले जाया गया और वहॉ उसको हर तरीके से शान्त करने की कोशिश की गयी पर उस बच्चे का तो रोना ही नहीं रुक रहा था।

राजकुमार ने पूछा — "इस राजकुमार को क्या तकलीफ है? यह तो चुप ही नहीं हो रहा है।"

सो वह एक अक्लमन्द बुढ़िया के पास उसकी राय लेने गया तो उसने राजकुमार को बताया — "बेटा, तुम्हारी अपनी पत्नी घर पर नहीं है। वह एक रेनडियर के रूप में जंगल में रह रही है। और तुम्हारी पत्नी जो अभी तुम्हारे पास रह रही है वह एक जादूगरनी की बेटी है। इस तरह एक जादूगरनी तुम्हारी सास[56] है।"

राजकुमार ने पूछा — "क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे मैं अपनी पत्नी को जंगल से वापस ला सकूँ?"

वह बुढ़िया बोली — "यह बच्चा मुझे दे दो। जब मैं कल जंगल में अपनी गाय ले कर जाऊँगी तब मैं इसको अपने साथ ले जाऊँगी। वहॉ मैं बिर्च के पेड़ की पत्तियों को हवा से हिलाऊँगी तो उनके हिलने की आवाज सुन कर शायद यह बच्चा कुछ शान्त हो जाये।"

[56] Translated for the word "Mother-in-law"

राजकुमार बोला — "ठीक है, आप इसको शान्त करने के लिये जंगल ले जाइये।" और वह उस बुढ़िया को अपने महल में ले आया।

जादूगरनी ने शक की आवाज में और राजकुमार के कामों में दखल देने के विचार से उससे पूछा — "अब तुम उस बच्चे को उस बुढ़िया के साथ जंगल में कैसे भेजोगे?"

पर राजकुमार अपने इरादे पर अड़ा रहा और उसने बुढ़िया से फिर कहा — "आप इस बच्चे को जंगल ले जायें शायद वहाँ जा कर यह शान्त हो जाये।"

वह विधवा बुढ़िया उस बच्चे को जंगल ले गयी। वहाँ वह एक दलदल के किनारे आयी तो वहाँ उसको एक रेनडियर का झुंड दिखायी दिया तो तुरन्त ही उसने गाना शुरू कर दिया।

ओ छोटी चमकीली आँखें ओ छोटी लाल खाल
आ अपने बच्चे को दूध पिला जिसको तूने पैदा किया
वह खून पीने वाली चुड़ैल वह आदमी खाने वाली बदसूरत
अब इसको दूध नहीं पिलायेगी इसकी देख भाल नहीं करेगी
वे इसको धमकी भी दे सकते हैं
और इसके साथ जबरदस्ती भी कर सकते हैं जैसा कि वे करेंगे
पर फिर भी यह उससे मुँह फिरा लेगा और उससे सिकुड़ जायेगा

यह गाना सुन कर तुरन्त ही एक रेनडियर उस बच्चे के पास आयी और वह उसको सारा दिन दूध पिलाती रही और उसकी देखभाल करती रही।

पर रात को तो उसको अपने झुंड के साथ जाना ही था सो वह उस बुढ़िया से बोली — "कल आप इस बच्चे को यहॉ फिर लाइयेगा और उसके अगले दिन भी। उसके बाद तो फिर मुझे झुंड के साथ कहीं दूर चले जाना पड़ेगा।"

सो उस विधवा बुढ़िया ने बच्चे को अपनी गोद में लिया और वहॉ से चली गयी। वह उस बच्चे को ले कर अगले दिन फिर आयी और उसने फिर वही गाना गाया —

ओ छोटी चमकीली ऑखें ओ छोटी लाल खाल
आ अपने बच्चे को दूध पिला जिसको तूने पैदा किया
वह खून पीने वाली चुड़ैल वह आदमी खाने वाली बदसूरत
अब इसको दूध नहीं पिलायेगी इसकी देख भाल नहीं करेगी

वे इसको धमकी भी दे सकते हैं
और इसके साथ जबरदस्ती भी कर सकते हैं जैसा कि वे करेंगे
पर फिर भी यह उससे मुॅह फिरा लेगा और उससे सिकुड़ जायेगा

तुरन्त ही झुंड में से वही रेनडियर फिर निकल आयी और उसने बच्चे की पहले दिन की तरह से फिर से देखभाल की। इस तरह से वह बच्चा चुप हो गया और दुनियॉ का एक बहुत ही अच्छा बच्चा हो गया।

पर राजकुमार इस सब बातों पर विचार करता रहा और उस विधवा बुढ़िया से बोला — "क्या उस रेनडियर को फिर से आदमी में बदलने का कोई तरीका नहीं है मॉ जी?"

बुढ़िया बोली — "अभी इस समय तो मैं यह नहीं जानती बेटा। पर कल तुम मेरे साथ जंगल चलो। वहाँ चल कर हम लोग एक काम कर के देखते हैं।

जब वह लड़की अपनी रेनडियर की खाल उतार कर रख देगी तब मैं उसके सिर के बालों में कंघी करूँगी उस समय तुम उसकी खाल जला देना। फिर देखते हैं कि क्या होता है।"

अगले दिन वे दोनों बच्चे को ले कर जंगल गये। वे वहाँ पहुँचे ही थे कि वह रेनडियर माँ अपने झुंड में से निकल कर आयी और पहले की तरह से उसको दूध पिलाने लगी।

उस बुढ़िया विधवा ने रेनडियर माँ से कहा — "कल तो तुम यहाँ से बहुत दूर चली जाओगी और फिर मैं तुमको देख भी नहीं पाऊँगी तो आज तुम मुझे आखिरी बार अपने सिर के बालों में कंघी कर लेने दो। यह मुझे तुम्हारी याद दिलाती रहेगी।"

"ठीक है।" कह कर उस लड़की ने अपनी रेनडियर वाली खाल उतार दी और उस बुढ़िया को वैसा ही करने दिया जैसा वह चाहती थी।

इस बीच राजकुमार ने उस लड़की की वह रेनडियर की खाल उस लड़की से छिपा कर आग में जला दी।

जब खाल जली तो उस लड़की को उसके जलने की बू आयी तो उस लड़की ने पूछा — "यह किस चीज़ की बू आ रही है?"

यह कहते हुए उस लड़की ने अपने चारों तरफ भी देखा तो उसको अपना पति दिखायी दिया। वह बोली — "ओ मुझे दुख देने वाले, तुमने मेरी खाल जला दी। तुमने ऐसा क्यों किया?"

राजकुमार बोला — "तुमको फिर से आदमी के रूप में लाने के लिये।"

"ओह अफसोस। अब मेरे पास अपने शरीर को ढकने के लिये कुछ भी नहीं है। मैं भी कितनी बदकिस्मत हूँ।"

कह कर उसने अपने आपको पहले एक अटेरन[57] में बदला, फिर उसने एक लकड़ी की बीटिल में बदला, फिर एक तकली में और फिर जितनी भी तुम शक्लें सोच सकते हो उनमें बदला।

पर राजकुमार उसकी ये सारी शक्लें नष्ट करता गया जब तक कि वह आदमी की शक्ल में नहीं आ गयी।

वह लड़की बोली — "पर अफसोस, तुम मुझे घर कैसे ले कर जाओगे क्योंकि वह जादूगरनी तो मुझे वहाँ खा ही जायेगी।"

राजकुमार बोला — "वह तुमको नहीं खायेगी तुम चलो तो।"

और वे सब बच्चे को ले कर महल की तरफ चल दिये।

अबकी बार जब जादूगरनी ने उन सबको आते देखा तो वह अपनी बेटी को ले कर वहाँ से भाग गयी और अगर वह अभी कहीं

[57] Translated for the word "Distaff". It is a frame of normally made of wood on which the spun yarn is kept to make balles later. See its picture above.

रुकी नहीं है तो समझो कि वह अभी भी भाग रही है हालॉकि वह अब बहुत बड़ी हो गयी है।

इसके बाद राजकुमार और राजकुमारी अपने बेटे के साथ खुशी खुशी रहे।

9 बाबा यागा[58]

सिन्डरैला की यह कहानी एशिया महाद्वीप के रूस देश में कही सुनी जाती है। वैसे तो बाबा यागा रूस की काफी लोक कथाओं का एक बहुत ही लोकप्रिय चरित्र है फिर भी उसकी यह सिन्डरैला की कहानी भी बहुत मशहूर है। यह कहानी **1873** में प्रकाशित की गयी थी।

एक बार की बात है कि रूस देश में एक बूढ़े पति पत्नी रहते थे। बूढ़े की पत्नी मर गयी तो उसने दूसरी शादी कर ली। उसकी पहली पत्नी से उसके एक छोटी सी बेटी थी।

उस बेटी की सौतेली मॉ उसको बिल्कुल भी नहीं चाहती थी। वह उसको बहुत मारती थी और हमेशा यही सोचती रहती कि कैसे वह उसको जान से मार दे।

एक दिन उस लड़की का पिता कहीं बाहर गया हुआ था तो उसकी सौतेली मॉ ने उससे कहा — "तुम अपनी आन्टी यानी मेरी बहिन के घर जाओ और उससे सुई धागा ले आओ मैं तुम्हारे लिये एक पोशाक बनाना चाहती हूँ।"

---

[58] Baba Yaga – a fairy tale from Russia, Asia.
By Aleksandr Afanasyev. Translated and edited by DL Ashliman.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Charles Perrault took it from the book : Russian Folk-Tales. by William Ralston Shedden Ralston. London, Smith, Elder, and Company, 1873), pp. 139-42hedden
WRS Ralston took it from – Aleksandr Afanasyev's work.

अब उसकी यह आन्टी बाबा यागा[59] थी। यह लड़की बेवकूफ नहीं थी सो वह पहले अपनी असली आन्टी को पास गयी और बोली — "गुड मौर्निंग आन्टी।"

"गुड मौर्निंग बेटी। कहो कैसे आना हुआ।"

"मॉ ने मुझे अपनी बहिन के पास सुई धागा लाने के लिये भेजा है ताकि वह मेरे लिये एक पोशाक बना दे।"

तब उसकी आन्टी ने उसे बताया कि उसकी यह आन्टी बाबा यागा है और वहॉ जा कर उसको क्या करना चाहिये।

उसने कहा — "बेटी, उसके घर के पास में एक बिर्च का पेड़[60] खड़ा है। वह तुमको तुम्हारी ऑख पर मारेगा इसलिये तुम उसके तने के चारों तरफ एक रिबन बॉध देना।

इसके अलावा उसके घर के दरवाजे चूँ चूँ करेंगे और अपने आप ही ज़ोर ज़ोर से खुलेंगे और बन्द होंगे। इसके लिये तुम उनके कब्जों[61] में थोड़ा सा तेल डाल देना तो वे चुप रहेंगे।

---

[59] Baba Yaga – a main character of many Russian folktales – is a supernatural being (or one of a trio of sisters of the same name) who appears as a deformed and/or ferocious-looking woman sitting in mortal and carrying a broom in one hand and pestle in other hand. Her house stands on a chiken's legs and has a Birch tree near it.

[60] Birch tree is a long slender tree with a peeling kind of skin.

[61] Translated for the word "Hinge". Hinge is piece of iron or brass which is fixed between the door and the wall so that they can stay together and the door can open and shut easily. See its picture above.

वहॉ कुछ कुत्ते होंगे जो तुमको फाड़ कर रख देंगे। तुम उनको यह डबल रोटी फेंक देना तो वे तुमको खायेंगे नहीं।

वहॉ एक बिल्ली है जो तुम्हारी ऑख निकाल लेगी उसको तुम यह सूअर का मॉस खिला देना। इससे वह भी चुप रहेगी।"

कह कर उसकी आन्टी ने उसको एक रिबन, थोड़ा सा तेल, कुछ डबल रोटी और सूअर का मॉस दे दिया। लड़की ने ये सब चीज़ें लीं और बाबा यागा के घर की तरफ चल दी।

चलते चलते वह उसके घर आ गयी। उसने देखा कि वहॉ एक मकान खड़ा हुआ है और उसमें पतली पतली टॉगों वाली बाबा यागा बैठी बैठी कुछ बुन रही है।

लड़की उस मकान के अन्दर आयी और बोली — "गुड मौर्निंग, आन्टी।"

"गुड मौर्निंग बेटी। आओ कैसे आना हुआ?"

लड़की बोली — "मॉ ने मुझे आपसे सुई धागा लाने के लिये भेजा है ताकि वह मेरी एक पोशाक सिल सकें।"

बाबा यागा बोली — "ठीक है। तुम तब तक यहॉ बैठो और यह बुनो मैं तुम्हारे लिये सुई धागा लाती हूॅ।" लड़की कपड़ा बुनने के लिये खड्डी[62] के पीछे बैठ गयी और कपड़ा बुनने लगी।

[62] Translated for the word "Loom". Loom is used to weave cloth. There are many kinds of looms, one of a kind is shown here in a picture above.

बाबा यागा उस लड़की को वहीं छोड़ कर बाहर चली गयी और अपनी नौकरानी से बोली — "ज़रा जा कर नहाने का पानी गरम कर दो और मेरी भानजी को नहला दो। हॉ उसका ध्यान रखना और उस पर कड़ी नजर रखना वह कहीं भाग न जाये। मैं उसका नाश्ता करना चाहती हूँ।"

पर लड़की उस खड्डी के पीछे इतनी डरी हुई बैठी थी कि वह ज़िन्दा कम और मरी हुई ज़्यादा लग रही थी।

उसने डरते हुए बाबा यागा की नौकरानी से कहा — "देखना आग जलाने वाली लकड़ी को थोड़ा गीला कर देना ताकि वे कम जलें। और हॉ देखो नहाने का पानी भी चलनी में भर कर लाना ताकि उसको लाने में तुमको देर लगे।"

और इसके बदले में उसने उस नौकरानी को एक रूमाल भेंट में दिया।

बाबा यागा ने कुछ देर इन्तजार किया और फिर खिड़की पर आ कर अपनी भानजी से पूछा — "बेटी, क्या तुम अभी भी बुन रही हो? क्या तुम अभी भी बुन रही हो, बेटी?"

लड़की ने जवाब दिया — "हॉ आन्टी, मैं अभी भी बुन रही हूँ।"

बाबा यागा यह सुन कर चली गयी। लड़की ने बिल्ली को सूअर के मॉस का एक टुकड़ा दिया और उससे पूछा — "क्या यहॉ से बचने का कोई तरीका नहीं है?"

बिल्ली बोली — "है न। लो यह कंघी लो और यह एक तौलिया लो और इनको ले कर यहॉ से चली जाओ। बाबा यागा तुम्हारा पीछा करेगी पर तुम अपना कान जमीन पर जरूर लगा लेना। इससे तुमको उसके आने की आहट सुनायी देगी।

जब तुम यह देखो कि वह तुम्हारे बहुत पास आ गयी है तो पहले अपने पीछे यह तौलिया फेंक देना। जमीन पर गिरते ही वहॉ एक चौड़ी और बहुत चौड़ी नदी बन जायेगी।

वैसे तो बाबा यागा उस नदी को ही पार नहीं कर पायेगी, पर अगर उसने वह नदी को पार कर भी ली और तुमको पकड़ने की कोशिश की तो तुम फिर से जमीन पर कान लगा लेना और अगर तुम फिर से देखो कि वह तुम्हारे बहुत पास आ गयी है तो यह कंघी अपने पीछे फेंक देना।

इस कंघी के गिरते ही वहॉ एक घना और बहुत घना जंगल पैदा हो जायेगा। उस जंगल को वह पार नहीं कर पायेगी और उसको कोई और रास्ता लेना ही पड़ेगा तब तक तुम वहॉ से भाग जाना।"

लड़की ने बिल्ली से वह कंघी और तौलिया लिया, उसको धन्यवाद दिया और वहॉ से भाग ली।

बाबा यागा के कुत्तों ने उसका पीछा करने की कोशिश की पर उसने उनके लिये डबल रोटी फेंक दी और उन्होंने उसको जाने दिया।

जब वह उसके घर के दरवाजे से बाहर निकलने लगी तो वह दरवाजा खुल भिड़ कर शोर मचाता सो उसने उसके कब्जों में तेल डाल दिया जिससे वह खुलने भिड़ने पर शोर नहीं मचायें और इस तरह उसने शोर नहीं मचाया। इस तरह वह लड़की वहॉ से भी चुपचाप निकल गयी।

रास्ते में बिर्च के पेड़ ने उसकी ऑख निकाल ली होती पर वहॉ पहुॅचते ही उसने उसके चारों तरफ एक रिबन बॉध दिया तो उसने भी उसको वहॉ से गुजर जाने दिया।

लड़की के वहॉ से जाने के बाद बिल्ली बाबा यागा की खड्डी पर बुनने के लिये बैठ गयी। वहॉ बैठ कर उसने बाबा यागा की बुनाई करने की बजाय उसकी सारी बुनाई खराब कर दी।

थोड़ी देर बाद बाबा यागा फिर खिड़की पर आयी और पूछा — "बेटी, क्या तुम अभी बुन रही हो?"

बिल्ली ने कुछ आवाज बदल कर जवाब दिया — "हॉ मैं अभी बुन रही हूॅ आन्टी, मैं अभी बुन रही हूॅ।"

बाबा यागा को वह आवाज कुछ अलग सी लगी तो वह अपने मकान के अन्दर दौड़ी। उसने देखा कि वह लड़की तो वहॉ से जा चुकी है और उसकी बिल्ली उसकी जगह वहॉ पर बैठी है।

अपनी बिल्ली को वहॉ खड्डी पर बैठे देख कर वह गुस्से से भर गयी और उसने बिल्ली को गाली देना और पीटना शुरू कर

दिया कि उसने लड़की की ऑखें क्यों नहीं निकालीं। उसने उसको वहॉ से जाने ही क्यों दिया।

बिल्ली बोली — "मैंने तुम्हारी बहुत सेवा की है पर तुमने मुझे कभी भी हड्डी से ज़्यादा कुछ नहीं दिया पर उसने मुझे सूअर का मॉस दिया। मैं उसकी ऑखें क्यों निकालती?"

यह सुन कर बाबा यागा कुत्तों पर, दरवाजे पर, बिर्च के पेड़ पर और फिर नौकरानी पर उन सबको गलियॉ देने के लिये दौड़ी कि उन्होंने अपना अपना काम क्यों नहीं किया।

तो कुत्ते बोले — "हमने तुम्हारी इतनी सेवा की पर तुमने हमको जली रोटी के सिवा कुछ नहीं दिया पर देखो उसने हमको कितनी मुलायम डबल रोटी दी हम उसको फाड़ खा नहीं सकते थे।"

दरवाजा बोला — "हमने तुम्हारी इतनी सेवा की पर तुमने हमारे कब्जों में कभी पानी भी नहीं दिया पर देखो उसने हमारे कब्जों में तेल लगाया है वह कितनी अच्छी थी। हम चूँ चूँ नहीं कर सकते थे।"

बिर्च का पेड़ बोला — "मैंने तुम्हारी इतनी सेवा की पर तुमने मेरे चारों तरफ एक धागा भी नहीं बॉधा पर देखो उसने मेरे चारों तरफ कितना सुन्दर रिबन बॉधा है। मैं उसकी ऑख कैसे निकाल लेता?"

नौकरानी बोली — "मैंने आपकी इतनी सेवा की पर आपने मुझे फटे कपड़ों के सिवा कुछ नहीं दिया पर देखो उसने मुझ कितना सुन्दर रूमाल दिया है। मैं क्या करती?"

यह सुन कर वह पतली टॉगों वाली बाबा यागा अपनी ओखली में बैठी और उस लड़की को पकड़ने के लिये अपना मूसल ले कर उड़ ली। साथ में वह अपनी झाड़ू से अपनी उड़ान का रास्ता भी साफ करती जाती थी।

लड़की ने अपना कान जमीन से लगा दिया और जब उसने सुना कि बाबा यागा उसका पीछा कर रही थी और उसके पास तक आ गयी थी तो उसने बिल्ली का दिया हुआ तौलिया अपने पीछे फेंक दिया।

वह तौलिया तो जमीन पर गिरते ही एक बहुत ही चौड़ी नदी बन गया। नदी तक आने पर जब बाबा यागा ने देखा कि वह वह नदी पार नहीं कर सकती तो गुस्से से उसने अपने दॉत किटकिटाये और अपने बैलों को लाने के लिये अपने घर चली गयी।

घर से बैलों को ले कर वह नदी के पास तक आयी। बैलों ने उस नदी का एक एक बूँद पानी पी लिया जिससे वह नदी काफी सूख गयी और बाबा यागा ने उस लड़की को पकड़ने के लिये अपनी यात्रा फिर से शुरू की।

पर लड़की ने फिर से जमीन से अपने कान लगा कर सुना तो उसको फिर से उसके आने की आहट सुनायी दी। जब वह आहट

काफी पास आ गयी तो अबकी बार उसने अपने पीछे बिल्ली के दी हुई कंघी फेंक दी। कंघी के जमीन पर पड़ते ही वहॉ एक घना और बहुत ही घना जंगल पैदा हो गया।

वह जंगल इतना घना था कि बाबा यागा उसको देख कर फिर से गुस्से से दॉत कटकटाने लगी। पर बहुत कोशिशों के बाद भी वह उस जंगल को पार नहीं कर सकी इसलिये उसको घर वापस चले जाना पड़ा।

इस समय तक लड़की का पिता घर वापस आ गया था। उसने अपनी पत्नी से पूछा — "मेरी बिटिया कहॉ है?"

उसकी पत्नी बोली — "वह अपनी मौसी के घर गयी है।"

तभी वह लड़की भी हॉफती हॉफती वहॉ आ पहुॅची।

उसके पिता ने पूछा — "तू कहॉ थी?"

लड़की बोली — "ओह पिता जी, मॉ ने मुझे सुई धागा लाने के लिये मौसी के घर भेजा था ताकि वह मेरे लिये एक पोशाक बना सके। पर वह मौसी तो बाबा यागा थी और वह मुझे खाना चाहती थी।"

"तो फिर तू उससे बची कैसे?"

"मैं उससे ऐसे बची।" कह कर उसने अपने पिता को सारा हाल बता दिया।

जैसे ही पिता ने अपनी बेटी से उसके बाबा यागा से बचने का हाल सुना तो वह अपनी पत्नी पर बहुत गुस्सा हुआ और उसने उसको गोली मार दी।

वह और उसकी बेटी दोनों फिर आराम से रहे और सब कुछ उनके साथ ठीक रहा।

10 अक्लमन्द वासिलीसा और बाबा यागा[63]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी भी एशिया के रूस देश की कहानियों से ली गयी है।

एक बार एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया पत्नी अपनी बेटी वासिलीसा के साथ रहते थे। एक बार वह बुढ़िया बहुत बीमार पड़ी तो एक दिन उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "बेटी मैं बहुत जल्दी ही मरने वाली हूँ इसलिये जो मैं कहती हूँ तू उसको ध्यान से सुन।"

इसके बाद उसने अपनी चादर के नीचे से एक छोटी सी गुड़िया निकाली और वासिलीसा को देते हुए कहा — "देख तू इस गुड़िया को रख और इसकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करना और किसी और को इसके बारे में कुछ मत बताना।

जब तुझे किसी चीज़ की जरूरत पड़े तो इस गुड़िया को कुछ खाना देना और उससे सलाह मॉगना। यह तुझे बतायेगी कि तुझे क्या करना है।"

इसके बाद मॉ ने अपनी बेटी को प्यार से चूमा और ऑखें बन्द कर ली। उसने अपनी आखिरी सॉस ले ली थी।

[63] Vasilissa the Wise and Baba Yaga – a folktale from Russia, Asia. From the Book "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

काफी समय तक तो बूढ़े ने उसका दुख मनाया पर फिर दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी एक विधवा थी और उसकी अपनी दो बेटियॉ थीं। उसकी दोनों बेटियॉ बहुत ही बुरी थीं। उनको खुश करना बहुत मुश्किल काम था।

वासिलीसा इतनी सुन्दर थी कि उसकी दोनों सौतेली बहिनें उससे बहुत जलती थीं। वे और उनकी मॉ तीनों उसको हमेशा ही सताती रहती थीं। वे उससे सुबह से शाम तक काम कराती रहती थीं।

वह हमेशा यह चाहती थीं कि हवा से उसका चेहरा खराब हो जाये या फिर धूप में सख्त हो जाये या फिर बारिश में काला पड़ जाये।

पर फिर भी वासिलीसा उन सबके ये ताने चुपचाप सहती रहती और अपना सारा काम समय पर पूरा कर लेती। उसकी सौतेली बहिनें क्योंकि कोई काम नहीं करती थीं वे बहुत मोटी और बदसूरत होती जा रही थीं जब कि वह दिन ब दिन ही नहीं बल्कि हर घंटे और सुन्दर होती जा रही थी।

उसकी गुड़िया उसकी जब तब बहुत सहायता करती। रोज सुबह वासिलीसा गाय का दूध दुहती और उस गुड़िया को देती और कहती —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

और रात को जब सब सो जाते तो वह अपना दरवाजा बन्द कर लेती और गुड़िया को अपनी बॉहों में झुलाती। वह उसको अपने खाने में से बचा हुआ खाना खिलाती और फिर गाती —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

फिर वह उस गुड़िया से कहती कि वह कितनी दुखी थी। कैसे उसकी सौतेली मॉ और सौतेली बहिनें उसको हमेशा डॉटती रहतीं। वह गुड़िया पहले तो खाती पीती फिर उसको तसल्ली देती और उसका रोज का काम भी कर देती।

जब वासिलीसा छाया में बैठ कर अपने बालों में फूल गूँधती तो वह गुड़िया उसकी फूलों की क्यारियॉ साफ कर देती। उसकी रसोईघर में आग जला देती। उसके घर के फर्श झाड़ बुहार देती। उसका नाश्ता बना देती। और वह भी सब पलक झपकते ही।

यही नहीं बल्कि वह गुड़िया उसको कुछ ऐसी पत्तियॉ भी देती जिससे उसकी खाल सूरज की धूप, हवा और बारिश से बची रहे। इससे वह और ज्यादा सुन्दर होती जा रही थी।

एक दिन पतझड़ के मौसम में वासिलीसा का पिता बाजार गया। उसको वहॉ कई दिन तक रहना था।

उस रात जब अँधेरा हो गया तो बहुत जोर की बारिश पड़ने लगी। बारिश की बूंदें खिड़कियों पर जोर जोर से पड़ रही थी।

हवा भी बहुत तेज़ बह रही थी। वह गुफाओं में जा कर बहुत तेज़ आवाज कर रही थी।

सौतेली माँ ने तीनों लड़कियों को एक एक काम सौंपा। सबसे बड़ी वाली लड़की को उसने कढ़ाई का काम दिया। दूसरी बेटी को उसने मोजा बुनने का काम दिया और वासिलीसा को उसने सूत कातने का काम दिया।

जहाँ वे तीनों लड़कियाँ वहाँ बैठी बैठी अपना काम कर रही थीं तो उनकी माँ ने कोने में केवल एक बिर्च के पेड़ की शाख जलती छोड़ दी और सोने चली गयी। कुछ देर तक तो वह शाख जली पर फिर अचानक बुझ गयी।

दोनों सौतेली बहिनें चिल्लायीं — "अब हम क्या करें। चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा है और हमको अपना काम खत्म करना है। किसी को तो रोशनी लानी ही पड़ेगी।"

सबसे बड़ी बेटी बोली — "मैं तो बाबा यागा के घर नहीं जा रही।"

दूसरी बेटी बोली — "मैं भी उसके घर नहीं जा रही।"

तो दोनों एक साथ बोलीं — "तब तो वासिलीसा को ही उसके घर जाना पड़ेगा और उसके घर से रोशनी लानी पड़ेगी।" ऐसा कह कर उन दोनों ने अपनी सौतेली बहिन को धक्का दे कर घर से बाहर निकाल दिया।

बेचारी वासिलीसा पहले तो जानवरों के बाड़े में गयी वहाँ उसने कुछ खाने के टुकड़े अपनी गुड़िया को खिलाये और बोली —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

और फिर उसने उसको बताया कि उसकी सौतेली बहिनों ने उसको बाबा यागा के घर जाकर रोशनी लाने को कहा है। वह चुड़ैल जादूगरनी तो उसको यकीनन खा ही जायेगी।

उस छोटी गुड़िया ने अपना खाना शान्ति से चुपचाप खाया। खाना खाने के बाद उसकी दोनों आँखें दो चमकीली जलती हुई मोमबत्ती की तरह से चमकने लगीं।

वह बोली — "डरो नहीं वासिलीसा। तुम मुझे अपने पास ही रखो और बेधड़क हो कर तुम बाबा यागा के पास जाओ। बाबा यागा तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती।"

वासिलीसा ने गुड़िया को अपनी जेब में रखा और अँधेरे जंगल की तरफ चल दी। वहाँ उसके चारों तरफ के पेड़ ऊँचे ऊँचे खड़े हो गये। अब आसमान में न तो चाँद और न ही तारे दिखायी दे रहे थे।

अचानक पता नहीं कहाँ से एक घुड़सवार वहाँ से गुजरा। उस घुड़सवार का मुँह बिल्कुल सफेद था। उसका शाल[64] भी सफेद था। उसका घोड़ा भी सफेद था और

[64] Translated for the word "Cloak". A fashionable rich or plain cloth worn over the dress to cover or to keep oneself warm. It may be short up to the waist or long up to the ankle. See its picture above.

उसकी लगाम भी सफेद थी जो अँधेरे जंगल में उजली उजली चमक रही थी।

जैसे ही वह वहाँ से वह गुजरा तो सुबह की रोशनी पेड़ों से छन छन कर आने लगी और वासिलीसा उस रोशनी में चलती चली गयी।

तभी एक दूसरा घुड़सवार अपना घोड़ा दौड़ाता आया। उसका चेहरा लाल था। उसका शाल भी लाल था। उसका घोड़ा भी लाल था और उसके घोड़े की लाल लगाम उस सुबह की रोशनी में लाली फैला रही थी।

जैसे ही वह लाल चेहरे वाला घुड़सवार वहाँ से गुजरा तो लाल लाल सूरज निकल आया और उसकी गरम गरम किरनें वासिलीसा के चेहरे को छूने लगीं। वे किरनें उसके बालों पर पड़ी ओस की बूँदों को सुखाने लगीं।

वासिलीसा बिना आराम किये जंगल में सारा दिन चलती रही। शाम तक चलते चलते वह जंगल में एक खुली जगह आ गयी।

उस खुली जगह के बीच में मुर्गी के पंजों पर लकड़ी की एक झोंपड़ी खड़ी थी। उस झोंपड़ी के चारों तरफ एक चहारदीवारी लगी हुई थी जिस पर आदमियों की खोपड़ियाँ सजी हुई थीं।

उस चहारदीवारी में एक दरवाजा था जिसके डंडे एक मरे हुए आदमी की टाँगों के थे। उस दरवाजे के कुंडे मरे हुए आदमी की

बॉहों के थे और उस दरवाजे के ताले मरे हुए आदमी के दॉत के थे।

इस सबको देख कर वासिलीसा तो वहॉ डर के मारे बिल्कुल ही बिना हिले डुले जमीन से चिपकी खड़ी रह गयी।

तभी एक तीसरा घुड़सवार वहॉ अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। उसका चेहरा काला था। उसका शाल भी काला था। उसका घोड़ा भी काला था और उसके घोड़े की लगाम भी काली ही थी।

जैसे ही वह वहॉ आया तो वह अपने घोड़े से उतरा और उन खोपड़ियों की अँधेरी ऑखें जो उस झोंपड़ी की चहारदीवारी पर लगी थीं आग की तरह चमकने लगीं। इससे वहॉ खुली जगह में दिन की तरह रोशनी हो गयी।

यह देख कर वासिलीसा कॉपने लगी। इनको देख कर वह इतनी डर गयी कि हिल भी नहीं पा रही थी। पर इससे ज़्यादा बुरा हाल तो उसका अभी होने वाला था।

जल्दी ही उसने महसूस किया कि हवा कॉप रही थी और उसके पैरों के नीचे जमीन हिल रही थी। बाबा यागा जंगल में से अपनी ओखली में बैठी, उसको अपने मूसल से उड़ाती और झाड़ू से अपने पीछे के निशान मिटाती उड़ती चली आ रही थी।

झोंपड़ी के दरवाजे पर आ कर वह रुकी, और वहॉ उसने अपनी नुकीली नाक उस लड़की की तरफ कर के हवा में कुछ सूँघा और बोली — "फू फ़ी फ़ो फुम। मुझे एक रूसी के खून की खुशबू आ रही है। तुम कौन हो?"

लड़की बोली — "मैं वासिलीसा हूँ। मेरी बहिनों ने मुझे यहॉ रोशनी लाने के लिये भेजा है।"

वह जादूगरनी चिल्लायी — "आहा वासिलीसा। मैं तुम्हारी सौतेली मॉ को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। तो तुमको रोशनी चाहिये। इसके लिये तुमको यहॉ ठहर कर मेरे लिये पहले कुछ काम करना पड़ेगा। उसके बाद हम देखेंगे।" फिर वह अपने दरवाजे की तरफ मुड़ी और बोली —

ओ मेरे मजबूत कुण्डे खुल जा, खुल जा मेरे चौड़े दरवाजे खुल जा

दरवाजा तुरन्त ही खुल गया। दरवाजा खुलते ही बाबा यागा अपनी ओखली में बैठी अन्दर चली गयी। वासिलीसा उसके पीछे पीछे थी। जैसे ही दोनों उस दरवाजे के अन्दर घुसीं तो वह दरवाजा फिर से वैसे ही कस कर बन्द हो गया।

अन्दर पहुँचते ही उस जादूगरनी का बागीचा था जिसमें एक बिर्च का पेड़[65] खड़ा हुआ था। वह बिर्च का पेड़ वासिलीसा की

[65] Birch tree is normally a tall tree

ऑखें निकालने के लिये नीचे की तरफ झुका तो जादूगरनी चिल्लायी — "उसको छोड़ दे। मैं बाबा यागा उसको यहॉ ले कर आयी हूँ।"

पेड़ ने उसको छोड़ दिया। वे आगे चले तो झोंपड़ी के दरवाजे पर एक बहुत ही भयानक कुत्ता लेटा हुआ था वह उस लड़की को देख कर उसको काटने दौड़ा।

जादूगरनी वहॉ भी चिल्लायी — "ओ कुत्ते, उसको छोड़ दे। मैं बाबा यागा उसको यहॉ लेकर आयी हूँ।"

यह सुन कर कुत्ते ने भी उसको छोड़ दिया। दोनों घर में अन्दर घुसीं तो अन्दर एक काली बिल्ली वासिलीसा को खरोंचने के लिये दौड़ी।

जादूगरनी उससे भी चिल्ला कर बोली — "छोड़ दे उसको, ओ बिल्ली। मैं बाबा यागा उसको ले कर यहॉ आयी हूँ।"

फिर वह वासिलीसा से बोली — "तुम देख रही हो न वासिलीसा? तुम मुझसे ऐसे ही नहीं बच सकतीं। मेरी बिल्ली तुमको खरोंच लेगी। मेरा कुत्ता तुमको काट लेगा। मेरा बिर्च का पेड़ तुम्हारी ऑखें निकाल लेगा और मेरा दरवाजा तो तुमको अन्दर आने ही नहीं देगा।"

अन्दर जा कर बाबा यागा एक पत्थर के बने चूल्हे पर जा कर लेट गयी और अपने रसोईघर से चिल्ला कर बोली — "आजा लड़की मेरा खाना ले आ।"

तभी एक काली ऑख वाली नौकरानी वहॉ खाना ले कर आयी। उसका वह खाना दस लोगों के खाने के बराबर था —

एक बालटी भर कर गाय का मॉस था
दस लोटे भर कर दूध था एक भुना हुआ सूअर था
बीस मुर्गे थे और चालीस बतखें थीं
दो बैल के मॉस की पाई थीं और चीज़ थी
साइडर और घर की बनी शराब थी
एक बैरल बीयर थी और एक बालटी क्वास थी

बाबा यागा ने वह सब खाना बड़े लालची ढंग से खाया और वासिलीसा के खाने के लिये तो केवल हड्डियॉ ही बचीं। खाना खा कर जादूगरनी सोने चल दी।

चलते चलते वह वासिलीसा से बोली — "देखो यह अनाज का थैला ले जाओ और इसमें से अनाज के दाने बीन लो। इसके भूसे में अनाज का कोई दाना नहीं रहना चाहिये। इस काम को तुम तब तक खत्म कर लो जब तक मैं सो कर उठती हूॅ नहीं तो मैं तुमको खा जाऊॅगी।"

कह कर उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और खर्राटे मारने लगी। उसके खर्राटों की आवाज से आस पास की सब लकड़ियॉ भी हिलने लगीं।

बेचारी वासिलीसा ने डबल रोटी का एक टुकड़ा उठा कर गुड़िया के सामने रखा और उसकी सलाह मॉगी।

गुड़िया ने चुपचाप वह डबल रोटी का टुकड़ा खाया और बोली — "तुम डरो मत। तुम अपनी प्रार्थना कहो और सोने जाओ। सुबह शाम से ज़्यादा अक्लमन्द होती है।"

वासिलीसा यह सुन कर सोने चली गयी। जैसे ही वह लड़की सो गयी उस छोटी गुड़िया ने अपनी साफ आवाज में पुकारा —

कबूतरों चिड़ियों चैटफिन्च काइट[66]
आज की रात तुम्हारे लिये बहुत काम है
ओ मेरी पंखों वाली दोस्तों तुम्हारे काम पर
सुन्दर वासिलीसा की ज़िन्दगी निर्भर है।

गुड़िया की पुकार सुन कर बहुत सारी चिड़ियें झुंड में उड़ती हुई वहाँ आ गयीं – इतनी कि आँखें भी नहीं देख सकतीं और जबान भी नहीं बता सकती।

उन सबने उस भूसे में से अनाज के सारे दाने बीन दिये। फिर उन्होंने उन दानों को थैले में भर दिया और भूसे को डिब्बे में डाल दिया। इस तरह रात खत्म होने से पहले पहले सारा काम खत्म।

जैसे ही वे चिड़ियाँ अपना काम खत्म कर के चुकीं तो एक बार फिर से वह सफेद घोड़े वाला घुड़सवार आ कर गुजर गया और एक नयी सुबह हो गयी।

जब बाबा यागा सुबह सो कर उठी तो उसको तो विश्वास ही नहीं हुआ कि उसका सारा काम खत्म हो चुका था।

[66] They all are different kinds of birds

बाबा यागा फिर बोली — "देखो मैं बाहर जा रही हूँ। तुम वह सफेद लोभिया[67] और पोस्त के बीजों[68] का थैला उठा लो और उनको अलग अलग कर लो। अगर यह काम मेरे लौटने तक नहीं हुआ तो मैं तुमको अपने शाम के खाने में भून कर खा जाऊँगी।"

यह कह कर उसने दरवाजा खोला और ज़ोर से सीटी बजायी। उसकी ओखली और मूसल तुरन्त ही वहाँ आ गये। वह अपनी ओखली के अन्दर बैठी और पल भर में ही अपने घर के कम्पाउंड में से बाहर निकल कर पेड़ों के ऊपर उड़ने लगी।

उसके जाने के बाद वह लाल रंग वाला घुड़सवार वहाँ आया और लाल रंग का सूरज आसमान में निकल आया।

वासिलीसा ने फिर डबल रोटी का एक टुकड़ा उठा कर गुड़िया को खिलाया और उससे सहायता माँगी। जल्दी ही गुड़िया की साफ आवाज ने कहा —

मेरे पास आओ ओ घर और मैदान के चूहो
ये बीज चुन दो वरना यह बेचारी मर जायेगी

यह सुनते ही बहुत सारे चूहे दौड़ते हुए वहाँ आ गये – इतने सारे कि उन सबको न तो आँखें देख सकती थीं और न जबान बता

[67] Translated for the words "Black-eyed Peas" – see its picture above.
[68] Translated for the words "Poppy Seeds".

सकती थी। उन्होंने दिन खत्म होने से पहले पहले ही अपना सारा काम खत्म कर दिया।

जब वे अपना काम खत्म कर रहे थे तभी काले रंग का घुड़सवार वहॉ से गुजरा और रात होने लगी। चहारदीवारी पर लगी हुई खोपड़ियों की ऑखें आग की तरह से जगमगाने लगीं पेड़ सनसना कर हिलने लगे और उनकी पत्तियॉ कॉपने लगीं।

बाबा यागा वापस आ रही थी। उसने पूछा — "क्या तुमने वह सब कर लिया जो मैं तुमसे कह कर गयी थी?"

"जी दादी मॉ। सब कर लिया।"

उसका सारा काम खत्म देख कर बाबा यागा तो बहुत गुस्सा हो गयी क्योंकि इसकी उसको बिल्कुल भी आशा नहीं थी पर वह कुछ कर भी नहीं सकती थी।

वह बोली — "ठीक है तुम जा कर सो जाओ अब मैं खाना खाऊॅगी।"

वासिलीसा ऑगीठी के पीछे फटे कपड़ों पर लेट गयी। वह वहॉ लेटी लेटी बाबा यागा और काली ऑखों वाली नौकरानी की बातें सुनती रही।

बाबा यागा उससे कह रही थी — "ऑगीठी जलाओ और उसको खूब गरम कर के खूब लाल कर लो। जब मैं सो कर उठूॅगी तो उस लड़की को अपनी ऑगीठी में भूनूॅगी।"

उसके बाद वह अँगीठी पर जा कर लेट गयी। उसने अपनी ठोड़ी एक आलमारी पर रख ली, अपनी नाक एक बैन्च पर रख दी और अपने आपको अपने पैर से ढक लिया। उसने इतनी ज़ोर से खर्राटे मारने शुरू कर दिये कि सारा जंगल हिलने लगा।

वासिलीसा यह सब सुन कर रोने लगी। उसने अपनी छोटी गुड़िया अपनी जेब से निकाली और उसके सामने डबल रोटी का एक टुकड़ा रख कर बोली —

छोटी गुड़िया छोटी गुड़िया सुन मेरी प्यारी, मैं अपनी सारी मुश्किलें तुझे सुनाती हूँ

गुड़िया ने उसको बताया कि उसको क्या करना है।

वासिलीसा रसोईघर में गयी और उस काली आँख वाली नौकरानी के सामने सिर झुकाया और बोली — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। जब तुम अँगीठी जलाओ तो लकड़ी पर थोड़ा सा पानी डाल देना ताकि वे ठीक से न जलें। इस काम के लिये तुम मेरा यह सिर का स्कार्फ रख लो।"

नौकरानी बोली — "ठीक है वासिलीसा। मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। आज से पहले मुझे किसी ने कभी कोई भेंट नहीं दी है। मैं जा कर उस जादूगरनी के पैर सहलाती हूँ ताकि वह और देर तक सोये। इतनी देर में तुम यहाँ से जितनी जल्दी हो सके भाग जाना।"

वासिलीसा ने पूछा — "पर क्या वे तीनों घुड़सवार मुझे पकड़ कर यहॉ वापस नहीं ले आयेंगे?"

नौकरानी बोली — "ओह नहीं। देखो न वह जो सफेद रंग का घुड़सवार है वह सुबह है। वह जो लाल रंग का घुड़सवार है वह उगता हुआ सूरज है और वह जो काले रंग का घुड़सवार है वह रात है। वे तुमको कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।"

इस बात से सन्तुष्ट होकर वासिलीसा झोंपड़ी से भाग ली पर वह बड़ी काली बिल्ली उसके ऊपर तुरन्त ही कूदी। वह उसके चेहरे को खरोंच देती कि तभी उसने उस बिल्ली की तरफ एक पाई फेंक दी। बिल्ली पाई खाने में लग गयी और वासिलीसा सीढ़ियॉ उतरने लगी।

नीचे उतरी तो बाबा यागा का कुत्ता बाहर निकला्। वह उसे खा जाता अगर वह उसको हड्डी न फेंक देती तो।

अब वह घर से बाहर जाने वाले रास्ते पर भाग रही थी कि बिर्च के पेड़ ने अपनी शाखाओं से उसके चेहरे को मारने की कोशिश की पर तुरन्त ही उसने उन को अपने बालों के एक रिबन से बॉध दिया और पेड़ ने उसको बाहर जाने दिया।

घर के बाहर जाने वाला दरवाजा बार बार खुलता और बन्द हो रहा था तो उसने उसके कब्जों[69] में सुबह की ओस लगा दी। दरवाजा खुल गया और वह उसके बाहर निकल गयी।

[69] Translated for the word "Hinges". See its picture above.

फिर उसको अपनी बहिनों के लिये रोशनी की याद आयी तो उसने चहारदीवारी पर से एक खोपड़ी उठायी, उसको एक डंडे पर लगाया और अपने घर की तरफ भाग ली।

उस खोपड़ी की ऑखों से निकलती हुई चमकती हुई रोशनी उसको उसके घर का रास्ता दिखा रही थी।

इस बीच बाबा यागा जाग गयी। उसने देखा कि लड़की तो भाग गयी। वह अपनी काली ऑख वाली नौकरानी पर चिल्लायी — "तुमने उसको जाने ही क्यों दिया?"

नौकरानी बोली — "क्योंकि उसने मुझे अपना स्कार्फ दिया। मैंने तुम्हारी इतने दिनों सेवा की है पर तुमने मुझे सिवाय बुरा भला कहने के और कुछ नहीं दिया।"

फिर वह अपनी बड़ी काली बिल्ली की तरफ घूमी और उस पर चिल्लायी — "तुमने उसको क्यों जाने दिया?"

बिल्ली बोली — "उसने मुझे पाई दी। मैं तुम्हारी इतने साल सेवा करती रही पर तुमने तो मुझे कभी डबल रोटी के ऊपर का हिस्सा तक नहीं दिया।"

तब वह जादूगरनी गुस्से में भर कर घर के बाहर भागी और अपने कुत्ते से बोली — "और तुम बताओ कि तुमने उसको क्यों जाने दिया?"

"क्योंकि उसने मुझे हड्डी दी। मैंने तुम्हारी इतने साल सेवा की पर तुमने तो मुझे खाने के लिये हड्डी का कभी कोई छोटा सा टुकड़ा भी नहीं दिया।"

यह सुन कर जादूगरनी और बाहर की तरफ भागी और बिर्च के पेड़ से बोली — "ओ बिर्च के पेड़, क्या तुमने अपनी शाखाऐं उसके चेहरे पर नहीं मारीं?"

बिर्च का पेड़ बोला — "नहीं, मैंने उसको जाने दिया क्योंकि उसने अपने बालों में से रिबन निकाल कर उससे मेरी शाखाऐं बॉध दी थीं। मैं यहॉ दस साल से खड़ा हूँ पर तुमने तो मेरी शाखाओं में कभी एक धागा भी नहीं बॉधा।"

अब तो बाबा यागा का गुस्सा बहुत ऊपर चढ़ गया। वह भागी भागी दरवाजे पर गयी और उस पर चिल्ला कर बोली — "दरवाजे, दरवाजे। क्या तुमने उसको नहीं रोका?"

दरवाजा बोला — "नहीं, मैंने उसको नहीं रोका। मैंने उसको जाने दिया क्योंकि उसने मेरे कब्जों में ओस लगायी थी। मैंने तुम्हारी इतने साल सेवा की है पर तुमने तो उन पर कभी पानी भी नहीं डाला।"

बाबा यागा गुस्से में भर कर उड़ चली। उसने अपने कुत्ते और बिल्ली को पीटा, नौकरानी को कोड़े मारे, बिर्च के पेड़ को काटा और दरवाजे को तोड़ा।

यह सब करते करते वह इतना थक गयी कि वह उस लड़की के बारे में बिल्कुल ही भूल गयी।

इस बीच वासिलीसा उस खोपड़ी की रोशनी में अपने घर भाग गयी। अगले दिन सुबह सवेरे वह अपने घर पहुँची तो वहाँ जा कर उसने देखा कि वहाँ तो तभी भी कोई रोशनी नहीं थी।

उसकी सौतेली माँ और बहिनें उसको दरवाजे पर ही मिल गयीं। वे तीनों उसके ऊपर एक साथ चिल्लायीं — "ओ तू किसी काम की नहीं, कहाँ रह गयी थी तू?"

और वह खोपड़ी उसके हाथ से छीनते हुए वे उसको घर के अन्दर ले गयीं। उसको घर के अन्दर ले जाते ही एक अजीब सी घटना घटी।

उस खोपड़ी की चमकती हुई आँखें वासिलीसा की सौतेली माँ और बहिनों के ऊपर जम गयीं और उनकी रोशनी उनके अन्दर घुसती चली गयी। उन्होंने अपने आपको बचाने की कितनी कोशिश की पर वे आँखें उनका पीछा करती रहीं।

इससे वे तीनों जलती रहीं, काली होती रहीं, जब तक कि वे पूरी की पूरी जल नहीं गयीं। केवल वासिलीसा ही बची रही।

अगली सुबह वासिलीसा ने वह खोपड़ी ली और उसको बागीचे में गाड़ दिया। कुछ समय बाद वहाँ गहरे लाल रंग के गुलाब का एक पेड़ उग आया।

उसी दिन वासिलीसा के पिता बाजार से घर वापस लौटे और वासिलीसा से सारी कहानी सुनी तो वह अपनी उस बुरी पत्नी और उसकी दोनों बिगड़ी हुई बेटियों से छुटकारा पा कर बहुत खुश हुए।

उस दिन के बाद वासिलीसा और उस के पिता दोनों शान्ति से रहने लगे। वासिलीसा उस गुड़िया को अभी भी अपनी जेब में रखती। क्या पता उसको कब उसकी जरूरत पड़ जाये।

11 सुनहरा जूता[70]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा और बुढ़िया थे। बूढ़े की एक बेटी थी और बुढ़िया की एक बेटी थी। बुढ़िया ने बूढ़े से कहा — "जाओ और अपनी बेटी के लिये एक बिना बच्चे वाली गाय[71] खरीद लाओ ताकि उसके पास उसकी देखभाल का कोई काम हो।" सो बूढ़ा गया और बाजार से एक बिना बच्चे वाली गाय खरीद लाया।

बुढ़िया ने अपनी बेटी को तो बहुत बिगाड़ रखा हुआ था पर वह बूढ़े की बेटी को अक्सर ही मारती रहती। इसके बावजूद बूढ़े की बेटी बहुत अच्छी और मेहनत करने वाली लड़की थी जबकि बुढ़िया की बेटी बहुत ही आलसी थी। वह अपने हाथ अपनी गोद में रख कर बैठे रहने के सिवाय और कुछ नहीं करती थी।

एक दिन बुढ़िया ने बूढ़े की बेटी से कहा — "देख ओ कुत्ते की बेटी। गाय को बाहर चराने के लिये ले जा। और ये दो गठरी रुई है इन्हें साफ कर के शाम तक कात लाना।" लड़की ने रुई की दोनों गठरियॉ उठायीं और गाय ले कर उसे चराने के लिये चल दी।

[70] The Golden Slipper. (Tale No 13)
[71] Translated for the word "Heifer"

सो गाय तो चरने लगी और लड़की बैठ कर रोने लगी। गाय ने उसे रोते देखा तो उससे पूछा — "प्यारी बेटी तुम यहाँ बैठी बैठी क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मुझे अफसोस है। मैं क्यों न रोऊँ। मेरी सौतेली माँ ने मुझे ये दो गठरी रुई दी है और इसे साफ कर के धुन कर कात कर धो कर कपड़ा बुन कर शाम को लाने के लिये कहा है।"

गाय बोली — "दुखी मत हो। सब कुछ ठीक हो जायेगा। तुम सोने के लिये लेट जाओ।"

सो वह लड़की सोने के लिये लेट गयी और सो गयी। जब वह सो कर उठी तो उसने देखा कि सारी रुई साफ हो चुकी थी कत चुकी थी और उसका कपड़ा बुन कर धोया जा चुका था।

तब वह गाय और कपड़े को ले कर घर चली गयी और कपड़ा ले जा कर अपनी सौतेली माँ को दे दिया। बुढ़िया ने उसे ले लिया और छिपा कर रख दिया ताकि किसी को यह पता न चल सके कि उसे बूढ़े की बेटी ले कर आयी थी।

अगले दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "प्यारी बेटी। जाओ तुम गाय को बाहर ले जा कर चरा लाओ। और देखो यह थोड़ी सी रुई है जिसे तुम साफ कर के कात कर के या जैसे भी तुम चाहो कर के इसे शाम को घर ले आना।

वह गाय और रुई ले कर गाय चराने चली गयी। वहाँ जा कर उसने गाय को तो चरने भेज दिया और खुद वह सो गयी। शाम को वह गाय चरा कर घर ले आयी और रुई ला कर अपनी माँ को दे दी और बोली — "ओह मम्मी सारा दिन मेरा सिर दर्द करता रहा। गरम भी बहुत था। मैं रुई को गीला करने के लिये नाले पर भी नहीं जा सकी।"

उसकी माँ बोली — "कोई बात नहीं बेटी। तुम लेट जाओ और सो जाओ। यह काम तुम फिर किसी और दिन कर लेना।"

अगले दिन उसने बूढ़े की बेटी को फिर से बुलाया — "उठ ओ कुतिया। जा और गाय को चरा ला। और यह एक गठ्ठर रुई का है जिसे तुझे साफ करना है कातना है और उसका कपड़ा बुन कर साफ कर के लाना है।" लड़की ने वह रुई का गठ्ठर लिया और गाय को चराने के लिये चल दी।

गाय तो घास चरने लगी और लड़की बेचारी एक विलो के पेड़ के नीचे बैठ गयी। उसने अपनी रुई एक तरफ को रख दी और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

उसे रोता देख कर गाय उसके पास आयी और उससे पूछा — "प्यारी बेटी तुम क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मैं क्यों न रोऊँ।" कह कर उसने सारी बात गाय को बता दी।"

गाय बोली — "तुम दुखी न हो। सब ठीक हो जायेगा। तुम लेट कर आराम से सोओ।" सो वह लेट गयी और तुरन्त ही सो गयी। जब वह शाम को उठी तो उसने देखा कि उस रुई का तो कपड़ा बन चुका था ताकि उसकी तुरन्त ही कमीज़ बनायी जा सकती थी। वह गाय को घर ले गयी और कपड़ा ले जा कर अपनी सौतेली मॉ को दे दिया।

यह देख कर बुढ़िया अपने मन में सोचने लगी "क्या बात है कि इस कुत्ते के बच्चे की बेटी ने अपना काम समय से खत्म कर लिया। मुझे मालूम है कि जरूर ही इस गाय ने इसका काम किया होगा। पर मैं इस पर रोक लगाने वाली हूँ।"

वह बूढ़े के पास गयी और उससे कहा कि वह इस गाय को मरवा दे क्योंकि तेरी यह बेटी फिर ज़रा सा भी काम नहीं करती। बस यह गाय को चराने के लिये बाहर चली जाती है। वहॉ यह कुछ नहीं करती बस सारे दिन सोती रहती है।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है मैं इसे मारे देता हूँ।"

पर बूढ़े की बेटी ने यह सब कुछ सुन लिया। वह बागीचे में चली गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसका रोना सुन कर गाय उसके पास आयी और उससे पूछा — "मेरी बच्ची क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मैं क्यों न रोऊँ जबकि वे तुझे मारना चाहते हैं।"

गाय बोली — "तुम चिन्ता न करो सब ठीक हो जायेगा। जब वे लोग मुझे मार दें तो तुम अपनी सौतेली मॉ से कहना कि वह तुम्हें मेरी ऑतें साफ करने के लिये दे दें।

उन ऑतों में तुम्हें एक दाना मिलेगा जिसे तुम बो देना। उससे विलो का एक पेड़ उग आयेगा। फिर जो कुछ भी तुम्हें चाहिये तुम उस विलो के पेड़ से मॉग लेना। तुम्हारी सब इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी।"

उसके पिता ने गाय को मार डाला। लड़की ने अपनी सौतेली मॉ से उसकी ऑतें धोने की इच्छा प्रगट की तो वह बोली — "जैसे मेरे पास कोई और है जो यह काम करेगा।"

सो उसने उसे धोने के लिये वे ऑतें दे दीं। ऑतें धोते समय उसे उनमें एक दाना मिल गया। उसने वह दाना अपने घर के सामने बो दिया।

अगले दिन जब वह सो कर उठी तो उसके घर के सामने उस दाने से एक विलो का पेड़ उग आया था। विलो के पेड़ के नीचे पानी का एक स्रोत भी था। वैसा शुद्ध और साफ पानी गॉव भर में कहीं नहीं था। वह बर्फ की तरह से ठंडा और साफ था।

जब रविवार आया तो सौतेली मॉ ने अपनी प्रिय बेटी को सजाया और चर्च ले गयी। पर बूढ़े की बेटी से उसने कहा — "तू चौका चूल्हा देख। आग को ठीक से जला कर रखना और खाना बना कर रखना। सारे घर की सफाई कर के रखना। अपनी सबसे

अच्छी फ्राक पहन कर रखना और कपड़े धो कर रखना। तब तक मैं चर्च से लौट कर आती हूँ। और अगर तूने ये सब काम खत्म नहीं किये तो मैं तुझे मार दूँगी।"

सो बुढ़िया और उसकी बेटी तो चर्च चले गये और बूढ़े की तेज़ बेटी ने चूल्हे में आग जलायी और खाना तैयार किया। फिर वह विलो के पेड़ के पास पहुँची और वहाँ जा कर बोली — "ओ विलो के पेड़ ओ विलो के पेड़। अपनी छाल में से निकल कर आ ओ लेडी अन्ना, जब मैं तुझे पुकारूँ।"

यह सुनते ही विलो के पेड़ ने अपना कर्तव्य निभाया। उस पेड़ ने अपने सारे पत्ते हिलाये और फिर उसमें से एक लड़की निकल कर बाहर आयी और बोली — "मेरी प्यारी छोटी लेडी। बोलो मेरे लिये क्या आज्ञा है।"

लड़की बोली — "मुझे एक बहुत सुन्दर पोशाक दो और मुझे एक घोड़ा गाड़ी दो क्योंकि मुझे भगवान के घर यानी कि चर्च जाना है।" तुरन्त ही उसके लिये सिल्क और साटिन की पोशाक आ गयी और एक घोड़ा गाड़ी आ गयी। उसके पैर में सुनहरे जूते थे। और वह चर्च चली गयी।

जब वह चर्च पहुँची तो वहाँ बहुत कुछ करने को था। उसे देख कर बहुत सारे लोग बोले — "ओह ओह ओह। यह कौन है। क्या यह कोई राजकुमारी है या फिर यह कोई रानी है। इसके जैसी तो हमने पहले कभी देखी नहीं।"

इत्तफाक से नौजवान ज़ारेविच[72] भी वहॉ मौजूद था। जब उसने उसे देखा तो उसका तो उसे देख कर दिल ही धड़कने लगा। वह तो उसके ऊपर से अपनी ऑखें ही नहीं हटा सका। वहीं का वहीं खड़ा रह गया। सारे कप्तान और दरबारी लोग उसकी तारीफ कर रहे थे। वे सब उसे देखते ही उससे प्यार करने लगे। पर वह थी कौन इसका तो उन्हें पता ही नहीं था।

जब चर्च में पूजा खत्म हो गयी ये वह उठी गाड़ी में बैठी और घर आ गयी। घर आने पर उसने अपने बढ़िया कपड़े उतारे अपने फटे पुराने कपड़े फिर से पहने और खिड़की वाले कोने में बैठ कर चर्च से आने वालों को देखने लगी।

उसकी सौतेली मॉ भी चर्च से वापस आयी। उसने उससे पूछा — "क्या खाना तैयार है?"

"हॉ तैयार है।"

"क्या तूने कमीज़ें सिल दीं?"

"हॉ मैंने कमीज़ें भी सिल दीं।"

उसके बाद वे सब खाना खाने बैठे तो वे इस बात का वर्णन करने लगीं कि आज उन्होंने चर्च में कितनी सुन्दर लड़की देखी। बुढ़िया बोली — "ज़ारेविच तो बजाय अपनी प्रार्थना करने के उसे ही सारा समय देखता रहा। वह लग ही इतनी अच्छी रही थी।"

[72] Tzarevich – prince in Russian language

उसके बाद उसने बूढ़े की बेटी से कहा — "जहॉ तक तेरा सवाल है ओ आलसिन। तूने कमीज़ें तो सिल दी हैं और धो भी दी हैं पर तू तो गन्दी ही है।"

अगले रविवार सौतेली मॉ ने चर्च के लिये फिर से अपनी बेटी को तैयार किया और अपनी सौतेली बेटी से कहा — "ओ आलसिन। देख कर रखना कि आग जलती रहे।" और उसे बहुत सारे काम थमा दिये।

बूढ़े की बेटी ने सारे काम बहुत जल्दी खत्म कर लिये।"

उसके बाद वह फिर से विलो के पेड़ के पास गयी और बोली — "ओ चमकदार वसन्त के विलो पेड़। ओ चमकदार वसन्त के विलो पेड़। बदल दो। बदल दो।"

तब पिछली बार से भी ज़्यादा शानदार एक सुन्दरी उस पेड़ में से निकली और बोली — "ओ छोटी लेडी ओ प्यारी लेडी। तुम्हें क्या चाहिये?"

उसने उसे अपनी जरूरत की सब चीज़ें बता दीं। तो उसने उसे एक बहुत सुन्दर पोशाक दी एक जोड़ी सुनहरे जूते दिये और वह एक शानदार गाड़ी में बैठ कर चर्च चली गयी।

वहॉ ज़ारेविच फिर से आया हुआ था। जैसे ही उसने लड़की को देखा तो वह तो वहीं खड़ा रह गया जैसे जमीन से जम गया हो। वह अपनी ऑखें भी उससे नहीं हटा सका। लोग भी आपस में फुसफुसा रहे थे "क्या यहॉ कोई ऐसा नहीं है जो यह जानता हो कि

यह कौन है। क्या किसी को नहीं पता कि यह इतनी सुन्दर लड़की कौन है?"

फिर उन्होंने आपस में पूछना शुरू कर दिया "क्या तुम इसे जानते हो? क्या तुम इसे जानते हो?" सभी ने यही जवाब दिया कि "नहीं हम तो नहीं जानते। नहीं हम तो नहीं जानते।"

जब ज़ारेविच से पूछा गया तो ज़ारेविच ने भी यही कहा — "नहीं मैं तो इसे नहीं जानता। पर जो कोई मुझे यह बतायेगा कि यह कौन है मैं उसे थैला भर कर सोने के डकैट[73] दूँगा।"

उन्होंने सबने आपस में एक दूसरे से पूछा एक दूसरे से सलाह की पर कोई यह नहीं बता सका कि वह कौन है। पर ज़ारेविच के साथ एक हॅसोड़ रहता था जो जब भी ज़ारेविच दुखी होता तो हमेशा ही उसके साथ मजाक करता रहता था।

इस बार भी वह हॅसा और उसने ज़ारेविच से कहा — "मुझे मालूम है कि इस लेडी का पता कैसे लगाया जा सकता है।"

नौजवान ज़ारेविच ने पूछा "कैसे?"

हॅसोड़ बोला — "मैं बताता हूँ। चर्च में उस जगह पर तारकोल लगा दो जहॉ वह खड़े होना चाहती है। इससे उसका जूता उसमें चिपक जायेगा। वह वहॉ से जल्दी भागने के चक्कर में यह भी नहीं देखेगी कि उसका जूता चर्च में पीछे छूट गया है।" सो ज़ारेविच ने

[73] Ducket was the currency

अपने दरबारियों को हुक्म दिया कि वे तुरन्त ही उस जगह पर तारकोल लगा दें।

अगली बार जब चर्च की पूजा खत्म हुई ते वह हमेशा की तरह से जल्दी से उठी और जाने लगी तो उसका एक जूता उस तारकोल में चिपक गया। जब वह घर पहुँची तो उसने अपनी बढ़िया पोशाक उतार दी अपने फटे पुराने कपड़े पहन कर खिड़की के पास वाले कोने में बैठ गयी और चर्च से आने वालों को देखती रही।

जब उसकी सौतेली माँ और बहिन चर्च से आयीं तो उनके पास बात करने के लिये बहुत कुछ था जैसे कैसे वह नौजवान ज़ारेविच उस सुन्दर लड़की से प्रेम करने लगा था पर कोई भी उसे पहचान नहीं पा रहा था कि वह कहाँ से आयी थी।

अब सौतेली माँ बूढ़े की बेटी से और भी ज़्यादा घृणा करने लगी थी क्योंकि वह हमेशा अपना काम बड़े अच्छे तरीके से कर लेती थी।

पर ज़ारेविच ने कुछ नहीं किया सिवाय दर्द महसूस करने के। उसने अपने पूरे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि "कौन है वह लड़की जिसका सुनहरा जूता खो गया है?" पर कोई सामने नहीं आया।

तब ज़ार ने अपने बहुत सारे सलाहकारों को अपने राज्य में ऐसी लड़की को खोजने के लिये भेजा। उसने उनसे कहा कि "अगर

यह लड़की न मिली तो मेरा बच्चा तो मर जायेगा और फिर तुम जानते हो कि तुम सब भी गये।"

सो ज़ार के सारे सलाहकार अपने राज्य के सारे गॉवों और शहरों में गये और वहॉ जा कर उन्होंने पहले राजकुमारियों कुलीन लोगों और अमीर लोगों की सब लड़कियों के पैर नापे और उनकी जूते के साइज़ से तुलना की ताकि वे उस लड़की को पहचान सकें जो ज़ारेविच की दुलहिन बन सके।

पर उन सब लड़कियों के पैर या तो छोटे थे या फिर बड़े। फिर वे गरीब और किसान लोगों के पास गये और वहॉ जा कर उनकी बेटियों को देखा।

वे खोजते रहे खोजते रहे पैर नापते रहे नापते रहे फिर वे यह सब करते करते इतना थक गये कि वे अपने चारों तरफ देखने लगे तो उनको एक झोंपड़ी के पास लगा एक विलो का पेड़ दिखायी दे गया। उस पेड़ की जड़ में पानी का एक स्रोत था।

वे बोले "चलो इस पेड़ की ठंडी छॉह में बैठ कर थोड़ा आराम कर लेते हैं।" सो वे उस पेड़ के पास गये और वहॉ जा कर आराम करने के लिये उस पेड़ के नीचे बैठ गये। तभी बुढ़िया उस झोंपड़ी से बाहर निकल कर आयी तो उन्होंने उससे पूछा — "मॉ जी क्या आपके कोई बेटी है?"

"हॉ है।"

उन्होंने पूछा — "एक और दो?"

"दो। पर दूसरी मेरी अपनी बेटी नहीं है वह केवल रसोई में काम करने वाली एक आलसी लड़की है। वह तो देखने में भी बहुत गन्दी है।"

"ठीक है ठीक है। हम दोनों का पैर इन सुनहरी जूतों से नापना चाहेंगे।"

बुढ़िया बोली — "ठीक है।" फिर उसने अपनी बेटी से कहा कि वह अपने आपको ठीक से साफ करे अपने पैर धोये पर बूढ़े की बेटी स्टोव के पीछे छिप कर बैठ गयी। वह न तो साफ थी न उसने ठीक से कपड़े पहने थे। बुढ़िया ने उससे कहा — "ओ कुत्ते की बच्ची, तू वहीं बैठी रह।"

ज़ार के सलाहकार दोनों बेटियों के पैर नापने के लिये झोंपड़ी में आये तो बुढ़िया अपनी बेटी से बोली — "बेटी अपना पैर आगे बढ़ाओ।" लड़की ने अपना पैर आगे बढ़ाया सलाहकारों ने उसे नापा पर वह जूता तो उसके पैरों में बिल्कुल भी फिट नहीं हो रहा था।

सो सलाहकारों ने बुढ़िया से कहा — "आपकी दूसरी बेटी कहॉ है उसे बुलाइये।"

बुढ़िया बोली — "वह। वह तो बहुत ही आलसी है। इसके अलावा वह तैयार भी नहीं है।"

"कोई बात नहीं। हमें तो केवल उसका पैर नापना है। कहॉ है वह?"

तब बूढ़े की बेटी बाहर निकल कर आयी तो उसकी सौतेली मॉ ने उसे उन सलाहकारों की तरफ धक्का देते हुए कहा "जा न ओ आलसी लड़की।"

तब सलाहकारों ने जूते से उसका पैर नापा तो लो वह तो उसके पैर में बिल्कुल ऐसे फिट हो गया जैसे हाथ में दस्ताने फिट हो जाते हैं। यह देख कर दरबारी और सलाहकार लोग बहुत खुश हुए और उन्होंने भगवान को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

वे बोले — "मॉ जी। हम आपकी इस बेटी को अपने साथ ले जायेंगे।"

"क्या? ऐसी गन्दी लड़की को आप अपने साथ ले जायेंगे? लोग आप पर हॅसेंगे नहीं?"

"हो सकता है वे हम पर हॅसें। पर फिर भी हमें इसे ले जाना तो पड़ेगा ही।"

तब बुढ़िया ने उन्हें डॉटा और उस लड़की को उनके साथ भेजने से मना करने लगी और चिल्ला कर बोली — "इतनी आलसी और गन्दी लड़की ज़ार के बेटे की बहू कैसे बन सकती है?"

वे बोले — "बेटी तुम्हें हमारे साथ आना ही पड़ेगा। जाओ जा कर ठीक से तैयार हो कर आ जाओ।"

वह बोली — "एक मिनट ठहरिये। मैं अभी तैयार हो कर आती हूॅ।"

कह कर वह विलो के पेड़ के नीचे से निकलने वाले स्रोत के पास गयी वहॉ जा कर वह नहा धो कर कपड़े पहन कर जब झोंपड़ी में घुसी तो वह इतनी शानदार और सुन्दर लग रही थी कि ऐसी लड़की के बारे में न तो सोचा जा सकता था और न कोई अन्दाज़ा लगाया जा सकता था केवल कहानियों में ही सुना जा सकता था। वह उस समय सूरज की तरह चमक रही थी। यह देख कर बुढ़िया भी कुछ नहीं कह सकी।

उन्होंने उसे एक गाड़ी में बिठाया और चल दिये। जब ज़ारेविच ने उसे देखा तो वह अपने आपे में न रह सका। वह बोला — "पिता जी। जल्दी कीजिये। हमें अपना आशीर्वाद दीजिये।"

सो ज़ार ने उन दोनों को आशार्वाद दिया और उन दोनों की शादी हो गयी। उनकी शादी की खुशी में एक बहुत बढ़िया दावत दी गयी जिसमें सारी दुनियॉ को बुलाया गया।

उसके बाद वे दोनों एक साथ खुशी खुशी रहे और जब तक रहे तब तक पेट भर कर गेहूँ की रोटी खाते रहे।

12 टैम ओर कैम की कहानी[74]

सिन्डरैला जैसी कहानियों की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के वियतनाम देश की कहानियों से ली है।

यह बहुत पुरानी बात ही कि एक बार एक आदमी की पत्नी मर गयी। वह अपने पीछे अपनी एक छोटी सी बेटी टैम छोड़ गयी थी तो वह आदमी बस उसी के साथ रहता था। कुछ दिन तक तो वह उसके साथ रहा पर फिर उसने दूसरी शादी कर ली।

उसकी यह दूसरी पत्नी बहुत ही खराब थी। उसकी बेटी को यह बात अपने पिता की शादी के अगले दिन ही पता चल गयी थी।

क्योंकि अगले दिन घर में बहुत बड़ी दावत थी पर टैम को बजाय इसके कि वह सब मेहमानों का स्वागत करती और दावत खाती एक कमरे में अकेली बन्द कर दिया गया था। और केवल इतना ही नहीं बल्कि उसको बिना खाना दिये हुए ही सोने के लिये भेज दिया गया था।

---

[74] The Story of Tam and Cam – a fairy tale from Vietnam, Asia.
This story is taken from the Web Site :
https://www.furorteutonicus.eu/germanic/ashliman/mirror/tam.html Translated by DL Ashliman. Ashliman took it from the book : "Vietnamese Legends", by . Saigon, Kim-Lai-An-Quan. 1957. pp 43-56. (This story is told by Europeans with the title "Cinderella".)
[Author's Note : In another version of this tale the magic helper is identified as the Buddha. See, for example, "Story of Tam and Cam" in the book : "Anthology of Vietnamese Popular Literature", by Huu Ngoc and Francoise Correze. Hanoi: Foreign Languages Publishing House, 1984, pp. 157-169.]

यह सब और भी ज़्यादा खराब हो गया जब उस घर में एक और बच्ची का जन्म हुआ। मॉ ने उस बच्ची का नाम कैम रखा। टैम की सौतेली मॉ अपनी बेटी कैम को बहुत ज़्यादा प्यार करती थी और टैम को एक ऑख नहीं देख सकती थी।

वह टैम के बारे में उसके पिता से इतने झूठ बोलती कि उसका पिता अब उससे कोई मतलब रखना नहीं चाहता था।

एक दिन टैम की सौतेली मॉ ने टैम से कहा — "ओ शैतान लड़की। जा तू जा कर रसोईघर में बैठ और वहीं रहा कर।"

और उसने उस बेचारी टैम को रसोईघर में ही एक गन्दी सी जगह बैठने उठने के लिये दे दी। अब टैम वहीं बैठी रहती और वहीं काम करती रहती। रात को सोने के लिये उसको बिस्तर की जगह एक फटी हुई चटाई और एक फटी हुई चादर दे दी जाती।

दिन में उसको फर्श मल मल कर साफ करने होते लकड़ी काटनी होती और जानवरों को खाना खिलाना होता। उसको खाना भी बनाना होता कपड़े भी धोने होते और और बहुत सारे काम करने होते।

यह सब करते करते उसके छोटे छोटे हाथों में बड़े बड़े छाले पड़ जाते पर वह बेचारी बिना कोई शिकायत किये इन सबका दर्द सहती रहती।

उसकी सौतेली मॉ उसको अक्सर घने जंगल में लकड़ी इकट्ठा करने के लिये इसलिये भी भेजती कि शायद वहॉ से उसको कोई

जंगली जानवर उठा कर ले जाये। वह उसको पानी खींचने के लिये खतरनाक जगहों पर भेजती कि शायद एक दिन वह वहॉ पर डूब जाये।

बेचारी छोटी टैम सारा दिन काम करती जब तक कि उसकी खाल सूखी सूखी नहीं हो जाती और उसके बाल नहीं उलझ जाते।

पर कभी कभी जब वह कुँए से पानी खींचने जाती तो उसमें झॉक कर देखती तो अपनी शक्ल देख कर डर जाती कि वह कितनी बदसूरत दिखायी देती थी।

फिर वह अपनी हथेलियों में पानी भरती और अपना चेहरा साफ करती तो उसकी चिकनी सफेद खाल फिर से दिखायी देने लगती। वह अपने लम्बे चिकने बालों में कंघी करती तो वह फिर से सुन्दर दिखायी देने लगती।

जब सौतेली मॉ को लगा कि टैम कितनी सुन्दर दिखायी दे सकती थी तो वह उसको और ज़्यादा नफरत करने लगी और उसका और बुरा चाहने लगी।

एक दिन उसने टैम और अपनी बेटी कैम को मछली पकड़ने के लिये गॉव के तालाब पर भेजा और कहा — "तुमसे जितनी ज़्यादा से ज़्यादा मछलियॉ पकड़ी जा सकें उतनी पकड़ लेना।

अगर तुम लोग बहुत थोड़ी मछलियॉ पकड़ कर घर वापस लौटीं तो तुमको बहुत मार पड़ेगी और तुमको शाम का खाना भी नहीं मिलेगा।"

टैम को अपने लिये इन शब्दों का मतलब पता था क्योंकि वह जानती थी कि उसकी सौतेली मॉ अपनी बेटी कैम को तो कभी पीटेगी नहीं क्योंकि वह तो उसकी ऑख का तारा थी। वह तो बस हमेशा टैम को ही पीटती थी।

टैम ने मछली पकड़ने की बहुत कोशिश की तो शाम होते होते तक उसने एक टोकरी भर कर मछलियॉ पकड़ ही लीं। जबकि कैम सारा समय वहॉ उगी हुई हरी घास में गरम धूप में ही लेटी रही। या फिर जंगली फूल चुनती रही नाचती रही गाती रही।

सूरज छिप जाने के बाद कैम ने अपनी मछली पकड़नी शुरू की तो उसको कोई मछली नहीं मिली और उसकी टोकरी खाली ही रही।

सो कैम को एक शानदार विचार आया वह टैम से बोली — "बहिन तुम्हारे बालों में तो कीचड़ लगी पड़ी है। क्यों नहीं तुम पानी में जा कर अपना सिर धो आओ नहीं तो मॉ तुमको मारेगी।"

टैम को उसकी सलाह कुछ ठीक सी लगी तो वह नहाने के लिये पानी में चली गयी। इस बीच कैम ने जितनी जल्दी हो सकता था उतनी जल्दी अपनी बहिन की टोकरी की सारी मछलियॉ अपनी टोकरी में पलट लीं।

जब टैम ने यह देखा कि उसकी मछलियॉ चोरी कर ली गयी हैं तो उसका दिल डूब गया और वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। यकीनन उसकी सौतेली मॉ अब उसको बहुत पीटेगी।

अचानक ठंडी हवा बही आसमान साफ हो गया और बादल भी सफेद हो गये। उसने देखा कि उसके सामने नीले कपड़े पहने दया की देवी[75] खड़ी थी। उसके हाथ में विलो पेड़ की एक प्यारी सी शाख थी।

उसने बड़ी मीठी आवाज में टैम से पूछा — "मेरी बच्ची क्या बात है। क्यों रोती हो।"

टैम ने उसको अपना हाल बताया और कहा — "ओ देवी, अब जब मैं घर जाऊँ तो मैं आज रात क्या करूँ मैं तो डर के मारे मर ही जाऊँगी। क्योंकि मेरी सौतेली माँ मेरा विश्वास नहीं करेगी और मेरी बहुत ज़ोर से पिटायी करेगी।"

दया की देवी ने उसको तसल्ली दी और बोली — "तुम्हारी यह बदकिस्मती बहुत जल्द खत्म हो जायेगी। तुम मेरे ऊपर विश्वास रखो और खुश रहो। अब तुम अपनी टोकरी की तरफ देखो कि उसमें कुछ है क्या।"

टैम ने अपनी टोकरी की तरफ देखा तो देखा कि उसमें तो एक छोटी सी प्यारी सी मछली पड़ी हुई है। उसके पंख लाल हैं और उसकी आँखें सुनहरी हैं। उसके मुँह से आश्चर्य की हल्की सी एक चीख निकल गयी।

---

[75] Translated for the words "Goddess of Mercy". In Chinese mythology this Goddess is known as "Kuan Yin". You may read about her in the book : "Cheen: Dant Kathayen Aur Vishwas-1" by Sushma Gupta written in Hindi language. It is available from hindifolktales@gmail.com

देवी ने उससे कहा — "इस मछली को तुम घर ले जाओ और उसे अपने घर के पीछे वाले कुँए में डाल देना। रोज उसको अपने खाने में से बचा कर दिन में तीन बार खाना खिलाना।"

टैम ने दया की देवी को धन्यवाद दिया और घर आ कर वैसा ही किया जैसा दया की देवी ने उससे करने के लिये कहा था।

जब भी वह कुँए पर जाती तो वह मछली उसका स्वागत करने के लिये पानी की सतह पर आ जाती। पर अगर कोई और वहाँ आता तो वह वहाँ कभी नहीं आती।

टैम का यह अजीब व्यवहार उसकी सौतेली माँ ने भी देखा क्योंकि वह हमेशा ही उस पर नजर रखती थी। सो उसने भी कुँए पर मछली देखने का विचार किया पर वह मछली तो कुँए के गहरे पानी में छिपी हुई थी वह उसको देख नहीं पायी।

सो एक दिन उसने टैम को पानी लाने के लिये वहाँ से बहुत दूर भेज दिया। और जब वह चली गयी तो उसकी गैरहाजिरी का फायदा उठा कर उसने टैम के फटे कपड़े पहने और मछली को बुलाया। मछली ने सोचा कि वह टैम है सो वह ऊपर आ गयी तो उसने उसे मार दिया और उसको खाने में पका दिया।

जब टैम पानी ले कर वापस आयी तो वह कुँए पर गयी पर वहाँ तो कोई मछली पानी की सतह पर नहीं आयी। टैम ने अपना सिर झुका कर कुँए में झाँका तो यह देख कर बहुत ज़ोर से रो पड़ी कि उस कुँए का पानी तो खून से लाल हो रहा था।

दया की देवी अपना दया से भरा चेहरा ले कर फिर प्रगट हुई और उसको तसल्ली दी — "मत रो मेरी बच्ची। तुम्हारी सौतेली माँ ने उस मछली को मार डाला है। पर तुम उसकी हड्डियाँ ढूँढो और उनको अपनी सोने वाली चटाई के नीचे जमीन में गाड़ दो।

फिर जब भी तुमको किसी चीज़ की जरूरत हो तो तुम उसको उन हड्डियों से माँग लेना तो वे हड्डियाँ तुम्हारी इच्छा पूरी कर देंगीं।"

टैम ने उसकी सलाह मानी और उसकी हड्डियों को सब जगह ढूँढा पर उसको तो उसकी एक भी हड्डी नहीं मिली। वह तो परेशान हो गयी। अब वह क्या करे।

तभी एक मुर्गी की आवाज आयी — "क्लक क्लक। मुझे थोड़ा चावल खिलाओ तो मैं तुम्हें बताती हूँ कि उसकी हड्डियाँ कहाँ हैं।"

सो टैम ने उसको एक मुट्ठी चावल दिये। मुर्गी चावल खा कर बोली — "क्लक क्लक। आओ मेरे साथ आओ मैं तुमको उस जगह ले चलती हूँ जहाँ उसकी हड्डियाँ हैं।"

सो टैम मुर्गी के पीछे पीछे चल दी। वह मुर्गी उसको मुर्गीखाने में ले गयी। वहाँ मुर्गी ने ताजा पत्तों का एक ढेर हटाया। उस ढेर के नीचे उस मछली की हड्डियाँ रखी हुई थीं।

टैम ने वे सब हड्डियॉ उठा लीं और दया की देवी के कहे अनुसार उनको अपनी सोने वाली चटाई के नीचे जमीन में गाड़ दिया।

जल्दी ही टैम ने उससे सोना गहने और ऐसे कपड़े की पोशाकें मॉग लीं जिनको देख कर और पहन कर किसी भी लड़की का दिल खुश हो जाता।

कुछ दिनों में पतझड़ का त्यौहार[76] आया तो टैम को घर में रहने के लिये कहा गया और उसको काली और हरी दाल की दो बड़ी टोकरियों में से दोनों दालों को अलग अलग करने के लिये कहा गया जो उसकी सौतेली मॉ ने पहले से ही मिला कर रखी हुई थीं।

उसने टैम से कहा — "त्यौहार में जाने से पहले यह काम खत्म कर।"

और मॉ ओर कैम ने फिर अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और उस त्यौहार में अकेले ही चली गयीं।

उनके जाने के काफी देर बाद टैम ने अपना ऑसुओं भरा चेहरा ऊपर उठाया और दया की देवी से प्रार्थना की — "ओ दया की देवी मॉ। मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।"

तुरन्त ही वह कोमल ऑखों वाली दया की देवी अपनी जादुई हरी विलो की शाख ले कर वहॉ प्रगट हुई। उसने कुछ मक्खियों को

[76] Translated for the words "Autumn Festival". In Northern hemisphere Autumn is the season between Summer and Winter, ie from October to December. People normally celebrate it in the month of October. In the Americas it is called "Fall"

चिड़ियों में बदला और उन चिड़ियों ने उस लड़की को दी गयीं वे दालें बहुत जल्दी ही अलग अलग कर दीं। इस तरह उसका यह काम बहुत जल्दी ही हो गया।

टैम ने अपने ऑसू पोंछे और अपनी नीली और रुपहली पोशाक पहन कर त्यौहार में चली गयी। इसको पहन कर तो वह बिल्कुल राजकुमारी लग रही थी।

कैम तो उसको वहॉ देख कर आश्चर्यचकित रह गयी और मॉ से बोली — "मॉ क्या वह अजनबी अमीर लड़की मेरी बहिन टैम जैसी नहीं है?"

जब टैम ने देखा कि उसकी सौतेली मॉ और कैम उसकी तरफ घूर रही हैं तो वह वहॉ से भाग ली। इस जल्दी में उसका एक जूता वहीं नीचे गिर गया।

वह क्योंकि जल्दी में थी सो उसके पास उसको उठाने का समय नहीं था। वह उसको वहीं छोड़ कर घर भाग गयी। उस जूते को सिपाहियों ने उठा लिया और उसको ले जा कर राजा को दे दिया।

राजा ने उसको ध्यान से देखा तो बोला कि उसने तो इतने बढ़िया काम का जूता पहले कभी नहीं देखा था। उसने उस जूते को अपने महल की स्त्रियों को पहना कर दिखाया पर वह जूता तो उनके लिये भी छोटा था जिनके पैर सबसे छोटे थे।

फिर उसने अपने राज्य की कुलीन स्त्रियों को वह जूता पहनने को कहा पर वह जूता उनमें से भी किसी के पैर में नहीं आया।

आखीर में यह मुनादी पिटवा दी गयी कि जिस लड़की के पैर में यह जूता आ जायेगा वही राजा की पत्नी बनेगी – राजा की पहली पत्नी।

सो राज्य की सब लड़कियों ने उस जूते को पहन कर देखा पर वह जूता उनमें से भी किसी को नहीं आया।

आखीर में टैम ने उस जूते को पहन कर देखा तो वह उसके पैर में आ गया। फिर उसने अपने दोनों जूते पहने और अपनी नीली और रुपहली पोशाक में बाहर आयी। वह अपनी उस पोशाक में बहुत सुन्दर लग रही थी।

उसको राजा के सामने ले जाया गया। वहॉ राजा ने उससे शादी कर ली और वे दोनों खुशी खुशी ज़िन्दगी गुजारने लगे।

पर उसकी सौतेली मॉ और कैम उसकी खुशियॉ नहीं देख सके। अब तो वे दोनों उसको मारने के लिये और भी ज़्यादा उत्सुक हो गयीं पर वे इसको करने से राजा से डरती थीं।

एक दिन टैम अपने पिता की मौत की सालगिरह मनाने अपने घर गयी। उस समय कुछ ऐसी रीति थी कि कोई चाहे जितना भी बड़ा या मुख्य आदमी क्यों न बन जाये वह अपने माता पिता से अपने माता पिता की तरह ही व्यवहार करता था।

वह चालाक सौतेली मॉ यह बात जानती थी सो उस दिन उसने टैम को एक ऊॅचे से पेड़ पर चढ़ कर मेहमानों के लिये कुछ गिरी तोड़ने के लिये कहा।

अब क्योंकि टैम तो नयी नयी रानी थी तो वह उसको मना तो कर सकती थी पर वह क्योंकि बहुत ही धार्मिक और आज्ञाकारी बेटी थी और हमेशा हर एक की सहायता करने के लिये तैयार रहती थी सो वह उस पेड़ पर गिरियॉ तोड़ने के लिये चढ़ गयी।

जब वह उस पेड़ पर चढ़ गयी तो उसने देखा कि वह पेड़ तो बड़े अजीब ढंग से इधर उधर झूल रहा है। उसने नीचे देखा तो वहॉ अपनी सौतेली मॉ को देखा तो उससे पूछा — "मॉ यह तुम क्या कर रही हो?"

मॉ बोली — "मैं तो केवल चींटियों को डरा कर यहॉ से हटा रही हूँ ताकि वे तुझे काट न लें मेरी प्यारी बच्ची।"

पर असल में उस नीच सौतेली मॉ के हाथ में एक आरी थी जिससे वह उस पेड़ को काट रही थी। वह पेड़ काफी कट चुका था सो एक झटके में ही वह नीचे गिर पड़ा जिससे वह बेचारी रानी नीचे गिर पड़ी और तुरन्त ही मर गयी।

"अब हमको उससे छुटकारा मिल गया। अब वह कभी वापस नहीं आयेगी। हम राजा को बता देंगे कि टैम एक ऐक्सीडैन्ट में मर गयी और अब मेरी बेटी कैम उसकी नयी रानी बन जायेगी।" कह कर सौतेली मॉ बहुत ही नफरत भरी और भद्दी हॅसी हॅस दी।

सो जैसा उसने प्लान किया था वैसा ही हुआ। उस सौतेली मॉ ने राजा से वही कह दिया कि टैम का ऐक्सीडैन्ट हो गया और वह

उस ऐक्सीडैन्ट में मर गयी। और अपनी बेटी कैम की शादी राजा से कर दी। अब कैम राजा की पहली पत्नी हो गयी।

पर टैम की आत्मा को शान्ति नहीं थी। वह एक बुलबुल[77] में बदल गयी और जा कर राजा के बागीचे में रहने लगी। वहाँ वह मीठे मीठे गाने गाती।

एक दिन महल में एक नौकरानी ने राजा का ड्रैगन कढ़ा हुआ एक गाउन धूप में सूखने डाला तो बुलबुल ने अपनी मीठी आवाज में गाया — "ओ सुन्दर नौकरानी, तुम मेरे पति के शाही गाउन की ठीक से परवाह करना। उसको कॉटों वाली हैज[78] पर सुखा कर फाड़ मत देना।

यह गीत उसने इतनी दर्द भरी आवाज में गाया कि इसे सुन कर राजा की ऑखों में ऑसू आ गये। बुलबुल ने उसी गीत को फिर और मीठा गाया और इतना मीठा गाया कि जिस किसी ने भी उसे सुना वह रो पड़ा।

आखिर राजा बोला — "ओ मुझे खुशी देने वाली बुलबुल, अगर तुम मेरी मरी हुई पत्नी की आत्मा हो तो मेरी चौड़ी आस्तीन पर आ कर बैठ जाओ।"

---

[77] Translated for the word "Nightingale" – it is a small bird which sings very sweet.

[78] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc. See its picture above.

यह सुन कर वह तुरन्त ही राजा की चौड़ी आस्तीन पर बैठ गयी और अपने सिर से उसका हाथ सहलाने लगी। अब उस चिड़िया को राजा के सोने वाले कमरे में एक सोने के पिंजरे में रख दिया गया।

राजा को उससे इतना प्यार हो गया कि वह अब उस चिड़िया के साथ सारा सारा दिन गुजारने लगा। वह वहॉ बैठा बैठा उसके दुख भरे मीठे गीत सुनता रहता। जब वह वे दुख भरे गाने गाती तो राजा की ऑखों में ऑसू भर आते। यह देख कर वह फिर उनको और मीठे स्वर में गाती।

यह सब देख कर कैम उस चिड़िया से जलने लगी और अपनी मॉ से उसके बारे में पूछा कि वह उसका क्या करे।

एक दिन जब राजा अपने मन्त्रियों के साथ अपनी सभा में बैठा था कैम ने उस बुलबुल को मार कर पका दिया और उसके पंख शाही बागीचे में फेंक दिये।

जब राजा अपनी सभा से वापस आया और उसने अपनी बुलबुल का पिंजरा खाली देखा तो उसने पूछा — "इसका क्या मतलब है? यह चिड़िया कहॉ गयी?"

सारे महल में हंगामा मच गया। सब लोग बुलबुल को ढूँढने में लग गये पर कोई उसको कहीं नहीं पा सका।

कैम बोली — "शायद वह यहॉ पिंजरे में बन्द रहते रहते थक गयी हो और जंगल में उड़ गयी हो।"

राजा बहुत दुखी था पर वह कुछ कर नहीं सकता था। उसने सब कुछ अपनी किस्मत पर छोड़ दिया था।

जहॉ कैम ने बुलबुल को मार कर उसके पंख फेंके थे वहॉ उन पंखों से एक बार फिर टैम की आत्मा एक बहुत ही शानदार पेड़ के रूप में बदल गयी थी।

उस पेड़ पर केवल एक ही फल लगा हुआ था। पर वह फल भी क्या फल था। वह गोल था बड़ा था सुनहरी था और उसमें से खूब खुशबू उड़ रही थी।

एक बुढ़िया उस पेड़ के पास से गुजरी तो उस फल को देख कर बोली — "ओ सुनहरी फल ओ सुनहरी फल आओ और इस बुढ़िया के थैले में आ कर गिर जाओ। यह तुमको ठीक से रखेगी और तुम्हारी खुशबू का आनन्द लेगी।"

वह फल तुरन्त ही उस बुढ़िया के थैले में आ कर गिर गया। वह बुढ़िया उसको घर ले आयी और ला कर उसको मेज पर रख दिया और उसकी खुशबू का आनन्द लेने लगी।

लेकिन अगले दिन जब वह अपना बाहर का काम खत्म कर के घर वापस आयी तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसका घर तो किसी ने साफ भी कर दिया है और किसी ने उसके लिये स्वादिष्ट खाना भी तैयार कर दिया है।

ऐसा लग रहा था जैसे उसके पीछे उसके घर में कुछ जादू हो गया हो।

अगली सुबह उसने सोचा कि वह यह देखती है कि उसका यह काम किसने किया तो उसने बाहर जाने का तो केवल बहाना किया पर बाहर जा कर वह फिर घर वापस आ गयी और घर के दरवाजे के पीछे आ कर छिप गयी।

वह यह देखने के लिये अपने घर पर निगाह रखे रही कि उसकी गैरहाजिरी में कौन उसका काम करता है।

कुछ ही देर में उसने देखा कि उस फल में से एक पतली सी सुन्दर सी लड़की निकली और उसके घर की सफाई करने लगी।

वह बुढ़िया तुरन्त ही अन्दर दौड़ गयी और उसने वह फल छील कर खोल दिया। अब वह लड़की उस बुढ़िया से छिप कर उस फल के अन्दर नहीं जा सकती थी। सो वह वहीं खड़ी की खड़ी रह गयी और फिर उसने उसको अपनी मॉ मान लिया।

एक दिन राजा शिकार पर गया तो वहॉ वह रास्ता भूल गया। शाम हो गयी और फिर अँधेरा हो गया। तब उसको इस बुढ़िया का घर दिखायी दिया तो वह रात गुजारने के लिये उसके घर चला गया।

उसने अपनी रीति के अनुसार राजा का चाय और पान[79] से स्वागत किया। राजा ने देखा कि वह पान तो बहुत ही सुन्दर तरीके से बनाया गया था सो उसने उस बुढ़िया से पूछा "तुम्हारे घर में

[79] Translated for the word "Betel Leaf". It is surprising to know that Paan is eaten in Vietnam also and people there use it to welcome their honorable guests.

इतना सुन्दर पान किसने बनाया। ऐसा पान तो मेरी पहली पत्नी बनाया करती थी।"

बुढ़िया कॉपते हुए बोली — "ओ आसमान के बेटे, यह मेरी बेवकूफ सी बेटी ने बनाया है।"

राजा ने उसको अपने सामने बुलवाया तो वह आयी और उसने राजा के सामने अपना सिर झुकाया तो राजा तो उसको देख कर सकते में आ गया। उसने देखा कि वह तो टैम थी उसकी वह रानी जिसके लिये वह बहुत दुखी था। क्या यह सपना था या फिर यह सच था।

इतने दिनों तक अलग रहने के बाद जब वे मिले तो दोनों एक दूसरे को देख कर खुशी से रो पड़े। राजा रानी को अपने शहर ले गया जहॉ उसने उसको उसका पुराना दरजा दे दिया और वह वहॉ जा कर फिर से बड़ी रानी बन गयी।

कैम अब ऐसे ही रह गयी। राजा अब उसकी तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं देता था। कैम सोचती थी कि अगर वह अपनी बहिन की तरह से सुन्दर होती तो वह भी राजा का दिल जीत लेती।

सो एक दिन कैम ने टैम से पूछा — "बहिन मैं तुम्हारी तरह से गोरी कैसे हो सकती हूँ?"

रानी बोली — "यह तो बहुत आसान है। तुमको सुन्दर तरीके से गोरा बनने के लिये बस उबलते हुए पानी के एक बड़े बरतन में कूदना है।"

कैम ने उसका विश्वास कर लिया और वैसा ही किया जैसा टैम ने उससे करने के लिये कहा था। जैसे ही वह उस उबलते हुए गरम पानी के बरतन में कूदी तुरन्त ही वह एक शब्द बोले बिना ही मर गयी।

टैम की सौतेली मॉ ने जब यह सुना तो वह बहुत रोयी और इतना रोयी कि वह तो रोते रोते अन्धी हो गयी। फिर वह इतनी दुखी हुई कि इस दुनियॉ से ही चल बसी।

रानी राजा फिर बहुत समय तक खुशी खुशी रहे।

13 गरीब टर्की लड़की[80]

सिन्डरैला की यह कहानी उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में रहने वाले आदिवासियों की कहानियों से ली गयी है। ये आदिवासी लोग कोलम्बस के इस नयी दुनियॉ के खोज से भी पहले यहॉ रहते थे, यानी सन् **1492** से पहले।

उन लोगों में बहुत सारी जनजातियॉ थी जिनमें एक जनजाति थी जूनी जनजाति। यह कहानी उन्हीं लोगों में कही सुनी जाती है। यह कहानी सन् **1901** में प्रकाशित की गयी थी।

यह बहुत पुरानी बात है जब हमारे पुरखों के पास न भेड़ें थीं, न घोड़े थे और न गायें थीं लेकिन फिर भी उनके पास कई तरह के घरेलू जानवर थे। और उनमें से एक थी टर्की।[81]

उन दिनों मैट्सेक या साल्ट लेक शहर[82] में बहुत सारे अमीर परिवार रहा करते थे जिनके पास बहुत सारी टर्की

---

[80] The Poor Turkey Girl – a fairy tale from the USA (Native American – Zuni tale), North America.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Translated and edited by DL Ashliman.
Charles Perrault took it from the Book : Zuni Folk Tales. by Frank Hamilton Cushing (NY. GP Putnam's Sons, 1901), pp. 54-64.

[81] Turkey is a big bird. It is normally killed and cooked on Christmas as a delicacy dish. See its picture above.

[82] Matsake – maybe the old name of present Salt Lake City located in Utah State of the USA

हुआ करती थीं। ये टर्की उनके गुलामों का काम करती थीं या फिर शहर के गरीब लोगों को रोजी रोटी देती थीं।

ये गरीब लोग गरज पहाड़[83] के चारों तरफ के मैदानों में रहते थे और इन्हीं मैदानों में उनका यह शहर भी बसा हुआ था। ये लोग ही उनके इन जानवरों के झुंडों की देखभाल भी करते थे।

उस समय में मैट्सेक में उस शहर के किनारे पर एक ढाल पर एक एक कमरे का छोटा सा घर था जिसमें एक बहुत ही गरीब लड़की रहती थी।

वह लड़की इतनी गरीब थी कि उसके कपड़े अक्सर मैले रहते, फटे रहते, और नहीं तो उनमें पैबन्द लगे रहते थे। क्योंकि बहुत दिनों से उसकी कोई देखभाल करने वाला नहीं था तो वह खुद भी बहुत ही शर्मनाक हालत में रहती।

हालॉकि वह इतनी बदसूरत नहीं थी। उसका चेहरा सुन्दर था उसकी ऑखें चमकीली थीं। अगर उसका चेहरा थोड़ा और अंडाकार होता और ऑखें थोड़ी कम उदास होतीं तो वह शायद और ज़्यादा सुन्दर लगती।

वह इतनी गरीब थी कि वह अपना पेट पालने के लिये टर्की के झुंड की देख भाल करती थी। इसके लिये उसको इतना कम पैसा

[83] Thunder Mountain – name of this mountain is found in the book "Haida Tribe: beliefs", by Sushma Gupta available from hindifolktales@gmail.com

मिलता था कि बस उससे उसका रोज का खाना ही निकल पाता था। कभी कभी कोई उसको कोई फटा कपड़ा दे देता।

जैसा कि सभी बहुत गरीब लोगों के साथ हर जगह और हमेशा होता है वह लड़की खुद भी बहुत ही दयावान और नम्र थी और हमेशा ही दूसरों से भी दया और नम्रता की उम्मीद रखती थी और जो उसको कभी मिलती नहीं थी।

वह तो उन जीवों के लिये भी बहुत दयावान थी जो उसके ऊपर निर्भर करते थे। वह उन टर्कियों के ऊपर भी बहुत दया करती थी जिनको वह देखभाल करने के लिये रोज मैदान ले जाती थी।

वे टर्कियॉ भी इस बात को जानती थीं कि वह लड़की उनको बहुत प्यार करती थी और उनका बहुत ख्याल रखती थी और इसी लिये वे उसका कहा भी मानती थीं।

वे अपनी देखभाल करने वाली को इतना प्यार करती थीं कि उसकी एक पुकार पर बिना किसी हिचकिचाहट के दौड़ी चली आती थीं और उसके कहने पर कहीं भी और कभी भी चली जाती थीं।

एक दिन वह गरीब लड़की उन टर्कियों को मैदानों में घुमा रही थी कि वह एक जूनी[84] गॉव के पास से

[84] Zuni is a tribe of North America. Zuni village means where Zuni people lived. See a picture of a Zuni man above.

गुजरी – दुनियॉ के बीच का चीटियों का घर[85] जैसा कि हमारे पुरखों ने हमारे घर को पुकारना सिखाया है।

जब वह वहॉ से जा रही थी तो उसने वहॉ के पुजारी को एक घर के ऊपर से यह कहते हुए सुना कि "चार दिन बाद "पवित्र चिड़िया का नाच"[86] होने वाला है।"

इस नाच में वही लोग हिस्सा ले सकते थे जिनको बुलाया जाता था। इस गरीब लड़की को पहले कभी इस नाच में हिस्सा लेने की बात तो दूर इस नाच को देखने की भी इजाज़त नहीं दी गयी थी।

वह लड़की इस नाच को देखने के लिये बहुत उत्सुक थी। पर उसने अपनी इस इच्छा को ताक पर रख दिया क्योंकि उसको लगता था कि उसको उस नाच में हिस्सा लेना तो दूर, उस नाच को देखने की भी इजाज़त नहीं मिलेगी। क्योंकि वह बदसूरत है और अच्छे कपड़े भी नहीं पहनती है।

और इस तरह से दुखी होती हुई और अपनी टर्कियों से बात करती हुई वह रोज की तरह अपने मैदानों की तरफ आगे बढ़ गयी। रात हुई तो उसने उनको उनके दड़बों में बन्द कर दिया जो शहर के चारों तरफ और शहर के बाजारों में बने हुए थे।

उस दिन के बाद से जब तक नाच का दिन आया यह गरीब लड़की टर्कियों को रोज सुबह सुबह मैदानों को ले जाते समय लोगों

[85] Middle Ant Hill of the World

[86] Translated for the words "The Dance of the Sacred Bird" – a blessed and welcome festival of Zunis, especially for the youth and maidens who are permitted to join the dance.

को नाच की जगह की सफाई करते, अच्छे कपड़े बनाते, खाने के लिये अच्छी अच्छी चीज़ें बनाते और उस त्यौहार की दूसरी तैयारियॉ करते देखती रही।

इन लोगों को जूनी गॉव वालों ने उस त्यौहार के लिये बुलाया था। वे लोग उस त्यौहार के बारे में सोच सोच कर ही खूब हॅसते और खुश होते दिखायी देते।

सो जब वह लड़की अपनी टर्कियों को ले कर जाती तो उन लोगों से बात करती हालॉकि उसको यही पता नहीं था कि वह जो कुछ भी कह रही थी उसे वे लोग समझ भी पा रहे थे या नहीं। पर उसको लगा कि शायद वे उसको उससे भी ज़्यादा समझ रहे थे जो वह उनसे कह रही थी।

क्योंकि चौथे दिन जब मैट्सेक के लोग जूनी गॉव चले गये और वह लड़की वहॉ अपनी टर्कियों के साथ अकेली रह गयी तो एक नर टर्की अपनी पूॅछ का पंखा और पंखों का स्कर्ट बना कर शान से शरमाता और फूलता हुआ वहॉ आया और अपनी गरदन आगे बढ़ाता हुआ बोला —

"ओ मॉ, हमको मालूम कि तुम क्या सोच रही हो और हमको सचमुच में तुम्हारे ऊपर दया आती है। हम भी चाहते हैं कि तुम भी मैट्सेक के दूसरे लोगों की तरह से इस नीचे वाले शहर में इस त्यौहार का आनन्द लो।

रात को जब तुम हमको हमारे बाड़े में सुरक्षित रूप से बन्द कर जाती हो तो वहॉ हम लोग बात करते हैं कि हमारी यह मॉ भी इन सब चीज़ों का आनन्द उठाने के लायक है जैसे कि मैट्सेक के दूसरे लोग उठाते हैं या फिर ये जूनी लोग उठाते हैं।

अब तुम मेरी बात सुनो क्योंकि यह मैं अपने झुंड के सभी बड़े लोगों की तरफ से तुमसे कह रहा हूॅ।

अगर तुम हमको इस शाम को यहॉ से जल्दी ले जाओ तो उस समय वहॉ नाच अपनी पूरी शान पर होगा और लोग भी सबसे ज़्यादा खुश होंगे तो हम तुमको बहुत सुन्दर बनाने और तुमको बहुत अच्छे कपड़े पहनने में तुम्हारी सहायता कर सकते हैं।

उस समय तुमको वहॉ कोई भी आदमी या स्त्री या बच्चा जो भी वहॉ आया होगा नहीं पहचान सकेगा।

बल्कि सब नौजवान लोग यही सोचेंगे कि यह लड़की कहॉ से आयी है और नाच के लिये जो वे वेदी[87] के चारों तरफ गोला बनाते हैं उसमें घूमने के लिये तुम्हारा हाथ पकड़ने के लिये लालायित रहेंगे।

मॉ क्या तुम यह नाच देखने जाना पसन्द करोगी। और केवल देखने के लिये ही नहीं

[87] Translated for the word “Altar”. Altar may be of several kinds. It is a place for worship – see its one picture above

बल्कि उस नाच में हिस्सा लेने के लिये भी और लोगों के साथ खुश होने के लिये भी?"

वह गरीब लड़की तो यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी पर कुछ पल ही बाद उसको वह सब बहुत ही स्वाभाविक लगा कि उस नर टर्की ने उससे वैसे ही बात की जैसे कि वह उनसे करती थी।

वह वहीं पास के एक मिट्टी के ढेर पर बैठ गयी और आगे की तरफ झुकते हुए उन टर्कियों से बोली — "मेरी प्यारी टर्कियों, मैं आज कितनी खुश हूँ कि हम आपस में बात कर सकते हैं।

पर तुम मुझसे उन सब चीज़ों की बात क्यों करती हो जो तुम सब जानती हो कि मुझे उनकी बहुत इच्छा है पर मैं उनको किसी भी तरह कर नहीं सकती हूँ?"

यह सुन कर वह बड़ा वाला नर टर्की बोला — "तुम हम पर भरोसा रखो मॉ, क्योंकि जो कुछ मैंने तुमसे अभी कहा वह हमारे बड़े लागों का कहना है और वह झूठ नहीं है।

सो जब हम तुमको बुलायें और मैट्सेक की तरफ जायें तब तुम हमारे पीछे पीछे आ जाना। तब हम तुमको दिखायेंगे कि हम तुम्हारे लिये क्या कर सकते हैं।

बस मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ कि कोई नहीं जानता कि उस नाच में जाने के मौके पर जो हम तुमको देंगे उसके लिये कितनी खुशकिस्मती तुम्हारा इन्तजार कर रही है अगर तुम उस खुशी का बिना किसी लगाव के आनन्द लो तो।

पर अगर तुम उस खुशी में हम दोस्तों को भूल जाओगी तो फिर यह सब तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है कि तुम्हारा फिर क्या होता है।

क्योंकि तब हम यह सोचेंगे — "देखो यह हमारी मॉ को जो हालॉकि बड़ी दयावान और गरीब है उसको इस गरीबी की ज़िन्दगी ही मिलनी चाहिये थी।

क्योंकि अगर वह ज़्यादा अमीर हो जाती तो वह खुद भी दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करती जैसा कि दूसरे अमीर लोग आज उसके साथ करते हैं।"

लड़की उस टर्की पर कि वे उसके लिये क्या कर सकती हैं उस पर कुछ अविश्वास करते हुए पर फिर भी यह चाहते हुए कि उनका कहना सच हो, बोली — "ओ मेरी टर्कियों, उसके लिये तुम बिल्कुल मत डरो। तुम लोग जैसा कहोगी मैं वैसा ही करूॅगी और तुम्हारा कहा मानूॅगी।"

सूरज ढलना शुरू होने ही वाला था कि टर्कियों ने अपने आप ही घर की तरफ लौटना शुरू कर दिया और वह लड़की खुशी खुशी उनके पीछे पीछे चलने लगी।

उन टर्कियों को अपना घर मालूम था सो वे अपने घरों की तरफ दौड़ पड़ीं और उनमें घुस गयीं।

उनके नंगे पैर वाले बच्चे और बड़े नर टर्कियों ने भी उस लड़की से कहा — "आओ हमारे घर में आओ।" सो वह लड़की उनके घर में चली गयी।

उस नर टर्की ने कहा — "आओ यहाँ बैठो और एक एक कर के मुझे और मेरे साथियों को अपने कपड़े दो। हम देखते हैं कि हम इनको नया बना सकते हैं या नहीं।"

लड़की ने एक एक कर के अपने कपड़े उतारने शुरू किये। उसने सबसे पहले अपना ऊपर पहना हुआ फटा हुआ शाल[88] उतारा जो उसके कन्धों पर पड़ा हुआ था और बोलने वाले टर्की के सामने जमीन पर फेंक दिया।

उस नर टर्की ने उस कपड़े को अपनी चोंच में ही लपक लिया और उसको जमीन पर फैला दिया। वह उसमें अपनी चोंच मारता रहा। फिर वह उसके ऊपर चला और अपने पंख नीचे करते हुए उसके ऊपर शान से आगे पीछे चला।

फिर उसने उसको अपनी चोंच में उठा कर और उस पर चलते हुए उस पर हवा फेंकते हुए उसको उस लड़की के सामने रख दिया। अब वह एक सूती सफेद रंग का कढ़ा हुआ शाल बन गया था।

[88] Translated for the word "Mantle". It can be of ankle length also. See its one size here above.

उसके बाद एक और नर टर्की आया तो उस लड़की ने अपनी पोशाक का दूसरा हिस्सा फेंका। फिर तीसरा, फिर चौथा और वह तब तक फेंकती रही जब तक उसने अपनी पोशाक के सारे हिस्से नहीं फेंक दिये।

अब उसकी पोशाक के सारे हिस्से इतने सुन्दर हो गये थे जैसे कि मैट्सेक में उसकी मालकिनों के पास थे। उसके उन कपड़ों को पहनने से पहले टर्कियों ने गाते हुए और उसको अपने पंखों से छूते हुए उसके चारों तरफ चक्कर काटे।

इसके बाद उसकी खाल इतनी साफ चिकनी और चमकीली हो गयी जितनी कि किसी अमीर आदमी की सुन्दर बेटी की हो सकती थी।

उसके बाल बहुत मुलायम और लहर वाले हो गये। उसके गाल भर गये और उनमें गड्ढे पड़ गये। उसकी ऑखें खुशी से नाचती सी दिखायी देखने लगीं।

आज उसने टर्कियों का कमाल देखा कि वे क्या कर सकती थीं और उनकी बातें कितनी सच थीं।

आखीर में एक बूढ़ा नर टर्की आया और बोला — "अब तुम्हारे अन्दर बस एक यही कमी है कि तुम केवल वह कीमती गहने नहीं पहने हो जो केवल वही लोग पहनते हैं जिनके पास बहुत सारी चीज़ें होती हैं, ओ मॉ।

सो ज़रा ठहरो। हमको मालूम है और हमने बहुत सारी ऐसी कीमती चीज़ें इकट्ठी कर ली हैं। वे बहुत छोटी भी हैं पर बहुत कीमती भी हैं। समय के साथ साथ आदमी और स्त्रियॉ उन चीज़ों को भूल चुके हैं।"

कह कर उसने अपने पंख फैलाये और अपना सिर पीछे की तरफ फेंकते हुए जमीन पर गोल गोल घूमा, अपनी दाढ़ी अपनी गरदन पर डाली और खॉसना शुरू किया तो उसकी चोंच में एक हार आ गया। इसी तरह एक दूसरे टर्की ने कान के झुमके निकाले।

यह तब तक चलता रहा जब तक उस लड़की के पास पुराने दिनों की एक अमीर लड़की के पहनने लायक गहने नहीं हो गये। उन टर्कियों ने वे सब गहने उस लड़की के पैरों के पास ला कर रख दिये।

उस लड़की ने वे सब गहने पहन कर टर्कियों को बार बार बहुत बहुत धन्यवाद दिया और चलने के लिये तैयार हुई तो टर्कियों ने कहा — "ओ मॉ, तुम अपना छोटा वाला दरवाजा[89] खोल कर रखना क्योंकि कौन जानता है कि जब तुम्हारी किस्मत बदले तब तुमको टर्कियॉ याद रहें या नहीं।

सो अगर तुमको इस बात की शरम नहीं आये कि तुम टर्कियों की मॉ रह चुकी हो तो तुम वह दरवाजा खोल कर रखना।

[89] Translated for the word "Wicket"

पर तुम इतना जान लो कि हम तुमको बहुत प्यार करते हैं और तुम्हारे लिये अच्छी किस्मत की इच्छा रखते हैं। हमारी एक बात और याद रखना कि वहॉ बहुत देर तक नहीं रहना।"

लड़की बोली — "मैं हमेशा तुम्हारी इस बात को याद रखूँगी ओ मेरी टर्कियों।" कह कर वह नदी की तरफ वाले रास्ते पर भाग गयी जो जूनी शहर की तरफ जाता था।

जब वह वहॉ पर आयी तो वहॉ से वह शहर के पश्चिमी तरफ गयी। वह रास्ता काफी दूर तक, नाच के मैदान तक, ढका हुआ बनाया गया था। इसी रास्ते पर चल कर वह नाच के मैदान तक आ पहुँची थी।

मैदान तक पहुँचते ही वहॉ पर मौजूद लोग उसको देखने लगे और उस भीड़ में फुसफुसाहट दौड़ गयी – उसकी सुन्दरता और उसकी पोशाक की तारीफ की फुसफुसाहट। वहॉ हर आदमी एक दूसरे से यही पूछ रहा था कि यह सुन्दर लड़की कहॉ से आयी है।

वह वहॉ बहुत देर तक अकेली नहीं खड़ी रही। वहॉ नाच के सरदार जो अपने बहुत शानदार पोशाक पहने हुए थे जल्दी से उसके पास आ गये और उन्होंने उससे नाच की तैयारियों के अधूरेपन के लिये माफी मॉगी। हालॉकि उनका नाच का वह इन्तजाम बिल्कुल पूरा था।

उन्होंने उसको उन नौजवानों लड़कों और लड़कियों के साथ नाचने के लिये बुलाया जो वहॉ बाजार के बीच में गोले में संगीत बजाने वालों के चारों तरफ नाच रहे थे।

कुछ शरमाते हुए, कुछ मुस्कुराते हुए, कुछ बाल अपनी ऑखों पर लाते हुए वह लड़की उस गोले में नाचने के लिये घुसी। वहॉ नाच रहे सबसे अच्छे नौजवानों में आपस में यह होड़ लग गयी कि उस लड़की के साथ कौन नाचेगा।

हर नौजवान यही कह रहा था "मैं उसके साथ नाचूॅगा, मै उसके साथ नाचूॅगा।"

लड़की बहुत खुश थी उसको अपने पैर बहुत खुश खुश लग रहे थे और संगीत के साथ ही उसकी सॉस भी तेज़ी के साथ चल रही थी। उसका सारा शरीर गरम हो गया था। वह नाचती रही नाचती रही जब तक कि सूरज पश्चिम में नीचे नहीं चला गया।

पर अफसोस इस खुशी में वह टर्कियों को तो भूल ही गयी। और अगर उसने उनके बारे में सोचा भी तो उसने केवल अपने मन में सोचा —

"यह कैसे हो सकता है कि मैं अपनी टर्कियों की बात मान कर अपने इस सबसे ज़्यादा कीमती पल छोड़ कर यहॉ से चली जाऊॅ। मैं अभी यहॉ पर थोड़ी देर और ठहरूॅगी और जब सूरज डूब जायेगा तभी मैं टर्कियों के पास जाऊॅगी।

ये लोग तो जान ही नहीं पायेंगे कि मैं कौन हूँ। फिर मेरे पीछे जब ये लोग मेरे बारे में बात करेंगे कि "वह लड़की कौन थी जो इन के साथ नाची थी।" तो मुझे उनकी बातों को सुनने में ही कितना मजा आयेगा।" सो समय बीतता रहा और वह लड़की नाचती रही।

फिर दूसरे नाच की घोषणा हुई, फिर तीसरे की और इस तरह लोगों ने उसको आराम ही नहीं लेने दिया। वे उसको हर नाच में शामिल कर लेते थे जो वे वहाँ बाजार के बीच में गोले में संगीत बजाने वालों के चारों तरफ कर रहे थे।

आखिर सूरज डूब गया और नाच भी बस खत्म होने ही वाला था कि अचानक वह लड़की नाच को वहीं बीच में छोड़ कर भाग ली। क्योंकि वह बहुत तेज़ भागती थी सो वह अपने गाँव वालों से भी आगे भाग गयी।

इससे पहले कि कोई यह जान पाता कि वह कौन थी उसने जल्दी से नदी पार की और कोई यह नहीं जान सका कि वह किस रास्ते से चली गयी।

इस बीच जब उसे लौटने के लिये देर हो गयी तो सारे टर्की सोचने लगे कि उनकी माँ कहाँ रह गयी। वह तो अभी तक वापस ही नहीं आयी।

इन्तज़ार करते करते एक बूढ़ा नर टर्की दुखी मन से बोला — "हम यही सोच रहे थे कि वह हमको भूल जायेगी और इसी लिये

वह इससे ज़्यादा अच्छी चीज़ों के लायक है भी नहीं जो इस समय उसके पास हैं।

चलो अब हम पहाड़ों पर चलते हैं और अब इस कैद से बाहर निकलते हैं क्योंकि हमको नहीं लगता कि हमारी यह मॉ उतनी अच्छी और सच्ची है जितना कि हम सोचते थे।"

ऐसा कह कर उसने सब टर्कियों को ज़ोर ज़ोर से आवाज लगा कर बुलाना शुरू कर दिया। वे सब टर्की अपने अपने पिंजरों से बाहर निकल कर कौटनवुड[90] की घाटी की तरफ भाग लीं। वहॉ से वे जूनी शहर से हो कर गरज पहाड़ के चारों तरफ हो कर घाटी में ऊपर तक पहुॅच गयीं।

उधर वह लड़की हॉफती हुई उस छोटे दरवाजे के पास आ पहुॅची और उसने अन्दर झॉका तो देखा कि वहॉ तो एक भी टर्की नहीं थी। उनको पकड़ने के लिये उनका पीछा करती करती वह घाटी के ऊपर की तरफ भागी पर वे तो उससे बहुत आगे थीं।

काफी देर तक भागने के बाद उसको उनकी आवाजें सुनायी पड़ीं। वह दोगुनी तेज़ी से भागी और आखिर उनको पकड़ ही लिया। वे गाती जा रहीं थीं —

नदी के ऊपर की तरफ, टो टो; नदी के ऊपर की तरफ, टो टो; गाओ, ये ये
नदी के ऊपर की तरफ, टो टो; नदी के ऊपर की तरफ, टो टो; गाओ, ये ये
ओह हमारी मॉ बीच वाली जगह गयी है नाचने के लिये

[90] Cottonwood is kind of massive shady tall tree, 20-40 feet tall, and with a very wide trunk found in whole Eastern USA. There were many such trees there therefore it was called Cottonwood Valley.

इसलिये अगर वह वहॉ बेकार घूमती है, मेसा की घाटी में, उसके ऊपर के मैदानों में हम सब भाग गयीं हैं
गाओ, ये ये हुली हुली; गाओ, ये ये टौट टौट टौट; टौट टौट टौट टौट टौट टौट

यह सुन कर लड़की ने टर्कियों को कई बार पुकारा पर सब बेकार। वे तो बल्कि अपने पंख फैला कर और अपना गाना गाती हुई और ज़्यादा तेज़ी से भागती चली गयीं और फिर वे मैदान के ऊपर उड़ गयीं।

उस गरीब धूल और पसीने से भरी टर्की लड़की ने अपने हाथ ऊपर किये और नीचे अपनी पोशाक की तरफ देखा तो देखा कि उसकी सुन्दर पोशाक तो उसके पुराने कपड़ों में बदल चुकी थी। वह तो अब वही गरीब टर्की लड़की हो गयी थी जो वह पहले थी।

दुखी, नाउम्मीद और थकी हुई वह गरीब टर्की लड़की मैट्सेक वापस लौट आयी।

सो उन पुराने दिनों में ऐसा ऐसा हुआ तो अगर तुम मेसा की घाटी[91] के ऊपर की तरफ के रास्ते में पड़े पत्थर देखो तो वे टर्कियों और दूसरे लोगों के जाने के निशान हैं। ये दूसरे लोग उनके गीत हैं जो उस समय वे टर्कियॉ गा रही थीं।

वे गीत उन पत्थरों में खुदे हुए हैं और जूनी पहाडों के चारों तरफ उनकी सीमा पर के मैदानों में भी हैं क्योंकि उन दिनों टर्की वहॉ और जगहों के मुकाबले सबसे ज़्यादा पायी जाती थीं।

[91] Canyon of Mesa

आखिर देवता भी तो आदमियों के साथ वही करते हैं जिनके वे लायक होते हैं। अगर कोई आदमी दिल से, आत्मा से और देखने से गरीब है तो वह अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिनों तक गरीब ही रहेगा।

14 टर्की का झुंड[92]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी भी उत्तरी अमेरिका के आदिवासी लोगों की कहानियों से ली गयी है। ये आदिवासी लोग कोलम्बस के इस नयी दुनियॉ की खोज से पहले यहॉ रहते थे, यानी सन् **1492** से पहले।

उन लोगों में बहुत सारी जनजातियॉ थी जिनमें एक जनजाति थी जूनी। यह कहानी भी उन्हीं लोगों में कही सुनी जाती है। उनकी यह कहानी सन् **1918** में प्रकाशित की गयी थी।

बहुत पुराने समय में क्याकीमा[93] में एक लड़की रहती थी जो अपना सारा समय टर्कियों[94] की देख भाल में गुजारती थी।

उसने कभी अपनी बहिनों के लिये कोई काम नहीं किया। क्योंकि किसी ने कभी उसके बाल नहीं सॅवारे थे तो वे एक जंगल की तरह पड़े हुए थे।

उसकी बहिनें उससे कहतीं कि वह कुछ खाना पका ले। कभी वे उससे पूछतीं कि वह टर्कियों को इतना

---

[92] The Turkey Herd – a fairy tale from the USA (Native American – Zuni tale), North America.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Translated and edited by DL Ashliman.
Charles Perrault took it from "Pueblo-Indian Folk-Tales, Probably of Spanish Provenience," by Elsie Clews Parsons. in *Journal of American Folklore* vol. 31, no. 120 (April - June 1918), pp. 234-35.
Elsie Clews Parsons took it from – "Tsatiselu of Zuni".

[93] Kyakima – a name of a place in the USA

[94] Turkey is a big bird. It is normally killed on Christmas to be cooked as a delicacy dish. See its picture above.

प्यार क्यों करती है? पर वह उनको उनकी किसी बात का कोई जवाब नहीं देती।

बाद में जब उसकी बहिनें खाना बना लेतीं तो वह अपनी डबल रोटी उठाती और फिर अपनी टर्कियों के पास चली जाती।

एक बार मैट्साकी[95] में तोता नाच[96] हो रहा था और वहाँ लोग तोता नाच नाच रहे थे। यह नाच वे तीसरी बार नाच रहे थे तो उस टर्की लड़की ने अपनी टर्कियों से कहा — "ओ छोटी बहिनों।"

टर्कियाँ बोलीं — "क्या।"

लड़की बोली — "मुझे वह नाच देखना है।"

टर्कियाँ बोलीं — "तुम तो वहाँ जाने के लिये बहुत गन्दी हो।"

लेकिन वह फिर बोली — "पर मुझे वह नाच देखना है।"

इस पर टर्कियाँ बोलीं — "चलो इसके सिर की जुऐं[97] खाते हैं।" तो हर टर्की ने उसके सिर में से जुऐं खायीं।

फिर एक बड़ी टर्की बहिन ने अपने पंख फड़फड़ाये तो हवा में से एक जोड़ी स्त्रियों के पहनने के जूते नीचे गिर पड़े। फिर उसकी छोटी टर्की बहिन ने अपने पंख फड़फड़ाये तो एक कम्बल की पोशाक हवा में से नीचे गिर पड़ी।

---

[95] Matsaki (or Matsake) – an old name of the modern town Salt Lake City in Utah State of the USA

[96] Translated for the word "Lapalahakya" Dance. Lapa (Parrot), Lahakya (Tell)

[97] Translated for the word "Louse". Louse (its plural is Lice) is a very tiny insect which normally grows on skull of human beings and in fur on other animals. See its picture above.

फिर एक और बड़ी टर्की बहिन ने अपने पंख फड़फड़ाये तो एक कमर की पेटी नीचे गिर पड़ी। फिर एक और छोटी टर्की बहिन ने अपने पंख फड़फड़ाये तो एक पिटोन हवा में से नीचे गिर पड़ा। एक और टर्की ने अपने पंख फड़फड़ाये तो बालों में बॉधने वाला बैंड नीचे गिर पड़ा।

एक टर्की ने उस लड़की से पूछा — "तुमको यही सब तो चाहिये था न?"

लड़की बोली "हॉ" और उसने उन सबको पहन लिया। कुछ टर्कियों ने उसके बाल ठीक किये। वह लड़की बोली — "मैं शाम होने से पहले ही वापस आ जाऊॅगी।"

फिर वह अपने घर गयी। वहॉ जा कर उसने कपड़े का एक छोटा सा थैला बनाया। उसमें अपना खाना रखा और मैट्साकी नाच देखने के लिये चल दी।

उसके जाने के बाद उसकी बहिनों ने आपस में पूछा — "क्या वह नाच देखने गयी है?"

एक बहिन बोली — "हॉ वह नाच देखने गयी है।"

दूसरी बोली — "पर वहॉ जाने के लिये तो वह बहुत गन्दी है। ऐसे वह कैसे गयी?"

जब वह मैट्साकी पहुॅच गयी तो वह वहॉ जा कर खड़ी हो गयी। जो आदमी वहॉ नाच करा रहा था उसने उससे पूछा कि क्या वह भी नाचना पसन्द करेगी।

उसने हॉ कर दी तो वह वहॉ सारा दिन नाचती रही। जब सूरज ढलने लगा तो उसे याद आया कि उसको तो वहॉ से जल्दी जाना था सो वह भाग कर टर्कियों के पास आने लगी।

उधर जब वह लड़की समय से नहीं आयी तो टर्कियों ने कहा — "अब हमको यहॉ नहीं रहना चाहिये क्योंकि अब हमारी बहिन हमको प्यार नहीं करती।" कह कर वे वहॉ से चली गयीं।

जब वह लड़की वहॉ आयी तो उसने देखा कि वहॉ तो कोई टर्की नहीं थी। वे सब एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर बैठी थीं और गा रही थीं।

क्याना टो टो, क्याना टो टो, क्याना टो टो ये, उली उली उली टो टो टो

जब उन्होंने उस लड़की को नीचे देखा तो वे बड़ी तेज़ी से नीचे उड़ कर अपने रास्ते पर चली गयीं। वहॉ उन्होंने एक झरने[98] पर पानी पिया। उनके रास्ते वहॉ पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारों तरफ से आते थे। पानी पी कर वे फिर एक ऊॅची चट्टान पर जा कर बैठ गयीं और वहॉ बैठ कर फिर से गाने लगीं —

क्याना टो टो, क्याना टो टो, क्याना टो टो ये, उली उली उली टो टो टो

इसी लिये उस चट्टान पर आज भी बहुत सारी जंगली टर्कियॉ पायी जाती हैं।

[98] Translated for the word "Spring".

पर जब वह लड़की क्याकीमा तक आयी तब तक वे फिर वहॉ से जा चुकी थीं लेकिन उसको पता चल गया था कि उन्होंने पानी कहॉ पिया था क्योंकि उसने उनके पंजों के निशान देख लिये थे सो उसने उनका पीछा किया।

पर उसको टर्कियॉ नहीं मिलीं तो वह रोती हुई घर आ गयी।

उसकी बहिनों ने कहा — "रो मत। शायद तुम समय पर नहीं लौटीं इसी लिये। तुम उनको प्यार नहीं करती थीं इसी लिये शायद तुम समय पर भी नहीं लौटीं।"

तबसे वह लड़की घर में रहने लगी और अपनी बहिनों के लिये खाना बनाने लगी।

15 इन्डियन सिन्डरैला[99]

सिन्डरैला की यह कहानी भी उत्तरी अमेरिका में रहने वाले आदिवासी लोगों की कहानियों से ली गयी है। ये आदिवासी लोग कोलम्बस के इस नयी दुनियॉ की खोज से पहले यहॉ रहते थे, यानी सन् **1492** से पहले।

कोलम्बस जब यहॉ आया तो उसने इन लोगों को "इन्डियन्स" पुकारा क्योंकि वह इन्डिया यानी भारत का समुद्री रास्ता ढूँढने निकला था और धरती के इस टुकड़े पर आ निकला था।

सो जब उसने यह जमीन देखी तो उसको लगा कि वह इन्डिया आ गया सो उसने यहॉ के रहने वालों को "इन्डियन्स" का नाम दे दिया। तभी से यहॉ के ये आदिवासी इन्डियन्स कहलाते हैं।

इन लोगों में बहुत सारी जनजातियॉ थी जिनमें एक जनजाति थी जूनी। यह कहानी भी उन्हीं लोगों में कही सुनी जाती है। उनकी यह कहानी सन् **1920** में प्रकाशित की गयी थी।

---

[99] The Indian Cinderella – a fairy tale from the USA (Native American – Zuni tale), North America.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault
Translated and edited by DL Ashliman.
Charles Perrault took it from Canadian Wonder Tales. By Cyrus Macmillan. London: John Lane. 1920. pp. 116-19.

एक बार बहुत पुराने समय में अन्ध महासागर[100] के किनारे एक चौड़ी सी खाड़ी के पास एक बहुत बड़ा इन्डियन[101] लड़ने वाला रहता था।

क्योंकि ग्लूसकैप[102] उसका बहुत अच्छा दोस्त था तो ऐसा कहा जाता है कि वह उसकी बहुत सहायता करता था। उसने उसके लिये बहुत काम किये थे।

पर यह कोई नहीं जानता कि उसके पास अपनी एक बहुत ही आश्चर्यजनक और बड़ी अजीब सी ताकत थी। और वह थी "न दिखायी देखने की ताकत"[103] यानी अदृश्य हो जाने की ताकत।

इस ताकत के साथ वह दुश्मनों के साथ उनको न दिखायी दे कर उनके साथ रह सकता था और उनकी चालों के बारे में जान सकता था।

वह लोगों में "अदृश्य तेज़ हवा" के नाम से मशहूर था और अपनी बहिन के साथ समुद्र के किनारे एक तम्बू में रहता था। उसकी बहिन भी उसके कामों में उसकी बहुत सहायता करती थी।

---

[100] Atlantic Ocean

[101] Here Indian means those people who are native to North American continent.

[102] Glooskap – or Glooscap (also spelled Gluskabe, Gluskabi, Kluscap, Kloskomba, or Gluskab) is a legendary figure of the Wabanaki Native Americans located in Maine State of the USA and Atlantic Canada. He is primarily known as the Creator. Their stories were first record by Reverend Silas Tertius Rand and then by Charles G Leland in the 19th century.

[103] The Power of Being Invisible

बहुत सारी लड़कियॉ उससे शादी कर के खुश होतीं और बहुत सारे लोग उसको ढूँढते रहते क्योंकि वह बहुत बड़े बड़े ताकत वाले काम करता रहता था।

सबको यह मालूम था कि वह उस लड़की से शादी करेगा जो जब वह रात को घर लौट कर आयेगा तो सबसे पहले उससे मिलने आयेगी। इसके लिये बहुत लड़कियों ने कोशिश की पर एक को इस काम में कामयाब होने में बहुत देर लगी।

अब क्योंकि वह छिपा हुआ रहता था तो हर लड़की उससे शादी करने की वजह से झूठ बोल देती थी कि उसने उसको देख लिया था जबकि ऐसा नहीं था।

उस तेज़ हवा ने उन सब लड़कियों के साथ जो भी उससे शादी करना चाहती थीं उनकी सच्चाई का इम्तिहान लेने की एक होशियारी की चाल चली।

हर शाम जब सूरज ढल जाता तो उसकी बहिन उस लड़की के साथ घूमने के लिये समुद्र के किनारे चली जाती जो उससे शादी करना चाहती थी।

वह तेज़ हवा बाकी सबसे तो अदृश्य रह सकता था पर उसकी बहिन उसको हमेशा देख सकती थी।

जब वह धुँधलके के समय काम से घर वापस आता तो उसकी बहिन तो उसको देख लेती पर वह लड़की जो उससे शादी करना चाहती वह उसको नहीं देख सकती थी।

सो वह उस लड़की से पूछती कि क्या वह उस तेज़ हवा को देख सकती थी। और हर लड़की झूठ बोल देती कि "हॉ मैं उसे देख सकती हूँ।"

इस पर उसकी बहिन पूछती — "अच्छा तो यह बताओ वह अपनी स्ले[104] किससे खींच रहा है?"

कोई कहती कि "वह मूज़[105] की खाल से खींच रहा है।" तो कोई दूसरी कहती कि "वह डंडे से खींच रहा है।" तो कोई तीसरी कहती कि "वह रस्सी से खींच रहा है।"

और इस तरह से उसकी बहिन यह जान जाती कि वे सब झूठ बोल रही थीं क्योंकि उन सबके जवाब तो बस भॉपने वाले ही होते थे क्योंकि वे उसको देख तो सकती नहीं थीं। और वह तेज़ हवा ऐसी किसी झूठ बोलने वाली लड़की से शादी कर नहीं सकता था।

उसी गॉव में एक बड़ा सरदार रहता था जिसकी तीन बेटियॉ थीं। उन लड़कियों की मॉ तो बहुत पहले ही मर गयी थी और

---

[104] A wheelless snow vehicle which is used by the people living in icy regions. It just slips on the ice and normally is drawn by two or four powerful dogs or horses. See its picture above.

[105] The moose (North America) or elk (Eurasia) is the largest extant species in the deer family. Moose are distinguished by the palmate antlers of the males; other members of the family have antlers with a "twig-like" configuration. Moose typically inhabit in forests of the Northern Hemisphere in temperate to subarctic climates. See its picture above.

उसकी सबसे छोटी वाली बेटी अपनी दोनों बड़ी बहिनों से काफी छोटी थी।

उसकी वह छोटी बेटी बहुत सुन्दर और नम्र थी और उसको सब बहुत प्यार करते थे। उसके इन्हीं गुणों की वजह से उसकी दोनों बड़ी बहिनें उससे बहुत जलती थीं। वे उसकी सुन्दरता सहन नहीं कर पाती और उसके साथ बड़ी बेरहमी का बरताव करती थीं।

वे उसको फटे कपड़े पहनने को देतीं ताकि वह बदसूरत दिखायी दे। उन्होंने उसके लम्बे काले बाल काट डाले थे। उन्होंने उसका सुन्दर चेहरा भी जले हुए कोयलों से दाग धब्बे वाला कर दिया था ताकि वह बदसूरत दिखायी देखने लगे।

पिता के पूछने पर उन्होंने पिता को झूठ बोल दिया कि यह सब उसने खुद ही किया था पर वह छोटी लड़की बहुत धीरज वाली थी। उसने धीरज रखा, नम्र रही और शान्ति से अपना काम करती रही।

और दूसरी लड़कियों की तरह से इस सरदार की दोनों बड़ी बेटियों ने भी तेज़ हवा को जीतने की कोशिश की ताकि वे उससे शादी कर सकें पर सब बेकार।

एक शाम को सूरज ढल जाने के बाद वे दोनों बड़ी बेटियॉ तेज़ हवा की बहिन के साथ समुद्र के किनारे घूम रही थीं और तेज़ हवा के आने का इन्तजार कर रही थीं।

तेज़ हवा जल्दी ही अपना दिन भर का काम खत्म कर के आ गया तो उसकी बहिन ने उन दोनों बहिनों से पूछा — "क्या तुम उसको देख सकती हो?"

दोनों ने झूठ बोल दिया —"हॉ मैं देख सकती हूँ।"

बहिन ने फिर पूछा — "अच्छा तो बताओ कि उसके कन्धे की पट्टी किस चीज़ की बनी हुई है?"

दोनों ने भॉप कर जवाब दिया — "गाय की खाल की।"

उसके बाद वे उस तम्बू में घुसीं जहॉ वे तेज़ हवा से उसके शाम का खाना खाने के समय मिलने वाली थीं।

जब उसने अपना कोट और जूते उतारे तब उनको उसके वे कोट और जूते तो दिखायी दिये पर इससे ज़्यादा वे और कुछ नहीं देख सकीं।

इससे तेज़ हवा को भी पता चल गया कि वे झूठ बोल रही थीं सो वह उनसे छिपा ही रहा। वे दुखी हो कर वहॉ से अपने घर चली गयीं।

एक दिन सरदार की सबसे छोटी बेटी ने जो फटे कपड़े पहने रहती थी और जिसका चेहरा जला हुआ था तेज़ हवा को पाने की सोची।

उसने अपने फटे कपड़ों में बिर्च के पेड़ की छाल से पैबन्द लगाये, कुछ गहने पहने जो उसके पास थे और तेज़ हवा से मिलने चल दी जैसे कि पहिले गॉव की दूसरी लड़कियॉ कर चुकी थीं।

यह देख कर उसकी बहिनें उसके ऊपर हॅस दीं और उसको बेवकूफ कहा। जब वह सड़क पर जा रही थी तो सड़क पर चलते लोग भी उसकी पैबन्द वाली फ्राक और उसका जला हुआ चेहरा देख कर हॅस रहे थे।

पर उसने किसी की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और वह सीधी तेज़ हवा के घर चलती चली गयी। तेज़ हवा की बहिन ने उसको बहुत प्यार से घर के अन्दर बुलाया और फिर धुॅधलका होने पर वह उसको भी समुद्र के किनारे घुमाने ले गयी जैसे वह और लड़कियों को ले जाती थी।

जल्दी ही तेज़ हवा अपना दिन भर का काम खत्म कर के अपनी स्ले में घर वापस लौट आया। तो उसकी बहिन ने उस लड़की से पूछा — "क्या तुम उसको देख सकती हो?"

लड़की ने इधर उधर देखा तो किसी को वहॉ न देख कर बोली "नहीं वह तो मुझे कहीं दिखायी नहीं दे रहा।"

बहिन को यह जवाब सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि यह पहली लड़की थी जो सच बोली थी।

कुछ देर बाद उसने उससे फिर पूछा —"क्या तुम उसको अब देख सकती हो?"

लड़की बोली — "हॉ। मैं उसको अब देख सकती हूॅ। वह तो बहुत ही आश्चर्यजनक है।"

बहिन ने पूछा — "वह अपनी स्ले किस चीज़ से खींच रहा है?"

और लड़की ने जवाब दिया — "इन्द्रधनुष से[106]।"

असल में वह लड़की बहुत डर गयी थी।

बहिन ने फिर पूछा — "उसकी कमान की डोरी किस चीज़ की बनी हुई है?"

लड़की ने जवाब दिया — "उसकी कमान की डोरी आकाश गंगा[107] की बनी हुई है।"

तेज़ हवा की बहिन ने सोचा कि क्योंकि यह लड़की सच बोल रही है तो उसके भाई ने उसको अपने आपको जरूर ही दिखा दिया होगा।

बहिन बोली — "तुमने उसको सचमुच में ही देख लिया है।" फिर वह उसको घर ले गयी।

घर ले जा कर उसने उसको नहलाया। उसके चेहरे और शरीर के सारे दाग धब्बे गायब हो गये। उसके बाल बढ़ कर लम्बे और रैवन[108] के पंखों जैसे काले हो गये।

[106] Translated for the word "Rainbow". See its picture above.
[107] Translated for the word "Milky Way"
[108] Raven is a crow-like bird. See its picture above.

फिर उसने उसको बहुत बढ़िया कपड़े और कीमती गहने पहनाये और उसको इस तरह सजा कर उसने उसको उस तम्बू में तेज़ हवा की पत्नी की जगह पर बिठाया।

जल्दी ही तेज़ हवा अन्दर आ गया। वह आ कर उस लड़की के पास बैठ गया और उसको उसने अपनी पत्नी कह कर पुकारा। अगले दिन उन दोनों की शादी हो गयी।

उस लड़की की दोनों बड़ी बहिनें उससे बहुत जलीं। उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि ऐसा क्या हुआ जिससे उनकी वह बदसूरत बहिन उस तेज़ हवा से शादी कर पायी।

पर तेज़ हवा को तो उसकी बहिनों की बेरहमियों के बारे सब कुछ मालूम था सो उसने उन दोनों बहिनों को सजा देने का इरादा कर लिया। अपनी ताकत का इस्तेमाल करते हुए उसने उन दोनों को ऐस्पन के पेड़ों[109] में बदल कर जमीन में गाड़ दिया।

उस दिन से ऐस्पन पेड़ की पत्तियॉ जब भी तेज़ हवा उनके पास आती है तो उसके डर से हमेशा कॉपती रहती हैं। चाहे वह कितनी भी धीरे आये पर फिर भी वे कॉप जाती हैं।

वे इसलिये नहीं कॉपतीं कि तेज़ हवा आ रहा है बल्कि वे इसलिये कॉपती हैं क्योंकि उनको उसकी ताकत और गुस्से का पता

[109] See the Aspen tree image above.

है जो उसने उनके ऊपर बहुत समय पहले उनके अपनी छोटी बहिन के ऊपर बेरहमी का बरताव करने और उससे झूठ बोलने पर दिखाया था।[110]

[110] See the picture of Aspen tree leaf above. It changes many colors in Fall (Autumn) season.

16 छिपा हुआ[111]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के पूर्वीय कैनेडा में रहने वाले आदिवासी इन्डियन्स में कही सुनी जाती है। यह कहानी इससे पहले वाली "इन्डियन सिन्डरैला" कहानी जैसी ही है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक झील के किनारे एक गॉव था जिसमें एक शिकारी रहता था। वह अदृश्य[112] रहता था किसी को दिखायी नहीं देता था इसी लिये उसको लोग "छिपा हुआ" कहते थे। वहॉ सबको यह मालूम था कि जो कोई लड़की उसको देख लेगी वही उसकी दुलहिन बनेगी।

बहुत सी लड़कियों को जो उसके घर तक गयी थीं जो गॉव के दूसरे किनारे पर था उनको आशा थी कि वे उसको देख पायेंगी और उससे शादी कर लेंगी पर ऐसा हुआ नहीं।

उस शिकारी की बहिन का नाम धीरज था वह यह जॉच करती थी कि उनमें से कोई उसको देख पाता है या नहीं पर कई साल निकल गये और कोई उसको देख नहीं पाया।

---

[111] The Hidden One – a Red Indian Cinderella story from Red Indians of North America.
Told by Aaron Shepard. Taken from the Web Site : http://www.aaronshep.com/stories/046.html
Printed in Australia's *School Magazine,* Sept. 1996, and *Cricket,* Oct. 1998.
This story is told and heard in many native Tribes, but this version is from Micmac Tribe of Canada's Nova Scotia, New Brunswick and Prince Edward Island areas.

[112] Translated for the word "Invisible".

उसी गॉव में दो बहिनें भी रहती थीं। उनकी मॉ नहीं थी। उनमें से छोटी वाली बहिन दिल की बहुत अच्छी थी जबकि बड़ी वाली बहिन बहुत जलने वाली और बेरहम थी।

उनका पिता जब शिकार पर चला जाता तो बड़ी वाली बहिन अपनी छोटी बहिन को बहुत तंग करती।

वह उसको नीचे झुका कर उसके चेहरे और बॉहों को आग में से निकाली हुई लकड़ी से जलाती और कहती कि अगर उसने यह सब पिता से कहा तो अगली बार वह उसको और ज़्यादा जलायेगी। छोटी बहिन बेचारी डर के मारे किसी से कुछ भी नहीं कह पाती।

जब उनका पिता शाम को घर आता तो दुखी हो कर पूछता "यह फिर से कैसे जल गयी?"

तो बड़ी बहिन जवाब देती — "पिता जी बेवकूफ है यह। आपके मना करने के बावजूद यह आग से खेल रही थी।"

तो उनका पिता फिर अपनी छोटी वाली बेटी से पूछता — "क्या यह ठीक कह रही है?"

पर वह बस अपने होठ काट कर ही रह जाती कुछ बोल नहीं पाती। कुछ समय बाद उसके शरीर पर बहुत सारे जले के दाग पड़ गये। तो लोग उसको दाग वाले चेहरे वाली कह कर पुकारने लगे।

उसके बाल भी बहुत कम हो गये जिससे उसकी चोटियॉ बहुत पतली और छोटी हो गयीं थी क्योंकि उसकी बहिन ने उसके बाल

काट डाले थे। वह फटे कपड़े पहने घूमती थी और उसके पैरों में जूते भी नहीं होते थे।

पर उसकी बड़ी बहिन उसको कोई ख़ाल नहीं देती थी जिससे वह अपने लिये कोई पोशाक बना सके या जूता बना सके। बल्कि इस बात के लिये वह अपने पिता से बहुत सारे कारण बता देती।

पर उसके पिता को कुछ पता नहीं चल पाता कि ऐसा क्यों और कैसे हो रहा है और वह बेचारा दुख और नाउम्मीदी से सिर हिला कर रह जाता।

एक दिन बड़ी बहिन ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने और सीपी के मोतियों की बनी हुई कई चीज़ें पहिनी और दाग वाले चेहरे यानी अपनी छोटी बहिन से बोली — "तुम्हें पता है कि यह मैं क्या कर रही हूँ। मैं उस छिपे हुए से शादी करने जा रही हूँ। तुम तो उसके बारे में सोच भी नहीं सकतीं।"

उस छोटी दाग वाले चेहरे ने बस अपना सिर झुकाया और चुप ही रही बोली कुछ भी नहीं।

बड़ी बहिन जब गॉव के उस पार उस छिपे हुए के घर पहुँची तो उसकी बहिन धीरज ने उसका स्वागत किया। धीरज बोली — "आओ तुम्हारा स्वागत है। मेरा भाई जल्दी ही शिकार से वापस आता होगा। तब तक तुम मेरा शाम का खाना बनवाने में मेरी सहायता करो।"

सो दोनों शाम का खाना बनाने में लग गयीं और काम करती रहीं जब तक कि सूरज नीचे नहीं चला गया। उसके बाद धीरज उस बड़ी बहिन को झील के किनारे ले गयी।

कुछ देर बाद ही वह झील के किनारे की तरफ इशारा करते हुए बोली — "देखो मेरा भाई आ रहा है। क्या तुम उसे देख पा रही हो?"

उस नौजवान लड़की को कुछ दिखायी नहीं दिया पर उसने बहाना किया और बोली — "हॉ हॉ वह है वहॉ।"

धीरज ने अपनी ऑखें सिकोड़ी और बोली — "अच्छा तो यह बताओ कि उसके कन्धे की पट्टी किस चीज़ की बनी है?"

लड़की ने अन्दाज से कहा — "कच्ची खाल की।"

धीरज बोली — "चलो घर वापस चलें।"

आ कर उन्होंने खाना बनाना खत्म किया ही था कि उनको एक आवाज सुनायी पड़ी — "नमस्ते बहिन।"

यह सुन कर वह नौजवान लड़की तो उछल ही पड़ी। उसने दरवाजे की तरफ देखा पर वहॉ तो उसे कोई दिखायी नहीं दिया।

धीरज ने भी जवाब दिया — "नमस्ते भैया।"

जब वह लड़की इधर उधर देख रही थी तो उसको हवा में एक जोड़ी जूते दिखायी दिये जो एक के बाद एक फर्श पर गिर पड़े।

पल भर के बाद ही उसे आग के पास रखी बिर्च के पेड़ की छाल की तश्तरी में से खाने के कौर उठते दिखायी दिये और फिर वे बीच हवा में ही गायब होते भी दिखायी दिये।

लड़की ने धीरज से पूछा — "हमारी शादी कब होगी?"

धीरज बोली — "कैसी शादी? तुम क्या सोचती हो कि मेरा भाई किसी झूठी और बेवकूफ लड़की से शादी करेगा?"

यह सुन कर वह लड़की वहॉ से रोती हुई चली गयी। अगली सारी सुबह वह बिस्तर में पड़ी रही, रोती रही और सुबकती रही।

तब वह छोटी दागों वाले चेहरे वाली अपनी बहिन के पास आयी और बोली — "मुझे कपड़े ओर जूते बनाने के लिये थोड़ी सी खाल दो। अब उस छिपे हुए के पास जाने की मेरी बारी है।"

यह सुनते ही बड़ी बहिन चिल्लायी — "तेरी मुझसे यह सब कहने की हिम्मत कैसे हुई?"

कह कर वह अपने बिस्तर में से कूद पड़ी और उसको धक्का मार कर फर्श पर गिराते हुए बोली — "क्या तुझको लगता है कि तू वह कर लेगी जिसे मैं नहीं कर सकी? अगर तूने उसे देख भी लिया तो क्या वह तुझ जैसी गन्दी लड़की से शादी करेगा?"

और वह फिर से रोती हुई अपने बिस्तर में गिर पड़ी। वह दाग वाले चेहरे वाली लड़की काफी देर तक वहीं बैठी रही और अपनी बहिन की गुर्राहट और सुबकियॉ सुनती रही।

पर फिर उठते हुए बोली — "अब मेरी बारी है बहिन उस छिपे हुए के पास जाने की।"

यह सुन कर बड़ी बहिन का रोना रुक गया और उसने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा। छोटी बहिन अपने पिता की आलमारी की तरफ गयी उसमें से एक जोड़ी पुराने जूते निकाले और उनको अपने छोटे छोटे पैरों में पहिन कर जंगल की तरफ चल दी।

वहाँ जा कर उसने एक बिर्च का पेड़ ढूँढा, उसकी छाल की एक टुकड़े में एक पट्टी निकाली और उससे अपने लिये कपड़े बनाये। अपने फटे कपड़े उतार कर उसने वे कपड़े पहिन लिये।

फिर वह गॉव में से हो कर जाने लगी।

उसके देख कर एक लड़का चिल्लाया — "अरे इस छोटी दाग वाले चेहरे वाली लड़की की तरफ तो देखो ज़रा। इसने तो पेड़ जैसे कपड़े पहन रखे हैं।"

एक दूसरा नौजवान बोला — "ए दाग वाले चेहरे वाली, ये जूते तुम्हारे लिये काफी बड़े हैं न?"

यह सुन कर एक बुढ़िया बोली — "मुझे तो विश्वास नहीं होता कि यह छिपे हुए के घर जा रही है।"

एक नौजवान स्त्री बोली — "ओ दाग वाले चेहरे वाली, क्या तुमने उसको सुन्दर दिखने के लिये अपने आपको जलाया और अपने बाल काटे?"

उन सबके मजाक और हॅसी की तरफ ध्यान न देते हुए वह दाग वाले चेहरे वाली गॉव के दूसरे किनारे की तरफ छिपे हुए के घर की तरफ चलती रही जब तक वह वहॉ पहुॅच नहीं गयी।

धीरज ने जब उसे आते देखा तो उसको आश्चर्य हुआ पर अपने आश्चर्य को छिपाते हुए उसने उसका स्वागत किया — "आओ तुम्हारा स्वागत है।"

दाग वाले चेहरे वाली ने उसको शाम का खाना बनाने में सहायता की। जब सूरज डूबने लगा तो धीरज उसको झील के किनारे ले गयी।

कुछ समय बाद वह बोली — "मेरा भाई आ रहा है क्या तुम उसे देख पा रही हो?"

दाग वाले चेहरे वाली बोली — "मुझे लगता तो नहीं कि मुझे उधर कोई दिखायी दे रहा है।"

तभी उसकी ऑखें आश्चर्य से चमक उठीं। वह फिर बोली — "हॉ मैं उसको देख सकती हूॅ। पर वह ऐसा कैसे हो सकता है?"

धीरज ने उसकी तरफ उत्सुकता से देखते हुए पूछा — "अच्छा तो यह बताओ कि वह अपने कन्धे पर किस तरह की पट्टी पहने है?"

लड़की बोली — "उसकी कन्धे की पट्टी इन्द्रधनुष की है।"

यह सुन कर धीरज की ऑखें बड़ी हो गयीं।

वह फिर बोली — "और उसके धनुष की डोरी?"

"वह आकाश गंगा की है।"

धीरज मुस्कुरा कर बोली — "चलो घर चलते हैं।"

जब वे घर पहुँचे तो धीरज ने उस दाग वाली लड़की के अजीब से कपड़े उतार दिये और उसके शरीर को एक खास जग के पानी से धोया। इससे उसके सारे दाग साफ हो गये और उसकी खाल चिकनी हो गयी और चमक गयी।

फिर उसने उसके बालों एक जादू की कंघी की जिससे उसके बाल बहुत जल्दी बढ़ गये।

इसके बाद धीरज ने एक बक्सा खोला और उसमें से बहुत ही शानदार शादी वाला एक जोड़ा निकाला।

दागदार चेहरे वाली लडकी ने उस जोड़े को पहना ही था कि एक भारी सी आवाज ने कहा — "नमस्ते बहिन।"

दाग वाले चेहरे वाली ने दरवाजे की तरफ देखा तो देखा कि वहॉ तो एक बहुत सुन्दर नौजवान शिकारी खड़ा था।

धीरज बोली — "नमस्ते भैया। अब तुमको देख लिया गया है।"

छिपा हुआ दाग वाले चेहरे वाली लड़की की तरफ बढ़ा और उसके हाथों को अपने हाथ में ले कर बोला — "सालों से मैं एक ऐसी लड़की का इन्तजार कर रहा हूँ जो साफ दिल की हो और साहसी हो। ऐसी ही कोई लड़की मुझे देख सकती थी। अब तुम ही वह लड़की हो जो ऐसी है सो तुम ही मेरी दुलहिन बनोगी।"

उसके बाद उन दोनों की शादी हो गयी। इस शादी के बाद उस दागदार चेहरे वाली लड़की का नाम प्यारी हो गया। क्योंकि अभी तक वह भी छिपी हुई थी और अब उसे सब देख सकते थे।

17 मिश्र की सिन्डरैला[113]

यह सिन्डरैला की कहानी अफ्रीका महाद्वीप के मिश्र देश की असली कहानी कही जाती है। "सिन्डरैला यूरोप में–2"[114] पुस्तक के दूसरे हिस्से की पहली कहानी जो होरस बाज़[115] ने दूसरे जानवरों को सुनायी थी वह इसी कहानी से ली गयी है।

इस कहानी में सिन्डरैला का नाम राडोपिस[116] है। यह सिन्डरैला की कहानी का सबसे पुराना रूप माना जाता है। यह कहानी सबसे पहले रोम के इतिहासकार स्ट्रैबो[117] ने पहली सदी बीसी में लिखी थी।

बहुत पहले पुराने समय में मिश्र में जहॉ नील नदी का हरा पानी भूमध्य सागर के नीले पानी में मिलता था वहॉ एक लड़की रहती थी जिसका नाम था राडोपिस।

राडोपिस यूनान[118] में पैदा हुई थी पर वहॉ से उसको समुद्री डाकुओं[119] ने उठा लिया और उसको मिश्र ले आये जहॉ उन्होंने उसको दास की तरह से एक आदमी को बेच दिया।

---

[113] The Egyptian Cinderella – a fairy tale from Egypt, Africa.
This story is taken from the Web Site : http://www.aldokkan.com/art/cinderella.htm .
[114] "Cinderella Europe Mein-2". Available from hindifolktales@gmail.com
[115] Horus – Horus is the Falcon-faced son of Egyptian god Osiris and his wife Isis – God of Sky
[116] Rhodopis – pronounced as Ra-doh-pes
[117] Strabo – a Roman historian
[118] Greece – a country in South-Western Europe
[119] Translated for the word "Pirates".

इत्तफाक से जिस आदमी ने उसे खरीदा था वह बहुत ही दयालु था। वह अपना बहुत सारा समय एक पेड़ के नीचे सो कर गुजारता था।

इस वजह से उसको यह पता ही नहीं था कि उसके घर की दूसरी दासियॉ राडोपिस को कैसे चिढ़ाती थीं और कैसे ताने मारती थीं। ऐसा इसलिये भी था क्योंकि वह उन सबसे अलग दिखायी देती थी।

दूसरी दासियों के बाल काले और सीधे थे जबकि उसके बाल सुनहरी और घुँघराले थे। दूसरी दासियों की ऑखें कत्थई थीं जबकि उसकी ऑखें हरी थीं।

दूसरी दासियों की खाल तॉबे की तरह चमकती थी जबकि उसकी खाल का रंग कुछ पीला सा था जो धूप में आसानी से जल जाता था और लोग फिर उसको गुलाबी राडोपिस कहते।

इस जलन की वजह से दूसरी दासियॉ उसको ज़्यादा काम करने को देतीं और सारा दिन उस पर चिल्लाती रहतीं — "जाओ, नदी पर जाओ और कपड़े धो कर लाओ।", "मेरी पोशाक की मरम्मत कर दो।", "बागीचे में से बतखों को भगा दो।" "डबल रोटी बेक[120] कर दो।" आदि आदि।

[120] Baking is a process of cooking food like frying, roasting, boiling etc. In this process the raw food is kept in a hot iron or clay box type closed box for some time, and with that heat the food is cooked. Western bread, biscuits, cake, bun etc western type foods are cooked like this.

इसलिये सिवाय जानवरों के उसका कोई और दोस्त ही नहीं था। उसने चिड़ियों को सिखा रखा था तो वे उसके हाथ से दाना ले कर खा जाती थीं। कभी कोई बन्दर उसके कन्धे पर आ कर बैठ जाता तो कभी कोई बूढ़ा हिप्पोपोटेमस कीचड़ में से निकल कर किनारे पर उसके पास तक आ जाता।

शाम तक अगर वह ज़्यादा थकी हुई नहीं होती तो कभी कभी वह अपने जानवर दोस्तों से मिलने के लिये नदी किनारे चली जाती। अगर उसके अन्दर तब भी ताकत होती तो वह उनके लिये नाचती और गाती।

एक शाम जब वह घूम घूम कर इतने अच्छे से नाच रही थी कि उसके पैर भी जमीन से नहीं छू रहे थे तो उस बूढ़े आदमी की ऑख खुल गयी और उसने उसको नाचते हुए देखा।

उसको राडोपिस का नाच बहुत अच्छा लगा और उसको लगा कि जो लड़की इतना अच्छा नाचती है उसको बिना जूतों के नहीं रहना चाहिये।

बस उसने यही सोच कर तुरन्त ही उसके लिये खास तरह के एक जोड़ी जूते बनवाने का हुक्म दे दिया। उसके यह जूते गुलाब जैसे लाल सुनहरी रंग के थे और उसका तला चमड़े का था।

अब तो दूसरी दासियॉ उसको और भी ज़्यादा नफरत से देखने लगीं और उसके जूतों की वजह से उससे और भी ज़्यादा जलने लगीं।

उसी समय मिश्र के राजा फैरो ने यह घोषणा करवायी कि वह मैमफिस[121] में अपना दरबार लगाने वाला है और मिश्र के सारे लोग वहॉ आ सकते थे।

राडोपिस की बहुत इच्छा हुई कि वह भी दूसरी दासियों के साथ वहॉ जाये क्योंकि उसको मालूम था कि वहॉ बहुत सारा नाच गाना और खाना होगा।

जैसे ही दूसरी दासियॉ अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर और सज धज कर वहॉ चलीं तो उन्होंने राडोपिस को घर में करने के लिये और ज़्यादा काम दे दिया कि जब तक वे लौट कर आती हैं वह यह काम खत्म कर ले।

ऐसा उन्होंने इसलिये किया ताकि वह वहॉ न जा सके।

यह कह कर वे अपनी नाव में बैठ कर फैरो के दरबार में चली गयीं और बेचारी राडोपिस वहीं किनारे पर खड़ी उनको जाते देखती रह गयी।

[121] Memphis was the capital of ancient Lower Egypt and was located about 12 miles South of Cairo. Its ruins can still be seen there. See its location in the map given above.

उनके जाने के बाद उसने नदी पर कपड़े धोने शुरू कर दिये। वह कपड़े धोती जाती थी और दुखी मन से गाती जाती थी — "चादरें धोओ, बागीचे की घास निकालो, अनाज पीसो।"

एक हिप्पोपोटेमस इस छोटे से गीत को सुन रहा था। वह जब इस गीत को सुनते सुनते थक गया तो वह फिर पानी में चला गया। उसके पानी में जाने से जो छींटे उड़े उससे रोडोपिस के जूते भीग गये।

उसने उनको तुरन्त ही उठा लिया और उनका पानी पोंछ कर उनको धूप में सूखने रख दिया। यह कर के राडोपिस फिर अपने काम में लग गयी।

इतने में ही आसमान में काली घटा घिर आयी। उसने ऊपर आसमान की तरफ देखा तो देखा कि एक बाज़ नीचे की तरफ आ रहा था।

उसने उसका एक जूता उठाया और उसको ले कर उड़ गया। राडोपिस तो उसको आश्चर्य से देखती ही रह गयी। उसको मालूम था कि वह होरस बाज़ था जो उसका जूता उठा कर ले गया था। राडोपिस ने अपना बचा हुआ दूसरा जूता उठाया और अपनी जेब में रख लिया।

अब फैरो अहमोज़–1[122] जो अपर मिश्र और लोअर मिश्र दोनों का राजा था अपने सिंहासन पर बैठा हुआ था और अपने दरबारियों

[122] Ahmose I – the Pharaoh of Egypt at that time

को देख देख कर अब तक ऊब गया था। उसका मन कर रहा था कि वह वहॉ से भाग ले और अपने रथ पर चढ़ कर रेगिस्तान में घूमे।

कि अचानक एक बाज़ नीचे उतरा और एक गुलाब जैसे लाल सुनहरी रंग का जूता उसकी गोद में डाल गया। उस जूते को अपनी गोद में देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया।

पर यह सोचते हुए कि वह जूता उसकी गोद में होरस ने डाला था उसने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि सारे मिश्र की लड़कियॉ उस जूते को अपने पैर में पहन कर देखें। वह जूता जिस किसी लड़की के पैर में भी ठीक आ जायेगा वही उसकी रानी बनेगी।

उधर जब तक वे दासियॉ राजा के दरबार में आयीं तब तक राजा का दरबार खत्म हो चुका था और राजा अपने रथ में बैठ कर उस सुनहरे जूते वाली को ढूँढने के लिये निकल पड़ा था।

जमीन पर उस लड़की को ढूँढने के बाद और वहॉ उसको न पाने के बाद उसने अपनी बड़ी नाव बुलवायी और उससे नील नदी में जाना शुरू किया।

जहॉ जहॉ उसको लड़कियॉ मिलतीं वह वहीं अपनी नाव रुकवा लेता और वहॉ की हर लड़की को वह जूता पहना कर देखता।

जैसे ही उसकी वह नाव राडोपिस के घर के मोड़ के पास आयी तो वहॉ रह रहे सब लोगों ने घंटे की और बिगुल की आवाजें सुनी

और जामुनी रंग के मस्तूल लगी हुई नावें देखीं। सब जान गये कि वह शाही नाव थी।

शाही नाव घर के पास आयी देख कर दासियॉ तो किनारे की तरफ भागी गयीं ताकि वे उस जूते को पहन कर देख सकें जबकि राडोपिस एक झाड़ी में छिप गयी।

जब दासियों ने वह जूता देखा तो उन्होंने पहचान लिया कि वह जूता तो राडोपिस का था। पर उन्होंने कहा कुछ नहीं क्योंकि उनके यह कहने से तो उनके रानी बनने का मौका मारा जाता।

बल्कि वे तो खुद ही उस जूते को पहन कर देखने की कोशिश करने लगीं पर वह जूता उनके पैर में तो आया ही नहीं क्योंकि वह तो उनका था ही नहीं।

फैरो ने राडोपिस को झाड़ी में छिपे हुए देख लिया तो उसने उसको भी वह जूता पहन कर देखने के लिये कहा।

उसने अपना छोटा सा पैर उस जूते में घुसाया और फिर अपनी जेब से निकाल कर उसी तरह का दूसरा जूता भी अपने दूसरे पैर में पहन लिया।

यह देख कर फैरो बोला — "यही मेरी रानी बनेगी।"

यह सुन कर दासियॉ चिल्लायी — "पर यह तो एक दासी है। और फिर यह तो मिश्र की भी नहीं है।"

फैरो बोला — "यह तो सारे मिश्र वालों से भी ज़्यादा मिश्र वाली है।

क्योंकि इसकी ऑखें नील नदी के पानी के हरे रंग जैसी हरी हैं। इसका रंग पैपीरस[123] जैसा है और इसकी खाल कमल के फूल जैसी गुलाबी है।" और उसने उससे शादी कर ली।

[123] Papyrus refers to a very thin paper-like material made from the pith of the papyrus plant. Papyrus can also refer to a document written on the sheets of papyrus joined together side by side and rolled up into a scroll – an early form of a book. See its picture above.

18 राडोपिस और उसके सुनहरी जूते[124]

सिन्डरैला जैसी कहानियों में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के मिश्र देश की कहानियों से ली है। यह कहानी इससे पहले वाली कहानी जैसी ही है पर फिर भी उससे अलग है। लो इसको भी पढ़ कर देखो कि यह इससे पहले वाली कहानी से किस तरह अलग है।

राडोपिस की यह कहानी सबसे पुरानी कहानी मानी जाती है। सबसे पहले इस कहानी को यूनान के इतिहासकर स्ट्रैबो[125] ने पहली सदी बीसी में लिखा था।

पर ऐसा कहा जाता है कि यह कहानी स्ट्रैबो से भी पॉच सौ साल पहले हैरोडोटस[126] ने लिखी थी। यह कहानी 19वीं सदी में "मिश्र की सिन्डरैला" के नाम से मशहूर हो गयी।

सुनो ओ जवानों। एक बार ऐसा हुआ कि गुलाबी गालों वाली राडोपिस[127] नदी में नहाने के लिये खजूर के बागीचे में से बाहर आयी।

राडोपिस सुबह की तरह से सुन्दर थी। उसके मुॅह से कभी कोई बुरी बात नहीं निकलती थी। उसके हाथों से कभी कोई बुरा काम

---

[124] Rhodopis and Her Little Gilded Shoes – a fairy tale from Egypt, Africa. This story is taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/stories/rhodopis.html

[125] Greek historian Strabo (64 BC – 23 AD)

[126] Herodotus

[127] Rhodopis – pronounced as "Ra-doh-pes" – name of the girl

नहीं होता था। और उसका माथा सच की चमक से हमेशा दमकता रहता था।

नदी के किनारे लगे हुए पैपीरस के सरकंडों के बीच उसने अपने बिल्कुल सफेद कपड़े और छोटे से सुनहरी जूते उतार कर रखे और फिर अपने पिता नील नदी[128] में धीरे से कूद गयी।

पर जैसे ही वह नील नदी में घुसी कि एक बहुत ही ताकतवर गरुड़[129] उसकी तरफ उड़ता हुआ आया। उसने पैपीरस के पेड़ों के ऊपर चारों तरफ चक्कर काटा तो उसको सोने की चमक दिखायी दी।

उसको देख कर उसने जमीन पर कूद मारी और वहॉ से एक सुनहरी जूता उठा कर वह फिर आसमान में उड़ गया।

अपने जूते को इस तरह से उस गरुड़ को ले जाता देख कर राडोपिस ने चिल्ला कर अपने हाथ आगे किये पर वह गरुड़ तो तब तक कब का रा[130] की चमकीली किरनों में उसकी ऑखों से ओझल हो चुका था।

इत्तफाक से उस समय मैमफिस के शाही शहर में पिटा के मन्दिर[131] के बड़े ऑगन में राजा खुद अपर और लोअर मिश्र के राज्यों का ताज पहने बैठा हुआ लोगों के फैसले कर रहा था।

---

[128] Father Nile River

[129] Translated for the word “Eagle”. See its picture above.

[130] Ra – is the name of the Sun God in Egypt

[131] Temple of Ptah – pronounced as “Pitaah”

उसके सामने जंजीरों से बॅधा हुआ एक किसान लाया गया। टैक्स कलैक्टर ने कहा — "यह आदमी अपना टैक्स, यानी अपनी उपज का दसवॉ हिस्सा, शाही अनाजघर को नहीं दे रहा।"

यह सुन कर वह किसान राजा के पैरों पर गिर पड़ा।

वह बोला — "सत्य और न्याय के देवता आपकी जय हो। मेरा आधा गेहूँ तो कीड़ों ने खा लिया है। बहुत सारे चूहों ने मेरा खेत गन्दा कर दिया है। छोटी छोटी चिड़ियों ने मेरा खेत खराब कर दिया है और बाकी का खेत हिप्पोटेमस ने खा लिया है।

ऐसे समय में टैक्स कलैक्टर अपना शाही टैक्स मॉगने आये हैं। जब मैंने इनसे कहा कि मेरे तो अपने पास अपने ही खाने के लिये मक्का तक नहीं है तो मैं तुझको कहॉ से दूँ?

इस पर आपके शाही अनाजघर के चौकीदार डंडे ले कर आ गये और मुझे जमीन पर गिरा कर मेरे हाथ पैर बॉध कर मुझे घसीटते हुए आपके पास ले आये। मेरी पत्नी और बच्चों को भी इन्होंने जंजीरों से बॉध दिया।

न्याय कीजिये महाराज न्याय कीजिये।"

राजा गुस्से से चमकती ऑखों से उठा और अपने हाथ फैला कर टैक्स कलैक्टर से बोला — "तुमने गरीब को तंग किया है। टैक्स तो उन लोगों के लिये है जो टैक्स दे सकते हैं। तुम आज से मेरी नौकरी से निकाले जाते हो। चले जाओ यहॉ से। और यह आदमी भी अबसे आजाद है।"

तब उसने उन लोगों को बुलाया जिन्होंने उस किसान को पकड़ा हुआ था। उनसे उसने कहा कि वे उसको खोल दें उसको खाना दें पानी दें और उसकी पत्नी और बच्चों को भेंटें दें।

उसने आगे कहा — "मैं किसी छोटे बच्चे को दुखी नहीं होने दूँगा और न ही मैं किसी स्त्री की बेइज़्ज़ती होने दूँगा। ओ किसान जाओ तुम अपने घर सुरक्षित जाओ।

यह सच है कि तुम्हारे पास न तो मक्का है और न ही गेंहू है। पर तुम्हारे पास एक बहुत बड़ा खजाना है – और वह खजाना है वे लोग जो तुमको प्यार करते हैं और तुम्हारी तारीफ करते हैं।"

यह कह कर वह अपनी न्याय वाली सीट में अन्दर धँस कर बैठ गया।

उसकी न तो कोई अपनी पत्नी थी और न ही कोई बच्चा। अभी तक उसको कोई ऐसी लड़की ही नहीं मिली थी जो उसका सिंहासन बाँट सकती और उसके राज काज में सहायता कर सकती।

यह बोलने के बाद अचानक ही एक गरुड़ वहाँ आसमान से उड़ता हुआ आया और लो उसकी चोंच से तो किसी लड़की का सुनहरा जूता राजा की गोद में गिर पड़ा।

राजा ने आश्चर्य सहित उस छोटे से गहने को उठा लिया और एक हाथ की दूरी से उसको अपनी हथेली पर रख कर देखा।

इस आसमान के नीचे ऐसी कौन सी लड़की है जो इतना सुन्दर जूता पहनती है। जब वह उस जूते की तरफ देख रहा था तो उसके

दिमाग में एक ख्याल आया कि जिसका यह जूता होगा वह देखने में कैसी लगती होगी।

और यह सोचते सोचते वह छोटी सी चीज़ उसने अपनी छाती के पास अपने कपड़ों में ठूँस ली।

उसने अपने लोगों से कहा — "अब आज मैं और कोई शिकायत नहीं सुनूँगा। बस।"

उसने उन लोगों को बुलाया जो उसको उसके महल तक ले जाते। वे उसको उसके महल तक ले गये। जब वह अपने महल में पहुँच गया तो उसने वह जूता अपने कपड़ों में से निकाल लिया और उसे बहुत देर तक बड़े ध्यान से देखता रहा।

हर पल वह उसे ज़्यादा और और ज़्यादा अच्छा लगता जा रहा था। जैसे जैसे वह उसको देखता जा रहा था उससे उसको उस पहनने वाली का भी खयाल आता जा रहा था जो उसको पहनती रही होगी।

सोचते सोचते उसने अपने मुख्य लिखने वाले[132] को बुलवाया और उससे कहा — "मेरे लिये एक शाही फरमान लिखो।"

लिखने वाले ने पैपीरस का एक कागज का टुकड़ा निकाला और उस पर कुछ अजीब सी शक्लें और तस्वीरें बनाने लगा।

[132] Chief Scriber

राजा बोला — "लिखो। "मेरे राज्य की हर लड़की इस जूते को पहन कर देखेगी और जिसके पैर में भी यह जूता आ जायेगा वही मेरी रानी बनेगी।"

जब लिखने वाले ने यह फरमान लिख लिया तो वह शहर में गया। एक नौकर उसके आगे आगे एक तकिया ले कर चल रहा था जिस पर वह कीमती जूता रखा हुआ था।

चौराहों पर और दूसरी जगहों पर जहॉ जनता मिलती थी वह लिखने वाला राजा का वह फरमान पढ़ता जा रहा था।

जैसे ही कोई स्त्री उस शाही फरमान को सुनती थी तो वह उस जूते को पहन कर देखने के लिये आ जाती थी। उनमें कुछ बड़े घरों की स्त्रियॉ थी तो कुछ छोटे घरों की स्त्रियॉ थीं। कुछ कुलीनों की लड़कियॉ थीं तो कुछ लोहारों की लड़कियॉ थीं।

कुछ सुनारों की बेटियॉ थीं तो कुछ शीशे का सामान बनाने वालों की बेटियॉ थीं। कुछ अपर मिश्र की स्त्रियॉ थीं ता कुछ लोअर मिश्र की स्त्रियॉ थीं।

पर उनमें से किसी के पैर में भी वह छोटा सा जूता नहीं आया।

दिन गुजरते जा रहे थे और राजा नाउम्मीद होता जा रहा था। ऐसी लड़की का मिलना बहुत मुश्किल लगता जा रहा था जिसका वह जूता हो पर साथ में राजा को यह भी पक्का होता जा रहा था कि ऐसी लड़की कहीं तो है।

और वही लड़की उसकी रानी बनने के लायक है।

आखिर एक सुबह उस मुख्य लिखने वाले के पास वही किसान आया जिसका टैक्स राजा ने एक बार छोड़ दिया था।

वह उसके पास आ कर उसके कान में फुसफुसाया — "तुम रेगिस्तान में बड़े पिरौमिडों के पास लगे स्फिन्क्स[133] के पास जाओ। वहाँ सुबह सुबह जब दिन निकलता है तो एक लड़की आती है जो सुबह ही की तरह सुन्दर है।"

लिखने वाले ने तुरन्त ही यह खबर राजा को सुनायी। तो राजा अगली सुबह जैसे ही सुबह के सूरज की किरणें खजूर के पेड़ों के बीच में से झाँकतीं उससे पहले ही वह जनता की निगाहों से बचता हुआ अपना शाल ओढ़े अपने लिखने वाले के साथ नील नदी की हरी भरी घाटी के उस पार उसके रेतीले किनारे की तरफ चला गया जहाँ तीन पिरैमिड खड़े हुए थे।

वहीं पर एक बहुत बड़ा स्फिन्क्स भी खड़ा हुआ था जिसका शरीर शेर का था और सिर आदमी का था। उसको एक ठोस चट्टान में से काटा गया था और वह रेत के ऊपर शान्त और शानदार तरीके से खड़ा था।

जैसे ही रा की गोल गेंद धरती से ऊपर उठी तो लो सुबह की तरह से गुलाबी एक लड़की भी स्फिन्क्स के पंजे पर से ऊपर उठी

[133] Sphinx – it is the statue of a mythical creature with the head of a human and the body of a lion. See its picture above. It is in front of a Pyramid.

और उसने अपने हाथ उस रा की तरफ बढ़ाये जो बनाने वाले का, रोशनी का, सच्चाई का और सबकी ज़िन्दगी को बनाये रखने वाले का चमकदार निशान है।

उसको देख कर उस लड़की ने गाया —

आसमान में तेरा निकलना तो बहुत सुन्दर है
तू अपनी सुन्दरता से सारी धरती को भर देता है

चिड़ियें अपनी अपनी जगहों उड़ती हैं
उनके पंख तेरी तारीफ करते हैं
अंडे में छोटी चिड़िया शोर मचाती हैं
तू उनको उस खोल में सॉस देता है

तूने कितनी सारी चीज़ें बनायी हैं
तूने अपनी इच्छा से धरती बनायी तूने अकेले ने
जिसमें लोग है भेड़ें हैं जानवर हैं
तूने हर आदमी को उसके रहने की जगह दी और फिर उसकी ज़िन्दगी बनायी

जैसे ही राजा ने उस लड़की का गुलाबी चेहरा देखा जिससे सूरज की किरनें सी निकल रही थीं तो उसके मुँह से निकला — "यही है वह। यही है वह।"

जब उसका गीत खत्म हो गया तो वह स्फिन्क्स के पंजे पर बैठ गयी। राजा ने खुद उस जूते को लिया और उसकी तरफ बड़ी नम्रता से आगे बढ़ा।

वह बोला — "ओ सूरज की तरह चमकने वाली लड़की क्या यह तेरा जूता है?"

जैसे ही उसने जो कुछ उसके हाथ में था उसकी तरफ देखा तो वह मुस्कुरायी और उसने अपना बिना जूते वाला एक पतला सा पैर उसकी तरफ बढ़ा दिया और फिर उस जूते में खिसका दिया।

अगले ही पल उसने अपने नीचे से अपना दूसरा पैर निकाला तो लो वहॉ तो उस जूते के साथ का दूसरा जूता मौजूद था।

राजा ने राडोपिस से पूछा, क्योंकि वह तो राडोपिस ही थी, कि क्या वह उसकी रानी बनेगी। राडोपिस ने अपने दोनों हाथ राजा के सामने बढ़ा दिये और कहा — "ओ मालिक, जो सच और न्याय पर ज़िन्दा रहता है मैं तेरी ऐसी ज़िन्दगी के अलावा और कुछ बॉटना नहीं चाहती।"

इसके बाद राजा उसको अपने महल ले गया। वहॉ उसके सिर पर मिश्र की रानी का ताज रखा गया। फिर उसकी भौंह से उठता हुआ शाही सॉप लगाया गया।

उसके बाद उसने बहुत दिनों तक उस दयावान और न्यायी राजा के साथ बैठ कर मिश्र पर राज किया – उस गुलाबी गालों वाली राडोपिस ने जो सुनहरे जूते पहनती थी।

19 लड़की, मेंढक और सरदार का बेटा[134]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश से ली है।

बहुत पुरानी बात है कि नाइजीरिया देश के एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसके दो पत्नियॉ थीं। उसकी दोनों पत्नियों के एक एक बेटी थी।

वह आदमी अपनी पहली पत्नी और उसकी बेटी को तो बहुत प्यार करता था पर दूसरी पत्नी की वह बिल्कुल भी परवाह नहीं करता था।

कुछ दिन बाद उस आदमी की दूसरी पत्नी मर गयी और उसकी दूसरी पत्नी की बेटी अब बिना मॉ की रह गयी। अब वही लड़की घर का सारा काम करती थी।

उसकी सौतेली मॉ उसे हमेशा ही पानी लाने और जंगल से लकड़ी काटने के लिये भेजा करती थी। वह घर के सब लोगों के लिये खाना भी बनाती थी मगर उसको अपने खाने के लिये केवल जूठन ही मिला करती थी।

उस लड़की का रिश्ते का एक भाई था जो उसकी इस हालत पर बहुत तरस खाया करता था। उसने उस लड़की को कह रखा था कि जब भी कभी तुम अच्छा खाना खाना चाहो तो मेरे घर आ

[134] A Girl, Frog and a Son of the Chief – a folktale of Nigeria, West Africa.

जाया करो सो अक्सर वह अपने भाई के घर खाना खाने चली जाया करती थी।

घर की बची हुई जूठन वह साथ ले जाती थी पर उसे वह रास्ते के एक तालाब में फेंकती जाती। उस तालाब में कुछ मेंढक रहते थे, वे आते और उस जूठन को खा लेते थे। यह सब ईद आने तक चलता रहा।

कुछ दिन बाद ईद आयी। ईद की शाम को जब वह अपने भाई के घर जा रही थी तो उस तालाब पर एक मेंढक बैठा उस लड़की का इन्तजार कर रहा था।

लड़की ने रोज की तरह खाने की जूठन के टुकड़े तालाब की तरफ फेंक दिये और जाने लगी तो मेंढक बोला — "बेटी, तुमने हम लोगों पर बहुत दया की है इसलिये अगर तुम कल सुबह यहाँ आ जाओ तो मैं तुम्हारी दया के बदले में तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ।"

लड़की यह सुन कर बहुत खुश हुई और अगले दिन आने का वायदा कर के अपने घर चली गयी।

अगले दिन वह लड़की जैसे ही तालाब पर जाने लगी कि उसकी सौतेली माँ ने कहा — "तू तो बहुत ही आलसी है, न तो जंगल से लकड़ी काटी, न तालाब से पानी भरा, न खाना ही बनाया और सुबह सुबह न जाने कहाँ चल दी।"

बेचारी लड़की ने पहले अपना सारा काम खत्म किया और फिर जल्दी जल्दी तालाब की तरफ चल दी।

वहाँ वह कल वाला मेंढक बैठा उसका इन्तजार कर रहा था। वह बोला — "अरे, तुम अब आ रही हो? मैं तो सुबह से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ।"

लड़की यह सुन कर रुआँसी सी बोली — "माफ कर दो बाबा, मैं तो गुलाम हूँ न इसी लिये ऐसा हुआ।"

मेंढक ने पूछा — "यह कैसे?"

लड़की बोली — "मेरी माँ मर गयी है, और मेरे भाई की शादी हो चुकी है इसलिये मैं अपनी सौतेली माँ के पास रहती हूँ। इसी लिये मैंने कहा था कि मैं तो गुलाम हूँ।

रोज सुबह मुझे जंगल से लकड़ी लाना, तालाब से पानी भरना तथा सबका खाना बनाना आदि बहुत से काम करने होते हैं, और इस सबके बाद भी खाने को मिलती है मुझे केवल जूठन और बचा खुचा खाना।"

मेंढक बोला — "अच्छा, मेरा हाथ पकड़ो।" लड़की ने उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया और मेंढक उसका हाथ पकड़ कर तालाब में कूद गया।

पानी में पहुँचते ही वह लड़की को निगल गया और जब वह फिर से सूखी जमीन पर आया तो उसने उस लड़की को बाहर निकाल कर खड़ा कर दिया।

वह अपने साथ कीमती कपड़े, गहने और सोने और चॉदी की दो जोड़ी जूतियॉ भी लाया था।

वह बोला — "अब तुम इन कपड़ों को पहन कर किसी भी मौके पर कहीं भी जा सकती हो पर एक बात का ख्याल रखना कि जब वह मौका खत्म हो जाये और तुम घर वापस लौटो तो अपने दाहिने पैर का सोने का जूता वहीं छोड़ आना।"

"मैं समझ गयी बाबा।" कह कर वह लड़की तैयार हुई और चल दी। उस दिन गॉव के सरदार के बेटे के घर दावत थी, वह वहीं चल दी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि एक बहुत बड़े कमरे मे बहुत सारे लड़के और लड़कियॉ नाच रहे थे सो वह भी उधर ही चल दी।

सरदार के बेटे ने इस लड़की को देखा तो अपने दरबारियों द्वारा उसको अपने पास बुला भेजा। उसको अपने पास सिंहासन पर बिठाया। बहुत देर तक वे दोनों बातें करते रहे।

काफी देर बाद लड़की बोली — "मुझे अब जाना चाहिये, काफी देर हो गयी है।"

सरदार के बेटे ने उससे पूछा — "तो तुम मुझसे प्रेम करती हो न?"

लड़की केवल मुस्कुरायी और अपने दाहिने पैर का जूता वहीं छोड़ कर वहॉ से चल दी। कुछ दूर तक तो सरदार का बेटा उसके साथ गया पर फिर वह अकेली ही तालाब की तरफ चल दी।

वहॉ मेंढक उसका इन्तजार कर रहा था। पहले की तरह मेंढक ने उसका हाथ पकड़ा और पानी में कूद गया। जब वह दोबारा जमीन पर वापस आयी तो उसने अपने वही फटे पुराने कपड़े पहने और घर वापस चली गयी।

जब वह लड़की घर पहुॅची तो उसने अपनी मॉ से कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं थी।

सौतेली मॉ ने उसे खूब डॉटा और कहा — "तू बहुत आलसी होती जा रही है। घर में घर का काम तो करती नहीं है और बाहर अपना समय गॅवाती फिरती है। आज तुझे खाना नहीं मिलेगा।"

अगले दिन सरदार के बेटे ने अपने पिता से कहा — "बाबा, कल मैं एक लड़की से मिला था जिसके पास सुनहरी और रुपहली जूतियॉ थीं मैं उसी से शादी करना चाहता हूॅ।"

सरदार ने पूछा — "कौन है वह लड़की और कहॉ रहती है?"

बेटा बोला — "यह तो मुझे उससे पूछने का ध्यान ही नहीं रहा। पर हॉ, याद आया, वह अपना एक सुनहरी जूता छोड़ गयी है। आप सारे गॉव की लड़कियों को बुला लीजिये। वह जूता जिसके पैर में भी आ जायेगा वह वही लड़की होगी।"

सरदार राजी हो गया।

सरदार ने ढोल पीट कर गॉव की सारी लड़कियों को बुलवा लिया। सरदार के गॉव में बूढ़ी, जवान, छोटी, लम्बी, मोटी, पतली सभी तरह की लड़कियॉ आ गयीं।

सरदार के बेटे ने हर लड़की को वह जूता पहना कर देखा पर वह जूता किसी भी लड़की के पैर में नहीं आया। सरदार का बेटा बहुत परेशान हुआ।

तभी एक दरबारी ने आ कर कहा — "सरकार, वह बिन मॉ की बेटी तो आयी ही नहीं अभी तक।"

सरदार के बेटे ने अनमनेपन से कहा — "ठीक है, उसको भी बुला लो।" सो उस लड़की को भी बुला लिया गया।

जब वह लड़की आयी और वह जूता उसके पैर की तरफ बढ़ाया गया तो वह जूता फुदक कर अपने आप ही उसके पैर में चला गया।

सरदार के बेटे को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला — "ओह, तो तुम ही हो मेरी होने वाली पत्नी।"

इस पर लड़की की मॉ बोली — "अच्छा तो तू ही वह आलसी लड़की थी जो अपना जूता यहॉ छोड़ गयी थी।"

अगले दिन ही सरदार के बेटे ने उस लड़की से शादी कर ली और वह लड़की उसके घर चली गयी।

शादी के बाद जब वह अपने पति के घर जाने लगी तो रास्ते में उसने मेंढक को देखा, तो बोली — "आओ बाबा"।

मेंढक बोला — "अभी नहीं, आज रात को हम तुम्हारे घर आयेंगे और तुम्हारे लिये कुछ भेंटें लायेंगे।"

रात होने पर उस मेंढक ने और मेंढकों को बुलाया और कहा — "देखो, हमारी बेटी जो रोज हमको खाना खिलाती थी उसकी आज शादी हो गयी है। अब मैं यह चाहता हूँ कि आप सब लोग उसको अपनी अपनी हैसियत के अनुसार उसे कुछ भेंट दें।"

सभी मेंढकों ने उसको कुछ न कुछ दिया। और वह बड़ा मेंढक उन सारी भेंटों को ले कर उस लड़की के पास पहुँचा।

उन भेंटों में एक चाँदी का पलंग था, तीन और पलंग थे दूसरी धातुओं के बने हुए जो काले, लाल और सफेद रंग की थीं। रेशम की चादरें, ऊनी कम्बल और बहुत सारी वस्तुऐं थी।

मेंढक ये सब भेंट देने के बाद बोला — "जब तुम्हारे पति की दूसरी पत्नियाँ तुमसे मिलने आयें तो उनको दस दस हजार कौड़ियाँ और दो दो टोकरी कोला नट[135] देना।

और जब उसकी रखैलें मिलने आयें तो उनको पाँच पाँच हजार कौड़ियाँ और एक एक टोकरी कोलानट देना। और जब उसकी

[135] In very olden days Cowries, a kind of sea shells, were used as money. And Kola Nut is a kind of seed of a special fruit and is offered to people at the time of meeting each other as a greeting, such as betel nut in India. It is also eaten in the same way – see the pictures above – left one is of cowries and the right one is of Kola Nut.

नौकरानियॉ मिलने आयें तो उनसे कहना कि वे इस कैलैबाश[136] में से कितने भी कोलानट अपने आप ही ले लें। उस लड़की ने वैसा ही किया जैसा उस मेंढक ने उससे कहा था।

मेंढक जब दोबारा उससे मिलने आया तो उस लड़की ने उससे कहा — "बाबा, मैं चाहती हूँ कि मेरे ऑगन में एक कुँआ हो और आप सब यहीं रहें।"

मेंढक बोला — "ठीक है, तुम अपने पति से कहो और अगर वह चाहेगा तो हम यहीं आ जायेंगे।"

उस लड़की ने अपने पति से कहा तो उसके पति ने वहीं ऑगन में एक कुऑ खुदवा दिया और फिर सारे मेंढक वहीं आ कर रहने लगे।

[136] Calabash is a kind of outer cover of pumpkin like fruit which is dried and is used to keep dry and wet things. It looks Indian clay pitcher . See the picture above.

20 नैटिकी[137]

सिन्डरैला जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफीका देश की कहानियों से ली है।

कालाहारी रेगिस्तान[138] में सूरज कॅटीले पेड़ों के पीछे छिप रहा था। शिकार करने वाले जंगल से वापस आ गये थे और गॉव में लोग बातें कर रहे थे और हॅस रहे थे।

उसी गॉव में नैटिकी[139], उसकी दो बहिनें और उसकी मॉ अपने अपने शरीरों पर मक्खन लगा रही थी। वे अपने आपको सुन्दर बना रहीं थीं क्योंकि आज पूनम का नाच था।

नैटिकी की भी बहुत इच्छा थी कि वह भी उस बड़े नाच में जाये पर जब भी वह अपनी मॉ से पूछती कि क्या वह वहॉ जा सकती है तो उसकी मॉ हमेशा कहती — "जाओ जा कर बकरियॉ चराने ले जाओ और देखो रात होने से पहले पहले उनको घर वापस ले आना।

और हॉ देखो कुछ लकड़ियॉ भी लेती आना। उनको ला कर जला लेना ताकि जंगली जानवर पास न आ सकें।"

---

[137] Naitiki – a folktale from Namaqualand (a region of Namibia and South Africa extending along the West Coast over 600 miles), South Africa, Africa.
Adapted from "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. Retold by Glaudien Kotze. Translated in English by Margaret Auerbach. It is like a Cinderella tale – of South African Cinderella.Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[138] Kalahari Desert – is in Southern Africa towards its West

[139] Naitiki is a female name in South Africa

उसकी मॉ और उसकी दोनों बहिनें उसके साथ बहुत बुरा बरताव करतीं थीं। वे उससे जलती भी बहुत थीं क्योंकि वह अपनी दोनों बड़ी बहिनों से ज़्यादा सुन्दर थी। और वे उससे डरती भी थीं कि उस नाच में नौजवान शिकारी सबसे पहले उसी को नाच के लिये चुन लेंगे।

नैटिकी मैदान में बकरियों को चराने चली गयी। जब तक वह बकरियॉ ले कर गॉव में लौट कर आयेगी उसकी मॉ और दोनों बहिनें नाच के लिये जा चुकी होंगी।

जब वह बकरियॉ ले कर घर लौटी तो उसकी मॉ और दोनों बहिनं नाच में जा चुकी थीं। उसने रसोईघर की दीवार पर साही[140] के कुछ कॉटे रखे जो उसने बकरियों को चराते समय इकट्ठे किये थे। फिर उसने लकड़ियॉ तोड़ीं और उनमें आग जला दी।

उसके बाद वह अपने शरीर में मक्खन लगाने बैठी और उसे तब तक मलती रही जब तक कि उसका शरीर तॉबे की तरह नहीं चमकने लगा। फिर उसने अपने बालों में कॉटों की बनी कॅघी की और एक मक्खन में मिला किसी पेड़ की छाल से बना पीला रंग अपने चेहरे पर मला।

[140] Translated for the word for “Porcupine”. See its picture above.

उसने अपने गले में शुतुरमुर्ग के अंडे के खोल के बने मोतियों की माला पहनी और फिर उसने अपने बालों में मोतियों की झालर गूँथी। बीजों से भरे हिरन[141] के सूखे कान अपनी टाँगों पर पहने और आखीर में उसने साही के वे काँटे जो वह इकट्ठे कर के लायी थी अपने छोटे से चमड़े के बटुए में रख लिये।

जब वह नाच के लिये चली तो चाँद आसमान में ऊपर चढ़ आया था। जाते समय वह रास्ते में इधर उधर जमीन में साही के काँटे गाड़ती जाती थी।

जब वह टीले के ऊपर आयी तो उसको नाच वाली बड़ी सी आग जलती हुई दिखायी दी। वह अपने अन्दर कुछ अजीब सा महसूस करने लगी – जब उसकी माँ और बहिनें उसको वहाँ देखेंगी तो वे क्या कहेंगीं।

पर फिर उसको कोयलों पर भुनते हुए माँस की खुशबू आयी तो उसके कदम डगमगाने लगे और उसके पैरों में बँधे हिरन के कान बजने लगे।

जब वह आग के पास पहुँची तो पहले तो वह एक तरफ खड़ी हो गयी। फिर वहाँ से उसने अपनी माँ और बहिनों को देखा। उन्होंने भी नैटिकी को देखा।

[141] Translated for the word “Springbok” – a kind of deer

पर वे भी दावत में आये और लोगों की तरह से आश्चर्य कर रहीं थीं कि यहाँ यह अजनबी और अकेला कौन आया है क्योंकि वे उसको पहचान ही नहीं पा रही थीं।

नैटिकी उन स्त्रियों की तरफ चली गयी जो गा रही थीं और ताली बजा रही थीं। वह भी उनके साथ गाने लगी और ताली बजाने लगी। नाच के लिये उसके पैर बहुत ही हल्के पड़ रहे थे।

एक नौजवान शिकारी जब उधर से गुजरा तो नैटिकी की तरफ देख कर मुस्कुराया और उसकी निगाहें उस पर रुक सी गयीं।

जब लागों को नाचते नाचते काफी देर हो गयी तो नैटिकी की बहिनें जँभाइयाँ लेने लगीं। जँभाई लेते समय वे और भी बदसूरत लग रही थीं।

नैटिकी की माँ ने जब यह देखा कि उसकी बेटियों को नींद आ रही है तो वह भी घर जाने को तैयार हुई। उसने अपनी दोनों बड़ी बेटियों से कहा — "अपने लिये थोड़ा सा मॉस ले लो और चलो फिर हम घर चलते हैं।"

सो दोनों बहिनों ने अपने लिये थोड़ा सा मॉस और लिया और फिर वे सब घर चली गयीं। नैटिकी और दूसरी स्त्रियों के साथ बहुत देर तक गाती रही और ताली बजाती रही।

जब वे सब थक गये तो उस नौजवान शिकारी ने नैटिकी से कहा — "चलो मैं तुम्हें घर तक छोड़ आऊँ।" नैटिकी साही के काँटों को देखती हुई अपने घर तक आ पहुँची।

रास्ते में उसने उस नौजवान शिकारी को अपनी मॉ और अपनी दोनों बड़ी बहिनों के बारे में बताया कि वह उससे कितनी बुरे तरीके से बरताव करती थीं। और अगर उसकी मॉ को यह पता चल गया कि वह इस नाच में गयी थी तो वह कितना नाराज होगी।

इस पर शिकारी ने कहा — "तुम बिल्कुल फिक्र न करो। मैं तुमको उनसे दूर बहुत दूर ले जाऊॅगा और इस बारे में मैं तुम्हारी मॉ से खुद बात करूॅगा।"

नैटिकी की मॉ और बहिनों को दूर से आती कुछ आवाजें सुनायी पड़ीं तो उसकी बड़ी बहिनों में से छोटी वाली बहिन बोली — "ऐसा लगता है कि नैटिकी आ रही है। पर लगता है कि वह तो किसी शिकारी के साथ आ रही है।"

बड़ी बहिन जो उससे बहुत ज़्यादा जलती थी बोली — "उसके साथ कौन आना चाहेगा?"

तभी उनको आग की रोशनी में नैटिकी और वह नौजवान शिकारी दोनों आते दिखायी दिये। वह तो सचमुच बहुत सुन्दर लग रही थी।

जब वह घर आ गयी तो उसकी मॉ ने उसको डॉटा — "ओ लड़की, तू क्या सोचती है कि तू क्या कर रही है?"

जब उस नौजवान शिकारी ने देखा कि नैटिकी तो कॉपने लगी है तो वह उसकी मॉ से बोला — "मैं आज रात नैटिकी को हमेशा

के लिये ले जा रहा हूँ और मैं इस बात का ध्यान रखूँगा कि उसकी रसोई में उसके बरतन कभी खाली न रहें।"

उसकी माँ चिल्ला कर बोली — "तुम देखना कि यह कितनी बेकार लड़की है।" और नैटिकी को उससे अलग हटाने को दौड़ पड़ी।

पर नैटिकी उसके लिये बहुत तेज़ थी। वह उसके रास्ते से हट गयी और उस शिकारी के पीछे जा कर छिप गयी। अब उसकी माँ उसका कुछ नहीं कर सकती थी।

वह शिकारी उसको अपने घर ले गया। नैटिकी अब वह घर छोड़ कर दूर अपने लोगों में चली गयी थी।

हर तीसरे पहर जब उसकी माँ और बहिनें लकड़ी का बड़ा सा गट्ठर ले कर घर आतीं तो उसकी दोनों बहिनें बहुत शिकायत करतीं और कहतीं — "नैटिकी, देखना, एक दिन हम तुमको घर जरूर वापस ले आयेंगे।"

पर नैटिकी अपने नये घर में बहुत खुश थी। वह अपने पति और बच्चों की खूब अच्छी तरह से देखभाल करती थी। और जैसा कि उस शिकारी ने उससे वायदा किया था नैटिकी की रसोई में कभी उसके बरतन खाली नहीं रहे।

21 नोमी और जादू की मछली[142]

एक बार की बात है कि दक्षिण अफ्रीका में एक लड़की रहती थी जिसका नाम नोमी[143] था। जब वह बहुत छोटी थी तभी उसकी मॉ मर गयी थी। उसकी मॉ के मरने के बाद में उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। इस स्त्री के अपनी भी एक बेटी थी जिसका नाम था नोम्सा[144]।

नोमी एक सुन्दर और लम्बी लड़की थी जबकि नोम्सा एक छोटी और बदसूरत लड़की थी। उस आदमी की दूसरी पत्नी नोमी को बिल्कुल नहीं चाहती थी।

वह अक्सर उसको पीटती और उसको शाम का खाना दिये बिना ही उसको सोने के लिय भेज देती। जबसे नोमी छह साल की थी तभी से उसकी सौतेली मॉ उसको गायों की देखभाल के लिये भेज देती थी।

रोज सुबह सवेरे वह बच्ची को दरवाजे के बाहर यह कहते हुए धकेल देती — "जा जा कर गायों को मैदान में चरा कर ला और हॉ देख दोपहर को घर मत आना क्योंकि मेरे पास तेरे लिये खाना नहीं है। और अपना यह बदसूरत कुत्ता भी साथ ही लेती जा।"

---

[142] Nomi and the Magical Fish – a fairy tale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.365cinderellas.com/2011/05/cinderella-121-nomi-and-magic-fish-1969.html by Sierra J, 1992.

[143] Nomi – the name of the girl whose mother died.

[144] Nomsa – the name of the girl who came with the new wife of the man.

यह सुनने के बाद नोमी के पास और कोई चारा ही नहीं रह जाता कि वह गायों को चराने के लिये मैदान जाये और फिर शाम को ही घर लौटे।

एक दिन ऐसा हुआ कि गायें पानी के एक तालाब के पास पानी पीने के लिये इकट्ठा हुईं तो नोमी उनको देखने लगी। उसने देखा कि पानी में एक बड़ी सी मछली इधर उधर घूम रही थी। उसने उसे पकड़ने की सोचा। पर वह उससे डर गयी।

वह रोने लगी क्योंकि उसको भूख लगी थी। उसका रोना सुन कर वह मछली पानी के ऊपर आयी और नोमी से बोली — "डरो नहीं नोमी मैं तुम्हें छुऊँगी भी नहीं। तुम रो क्यों रही हो?"

बच्ची सुबकती हुई बोली — "मुझे भूख लगी है। मेरे पिता की दूसरी पत्नी मेरे लिये बहुत ही निर्दयी है। वह अक्सर मुझे खाना नहीं देती।

आज सुबह नाश्ते के पहले ही उसने मुझे गायें चराने के लिये भेज दिया। कल रात को भी मैंने खाना नहीं खाया। मेरी बाहों की तरफ देखो ये कितनी पतली सी हैं। मेरे हाथों की उँगलियाँ तो बिल्कुल किसी चिड़िया के पंजे की तरह लगती हैं।

जाड़े में मैं ठंडी रहती हूँ क्योंकि मेरे पास अपने आपको गरम रखने के लिये कोई कोट ही नहीं है। ज़रा मेरे इन भद्दे कपड़ों को देखना तो जो मैं पहन रही हूँ। मेरे पास तो पहनने के लिये सुन्दर कपड़े भी नहीं हैं।"

यह सुन कर मछली ने नोमी से बड़ी नम्रता से बात की और उसको रोटी और दूध दिया। उसने उसको गायों को रोज वहॉ पानी पिलाने के लिये लाने के लिये कहा। उसने यह भी कहा कि जब वे गायें वहॉ पानी पी रही होंगी तब वह उसको खाना खिलाया करेगी।

नोमी ने ऐसा ही किया और वह फिर उसके बाद से तन्दुरुस्त होती चली गयी। खाना मिलने से वह अब खुश भी रहने लगी थी और सुन्दर भी हो गयी थी। उसका कुत्ता भी मछली का दिया खाना खा कर मोटा हो गया था और अब वह खाने की मेज के नीचे नहीं घुसता था।

यह देख कर तो नोमी की सौतेली मॉ कुछ नाराज सी हो गयी और उसे कुछ शक सा होने लगा कि कोई जरूर नोमी को खाना देता है।

एक दिन उसने एक बड़ी सी डंडी से नोमी को खूब पीटा ताकि वह उसको यह बताये कि उसको खाना कौन देता है पर नोमी ने उसको बता कर नहीं दिया।

जब नोमी ने उसको नहीं बताया तो उसने कुत्ते को पीटा। आखिर कुत्ते को बताना पड़ा कि एक बड़े से तालाब में एक बड़ी सी मछली रहती है वही हमको रोज खाना देती है।

यह सुन कर बेचारी लड़की उस तालाब की तरफ दौड़ी गयी और जा कर यह सब उस मछली से कहा।

मछली बोली — "मैं उस नीच स्त्री को बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि वह मुझे मार डालेगी और खा जायेगी। पर जब वह मुझे मार डाले तो तुम रोना नहीं। तुम मेरी हड्डियाँ लेना और उनको सरदार के बागीचे में फेंक देना। पर ध्यान रखना कि ऐसा करते हुए तुम्हें कोई देखे नहीं।"

और फिर ऐसा ही हुआ। अगले दिन ही नोमी की सौतेली माँ ने नोमी के पिता से अपनी तबियत खराब होने का बहाना किया और उससे कहा कि उसकी बीमारी का इलाज केवल एक बड़ी मछली है जो एक खास तालाब में मिलेगी।

सो नोमी के पिता ने नोमी की दोस्त मछली को मार डाला और ला कर अपनी पत्नी को दे दिया। पत्नी ने उसे खा लिया। आखीर में बस उसकी हड्डियाँ हीं उसकी प्लेट में बचीं।

खा कर उसने नोमी से कहा — "जा यह प्लेट ले जा और धो दे। अब तुझे और तेरे इस बदसूरत कुत्ते को कोई खाना नहीं देगा ओ शैतान लड़की। तू फिर से बदसूरत और पतली दुबली हो जायेगी और तेरी उंगलियाँ भी चिड़िया के पंजे जैसी हो जायेंगी।"

नोमी ने उसकी वह प्लेट उठायी और उसको धोने ले गयी पर उस मछली की हड्डियाँ उसने चुपचाप छिपा दीं।

उसी रात को जब सब सो गये तो अँधेरे में वह दबे पाँव उठी और चुपचाप सरदार के बागीचे की तरफ चली और वहाँ जा कर उसने उस मछली की हड्डियाँ उसके बागीचे में फेंक दीं।

उसके बाद वह घर चली गयी और जा कर सो गयी।

सुबह को तो क्या हल्ला गुल्ला मचा कि सरदार के घर के बागीचे में सफेद हड्डियॉ पायी गयी हैं। किसने डालीं वे हड्डियॉ वहॉ? और केवल हड्डियॉ ही नहीं बल्कि वहॉ कुछ और भी अजीब चीज़ थी। और वह यह कि कोई उनको उठा नहीं पा रहा था।

उन हड्डियों को वहॉ से उठाने के लिये पहले एक, फिर दूसरा, फिर तीसरा नौकर भेजा गया पर उन तीनों में से कोई भी उन हड्डियों को न उठा सका। जैसे ही कोई उनको उठाने की कोशिश करता तो उसकी उंगलियॉ उन हड्डियों में से हो कर निकल जातीं जैसे कि वे धुँए की बनी हों।

आखिर सरदार उनको खुद उठाने के लिये आया पर उसकी किस्मत भी उसके नौकरों से कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं थी।

फिर उसने गॉव की सारी लड़कियों को बुलवाया और उनसे उनको उठाने की कोशिश करने के लिये कहा और साथ में यह भी कहा कि जो कोई भी लड़की उन हड्डियों को उठा कर उसके पास लायेगी वह उससे शादी कर लेगा।

सो सब लड़कियों ने अपने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और उन हड्डियों को उठाने के लिये सरदार के घर जा पहुँचीं। पर कोई भी लड़की उन हड्डियों में से एक हड्डी भी न उठा सकी।

जब सब लड़कियों ने अपनी अपनी कोशिश कर ली तो सरदार ने पूछा — "क्या गॉव की सारी लड़कियॉ यहॉ थीं?"

एक स्त्री बोली — "यहॉ नोमी तो थी ही नहीं। वह तो गाय चराने गयी है।"

नोम्सा की मॉ बोली — "नोमी तो तो कोई बहुत ताकतवर नहीं है। वह तो बहुत ही पतली दुबली है वह तो ये हड्डियॉ उठा ही नहीं सकती।"

पर सरदार बोला — "फिर भी उसको मैदान से ले कर तो आओ।"

जब नोमी को सरदार के घर लाया गया तो वह वहॉ गयी जहॉ हड्डियॉ पड़ी हुई थीं और उसने वे सारी हड्डियॉ उठा कर सरदार को ऐसे दे दीं जैसे कोई खास बात ही न हो। उसका कुत्ता उसके पीछे खड़ा खड़ा खुशी से भौंक रहा था।

सरदार ने इस सुन्दर लम्बी लड़की और उसके खुश कुत्ते को देखा तो उससे कहा — "मैं तुमसे कल शादी करूँगा।"

और फिर बहुत सारी स्त्रियों ने सरदार की शादी के लिये बहुत अच्छे अच्छे खाने बनाये रोटियॉ बनायीं। आदमियों ने छह बैल मारे और बहुत सारी भेड़ें मारीं।

सरदार और नोमी की शादी की बहुत बड़ी दावत हुई पर उसमें नोम्सा और उसकी मॉ नहीं आये। वे डर के मारे जंगल में भाग गये थे।

सरदार और नोमी फिर खुशी खुशी बहुत दिन तक रहे।

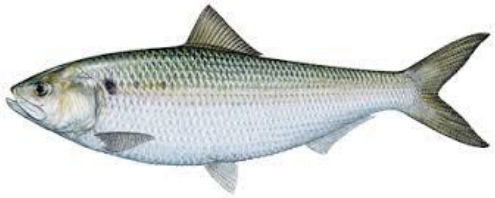

22 समुद्र क्यों कराहता है[145]

सिन्डरैला जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक राजकुमारी थी जो एक बहुत ही शानदार महल में रहती थी। उसके महल के चारों तरफ बहुत सुन्दर बागीचा था जिसमें बहुत सुन्दर सुन्दर फूल लगे हुए थे बड़े बड़े ऊँचे ऊँचे पेड़ लगे हुए थे और बहुत सारी झाड़ियाँ लगी हुई थीं।

पर राजकुमारी को उस सारे बागीचे में एक कोना बहुत अच्छा लगता था जो समुद्र तक चला गया था। राजकुमारी बहुत अकेली थी सो वह वहाँ बैठ कर समुद्र की बदलती हुई सुन्दरता को देखती रहती।

उस राजकुमारी का नाम था डायोनिशिया[146]। उसको अक्सर ही यह लगता कि जब भी वह समुद्र किनारे की तरफ आता तो वह पुकारता "डा यो नि शिया, डा यो नि शिया।"

---

[145] Why the Sea Moans – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_21.html These tales appear in a Book : "Fairy Tales From Brazil", by Elsie Spicer Eells. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. How and Why Tales from Brazilian Folklore. 18 Tales. This book is given at the above Web Site.

[146] Dionysia – name of the princess

एक दिन वह छोटी राजकुमारी वहाँ समुद्र के किनारे अकेली बैठी बैठी समुद्र को देख रही थी कि उसने सोचा "ओह मैं कितनी अकेली हूँ। काश मेरे साथ भी खेलने के लिये कोई होता।

जब मैं अपने शाही रथ में सवार हो कर बाहर निकलती हूँ तो मैं देखती हूँ कि सारे बच्चे आपस में एक दूसरे के साथ खेलते रहते हैं। क्योंकि मैं राजकुमारी हूँ इसलिये मेरे पास खेलने के लिये कोई नहीं आता।

अगर मुझे राजकुमारी ही होना है और मैं दूसरे बच्चों के साथ नहीं खेल सकती तो भी तो मेरे पास कोई ज़िन्दा आदमी तो खेलने के लिये होना ही चाहिये।

उसी समय एक आश्चर्यजनक घटना घटी। समुद्र ने बड़ी साफ पर धीमी आवाज में बार बार कहा जिससे किसी को कोई गलती न लगे "डा यो नि शिया, डा यो नि शिया।"

राजकुमारी अपनी जगह से उठ कर समुद्र के किनारे की तरफ गयी। वह समुद्र के केवल इतनी ही पास गयी जिससे उसके शाही जूते और मोज़े समुद्र के पानी में न भीगें।

तभी समुद्र में से एक बहुत बड़ी लहर आयी और उसके साथ आयी एक समुद्री सॉपिन उससे मिलने के लिये।

हालॉकि उसने उसको पहले कभी देखा नहीं था पर क्योंकि उसने अपनी किताबों में उसकी तस्वीर देखी थी इसलिये वह उसको

तुरन्त ही पहचान गयी कि वह एक समुद्री सॉपिन थी। हालॉकि यह समुद्री सॉपिन उसकी किताब की तस्वीर से कुछ अलग थी।

हालॅकि वह सॉपिन बहुत ही बड़ी और भयानक दिखायी दे रही थी फिर भी वह बहुत दयालु नम्र और अच्छी सी भी दिखायी दे रही थी।

डायोनिशिया बोली — "आओ न मेरे साथ खेलो।"

सॉपिन बोली — "मेरा नाम लैबिस्मैना[147] है और मैं तुम्हारे साथ खेलने के लिये ही आयी हूॅ।"

इस बात से तो राजकुमारी बहुत खुश हो गयी। अब जब भी राजकुमारी अकेली होती तो वह समुद्री सॉपिन उसके साथ खेलने के लिये आ जाती। पर जब कोई दूसरा राजकुमारी के पास आता तो वह तुरन्त ही समुद्र में छिप जाती ताकि केवल डायोनिशिया ही उसको देख पाती दूसरा कोई नहीं।

साल पर साल गुजरते रहे और राजकुमारी हर साल बड़ी होती रही। अब वह सोलह साल की हो गयी थी और बड़ी भी हो गयी थी। पर वह अभी भी उस समुद्री सॉपिन के साथ खेलना पसन्द करती थी। वे दोनों अक्सर समुद्र के किनारे पर साथ साथ होते।

एक दिन जब वे दोनों समुद्र के किनारे पर घूम रहे थे तो समुद्री सॉपिन ने दुखी नजरों से डायोनिशिया की तरफ देखा और बोली — "डायोनिशिया मैं भी इन सालों में बड़ी होती रही हूॅ। अब समय आ

[147] Labismena – name of the sea serpent

गया है जब हम लोग एक साथ नहीं खेल सकते। पर मैं तुम्हें कभी भूलूँगी नहीं और हमेशा तुम्हारी दोस्त रहूँगी।

मुझे आशा है कि आगे कभी तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी पर अगर कभी भी तुम्हें कोई परेशानी हो तो बस मेरा नाम ले कर पुकार लेना मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगी।"

उसके बाद वह समुद्री सॉपिन वहीं समुद्र में गायब हो गयी।

इन्हीं दिनों एक पड़ोसी राजा की पत्नी मर गयी। जब वह मरने वाली थी तो उसने राजा को जवाहरात जड़ी एक अँगूठी दी और कहा — "जब भी कभी तुम दोबारा शादी करना चाहो तो केवल उसी राजकुमारी से शादी करना जिसकी उँगली में यह ठीक से आ जाये। न तो यह उसके बहुत कसी हो और न ही यह ढीली हो।"

उसके मरने कुछ समय बाद उस राजा ने दूसरी शादी करनी चाही सो उसने अपने लिये कोई लड़की ढूँढनी शुरू की। वह हर एक को वह अँगूठी पहना कर देखता तो किसी की उँगली में वह बहुत कसी हुई आती तो किसी की उँगली में वह ढीली रहती।

उसको अभी तक कोई ऐसी राजकुमारी नहीं मिली थी जिसकी उँगली में वह ठीक से आ जाती।

ढूँढते ढूँढते वह उस महल में आया जिसमें डायोनिशिया रहती थी। पर राजकुमारी के अपने सपने थे एक नौजवान सुन्दर राजकुमार के जो आयेगा और उसको ले जायेगा। सो वह इस शादी

से बिल्कुल खुश नहीं थी। राजा बूढ़ा भी था और देखने में सुन्दर भी नहीं था।

जब उस राजकुमारी को वह अँगूठी पहना कर देखी गयी तो राजकुमारी ने बहुत चाहा कि वह अँगूठी उसकी उँगली में ठीक न बैठे पर वह तो उसके बिल्कुल ठीक आ गयी।

राजा यह देख कर बहुत खुश हुआ कि कम से कम किसी राजकुमारी के तो वह अँगूठी ठीक आ गयी। पर यह देख कर डायोनिशिया बहुत डर गयी।

उसने अपने पिता से पूछा — "पिता जी क्या मुझे इस राजा से शादी करनी ही पड़ेगी?"

उसके पिता ने कहा — "बेटी वह तो एक बहुत ही अमीर राजा है और देखो तो उसका कितना बड़ा राज्य है। उसका उससे भी कितना ज़्यादा बढ़िया और शानदार महल है जैसे महल में तुम रहती हो।"

उसका पिता इस बात से खुश नहीं था कि डायोनिशिया इस शादी से खुश नहीं थी। उसने फिर कहा — "बेटी तुमको तो अपने आपको दुनियॉ की सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत राजकुमारी समझना चाहिये कि उसकी अँगूठी तुम्हारी उँगली में आ गयी।"

पर डायोनिशिया यह सब सोच सोच कर दिन रात रोती रहती।

यह देख कर उसके पिता को चिन्ता हुई कि कहीं वह इतनी दुबली न हो जाये कि फिर उसके वह अँगूठी आये ही नहीं। इसलिये उसने जल्दी जल्दी शादी की तैयारियाँ शुरू कर दीं।

एक दिन डायोनिशिया समुद्र के किनारे घूमने गयी और वहाँ जा कर रोने लगी जैसे उसका दिल ही टूट गया हो। पर तुरन्त ही उसका रोना रुक गया।

वह बोली — "मैं भी कितनी बेवकूफ हूँ कि मेरी दोस्त लैबिस्मैना ने मुझसे कहा था कि जब भी तुम किसी परेशानी में हो तो बस मेरा नाम ले कर पुकार लेना मैं तुम्हारी सहायता के लिये चली आऊँगी। और मैं अपने रोने की बेवकूफी में यह बात तो भूल ही गयी कि मैं उसको पुकार लूँ।"

सो वह समुद्र के किनारे के पास गयी और उसने लैबिस्मैना का नाम ले कर उसे पुकारा। वह समुद्री सॉपिन समुद्र में से तुरन्त ही निकल आयी जैसे वह पहले निकला करती थी।

डायोनिशिया ने उससे अपनी सारी परेशानी कही जो उसकी सारी ज़िन्दगी बरबाद करने पर तुली हुई थी।

लैबिस्मैना बोली — "तुम डरो नहीं। तुम अपने पिता से कहो कि तुम उससे शादी तभी करोगी जब वह तुमको एक ऐसी पोशाक ला कर देगा जो खेत और उसके सारे फूलों के रंग की हो।" इतना कह कर वह समुद्री सॉपिन समुद्र में गायब हो गयी।

डायोनिशिया ने अपने पिता से कहा कि वह उस राजा से यह कह दें कि डायोनिशिया उससे तभी शादी करेगी जब वह उसको एक ऐसी पोशाक ला कर देगा जो खेत और उसके सारे फूलों के रंग की हो।

वह राजा तो डायोनिशिया से बहुत प्यार करता था सो वह इस बात से बहुत खुश हुआ कि उसने उससे किसी चीज़ की तो मॉग की। उसने ऐसी पोशाक सारे में ढूँढी जो खेत और उसके सारे फूलों के रंग की हो।

हालॉकि यह काम बहुत मुश्किल था फिर भी उसको एक पोशाक ऐसी मिल ही गयी। तुरन्त ही वह पोशाक उसने डायोनिशिया के लिये भिजवा दी।

जब डायोनिशिया ने देखा कि राजा ने तो वैसी पोशाक उसके लिये भिजवा दी तो उसको लगा कि अब वह उससे कैसे बचे। अब तो उसको उस राजा से शादी करनी ही पड़ेगी।

सो जैसे ही उसको महल से निकलने का समय मिला वह फिर समुद्र के किनारे गयी और अपनी दोस्त लैबिस्मैना को पुकारा। लैबिस्मैना फिर से समुद्र में से तुरन्त ही बाहर आ गयी।

उसने डायोनिशिया से कहा — "तुम डरो नहीं। अबकी बार तुम राजा से कहो कि तुम उससे शादी तभी करोगी जब वह तुमको समुद्र और उसके अन्दर रहने वाली सारी मछलियों के रंग की

पोशाक ला कर देगा।" यह कह कर वह फिर समुद्र में गायब हो गयी।

डायोनिशिया ने यही बात अपने पिता से राजा से कहने के लिये कह दी। पर जब राजा ने उसकी यह नयी मॉग सुनी तो वह बहुत ही नाउम्मीद हुआ।

फिर भी उसने उसके लिये वैसी पोशाक ढूँढने की कोशिश की। काफी पैसे खर्च कर के किसी तरह वह उसके लिये वैसी एक पोशाक खरीद सका।

जब डायोनिशिया ने देखा कि राजा को समुद्र और उसमें रहने वाली सारी मछलियों के रंगों की पोशाक मिल गयी है तो वह फिर से दुखी हो गयी। वह फिर से अपनी दोस्त के पास उसकी राय लेने पहुँची।

लैबिस्मैना फिर समुद्र से बाहर आयी और बोली — "तुम डरो नहीं। इस बार तुम उससे आसमान और उसके सारे तारों के रंग की पोशाक मॉग लो।"

अबकी बार जब राजा ने डायोनिशिया की ऐसी मॉग सुनी तो उसका दिल टूट गया पर जब उसने यह सुना कि यह उसकी बस आखिरी मॉग थी तो उसने उसके ऊपर काफी पैसा खर्च करना तय कर लिया।

आखिर उसको वैसी एक पोशाक मिल गयी। सो उसने वह पोशाक ला कर उसको भिजवा दी।

जब डायोनिशिया ने देखा कि राजा ने तो वैसी पोशाक भी उसके लिये भेज दी तो अब तो उसके पास उससे शादी न करने की कोई वजह ही नहीं थी।

वह फिर अपनी दोस्त के पास उससे सहायता माँगने गयी हालाँकि उसको लग रहा था कि अबकी बार शायद वह उसकी कोई सहायता नहीं कर पायेगी पर फिर भी... ।

लैबिस्मैना तुरन्त ही समुद्र से बाहर आयी।

उसने डायोनिशिया से कहा — "तुम घर जाओ और अपनी खेतों और उसके सारे फूलों वाले रंग की पोशाक लो फिर समुद्र और उसमें रहने वाली सारी मछलियों के रंग वाली पोशाक लो और फिर आसमान और उसमें सारे तारों के रंग की पोशाक लो और तीनों पोशाकें ले कर तुरन्त ही यहाँ लौट कर आओ।

तब तक मैं तुम्हारे लिये तुमको चौंका देने वाली एक चीज़ तैयार करती हूँ।"

जितने समय में वह राजा डायोनिशिया के लिये पोशाकें खरीदने में लगा हुआ था वह समुद्री सॉपिन डायोनिशिया के लिये एक जहाज़ तैयार करने में लगी हुई थी।

डायोनिशिया ने अपनी तीनों पोशाकें एक बक्से में बन्द कीं और उनको ले कर वह तुरन्त ही समुद्र के किनारे आ गयी। वहाँ तो एक सुन्दर सी नाव उसका इन्तजार कर रही थी।

उसने जैसी नावें अब तक देखी थीं वह वैसी नावों की तरह नहीं थी। वह तो उसमें अन्दर बैठने से भी डर रही थी कि तभी लैबिस्मैना ने उससे उसमें बैठने के लिये कहा और बोली —

"यह छोटी सी नाव जो मैंने तुम्हारे लिये बनायी है यह तुम्हें बहुत दूर एक राजकुमार के राज्य में ले जायेगी जो दुनियॉ का सबसे सुन्दर राजकुमार है। जब तुम उसको देखोगी तो तुम उससे जरूर ही शादी करना चाहोगी।"

डायोनिशिया बोली — "ओह लैबिस्मैना मैं इस सबके लिये जो कुछ भी तुमने मेरे लिये किया है तुमको धन्यवाद कैसे दूँ।"

लैबिस्मैना बोली — "तुम मेरे लिये एक सबसे बड़ा काम कर सकती हो। हालॉकि यह बात मैंने तुमसे कभी कही नहीं और मुझे यह लगता भी नहीं कि कभी तुमको इस बात का शक भी हुआ कि मैं एक राजकुमारी हूँ जिस पर जादू डाल दिया गया है।

मुझे इसी समुद्री सॉपिन के रूप में रहना है जब तक कि दुनियॉ की कोई सबसे खुश लड़की अपने सबसे ज़्यादा खुशी के मौके पर मेरा नाम तीन बार न पुकारे।

तुम अपनी शादी के दिन दुनियॉ में सबसे खुश लड़की होगी और अगर तुम उस दिन मेरा नाम तीन बार लेने की याद रखो तो मैं इस जादू से छूट जाऊॅगी। फिर मैं भी समुद्री सॉपिन होने की बजाय एक सुन्दर राजकुमारी बन जाऊॅगी।"

डायोनिशिया ने अपनी दोस्त को इस बात का वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगी। समुद्री सॉपिन ने भी पक्का करने के लिये उससे यह तीन बार पूछा कि क्या वह इस बात को याद रखेगी। डायोनिशिया ने भी उसको तीन बार वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी।

फिर उसने अपनी दोस्त को गले लगाया और एक बार फिर से उसको धन्यवाद दे कर वह उस नाव को खे कर वहॉ से चल दी और समुद्री सॉपिन वहीं समुद्र में ही गायब हो गयी।

डायोनिशिया वहॉ से चल दी और एक बहुत ही सुन्दर टापू पर पहुॅच गयी। उसको लगा कि वह शायद अपनी जगह आ गयी थी सो वह वहॉ उतर गयी। वह अपनी पोशाकों का बक्सा लाना नहीं भूली। पर जैसे ही वह नाव में से उतरी वह नाव वहॉ से चल दी।

डायोनिशिया ने सोचा — "अरे अब मैं क्या करूॅ मेरी नाव तो चली गयी और मुझे यहॉ छोड़ गयी। मैं अब अपना खाना पीना कैसे खाऊॅगी? उफ़ मैंने तो सारी ज़िन्दगी कभी कोई काम का काम ही नहीं किया। अब मैं क्या करूॅ?"

पर डायोनिशिया को अपने खाने पीने का कुछ न कुछ तो इन्तजाम करना ही था। सो वह तुरन्त ही वहॉ से यह देखने के लिये चल दी कि उसको वहॉ क्या मिलता है।

वह खाने और काम के लिये घर घर गयी तो एक महल के पास आ पहुॅची। जब वहॉ उसने काम और रहने की जगह के बारे

में पूछा तो वहॉ उससे कहा गया कि उनको एक नौकरानी की सख्त जरूरत थी जो उनकी मुर्गियों की देखभाल कर सके।

डायोनिशिया ने सोचा कि यह काम तो वह कर सकती है सो उसने वहॉ वह काम करना स्वीकार कर लिया।

हालॉकि यह काम महल में एक राजकुमारी होने से बहुत अलग था पर कम से कम इसकी वजह से उसको उस टापू पर रहने की जगह और खाना मिल रहा था।

और जब वह उस बूढ़े राजा से शादी के बारे में सोचती तो उसको अपना घर छोड़ने का बिल्कुल भी अफसोस नहीं होता।

समय गुजरता रहा और एक दिन उसने सुना कि शहर में एक बड़ा उत्सव होने वाला है। डायोनिशिया के अलावा महल का हर आदमी उस उत्सव में गया। पर उसको तो मुर्गियों की देखभाल करनी थी न सो लोग उसको वहीं छोड़ गये।

पर जब सब उस उत्सव में चले गये तो डायोनिशिया ने भी सोचा कि वह भी उस उत्सव में जायेगी। उसने अपने बालों में कंघी की अपनी खेतों और उसमें उगे हुए सब फूलों के रंग वाली पोशाक पहनी।

उसको यकीन था कि इस पोशाक में उसको कोई नहीं पहचान पायेगा कि वह महल की नौकरानी थी जो वहॉ मुर्गियों की देखभाल करती थी और वे उसको वहॉ छोड़ गये थे।

वह तुरन्त ही उत्सव में चली गयी और बस नाच के लिये समय पर ही पहुँच पायी। उस उत्सव में सबने उसको उस खेतों और उसमें उगे हुए सब फूलों के रंगों वाली पोशाक में देखा। राजकुमार तो उसको देख कर उसके प्यार में पागल सा ही हो गया।

किसी ने पहले उसको कभी देखा नहीं था इसलिये कोई यही नहीं बता सका कि वह अजनबी लड़की कौन थी और कहाँ से आयी थी।

उत्सव खत्म होने से पहले ही डायोनिशिया वहाँ से खिसक ली और जब राजमहल के सारे लोग घर वापस आये तो वह अपनी मुर्गियों की देखभाल ही कर रही थी जैसी कि वे उसको छोड़ कर गये थे।

उत्सव के दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। महल के सारे लोग उस उत्सव में चले गये और उस नौकरानी को मुर्गियों की देखभाल के लिये छोड़ गये।

इस दिन भी डायोनिशिया ने वैसा ही किया। जब महल के सब लोग चले गये तो उसने अपने बालों में कंघी की अपनी समुद्र और उसमें रहने वाली सारी मछलियों के रंगों वाली पोशाक पहनी और उत्सव में चल दी। इस दिन भी वह बस समय पर ही नाच में पहुँच पायी।

इस दिन भी सब उसी की तरफ देख रहे थे बल्कि इस दिन और ज़्यादा लोग उसकी तरफ देख रहे थे। और राजकुमार तो उसके प्यार में फिर से पागल था।

उत्सव खत्म होने से पहले ही वह वहॉ से फिर खिसक ली। लोगों को फिर पता नहीं चला कि वह कौन थी और कहॉ से आयी थी। जब सब लोग महल लौटे तो वह फिर वहीं अपनी मुर्गियों की देखभाल कर रही थी।

घर लौटने पर राजकुमार ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ क्या तुमको ऐसा नहीं लगा कि यह लड़की जो उत्सव में आयी थी वह अपनी मुर्गियों की देखभाल करने वाली नौकरानी थी?"

"तुम क्या बात करते हो? मुर्गियों की देखभाल करने वाली नौकरानी के पास भला ऐसी पोशाकें कहॉ से आ सकती हैं?"

सो अपनी बात को जॉचने के लिये उसने अपने शाही सलाहकार से यह पता करने के लिये कहा कि वह यह पता करे कि उनकी मुर्गियों की देखभाल करने वाली वह लड़की उत्सव में गयी थी या नहीं।

पर उसके सारे नौकरों ने कहा कि वे उसको मुर्गियों की देखभाल करते छोड़ गये थे और जब वे घर वापस लौटे तभी भी वह मुर्गियों की देखभाल ही कर रही थी। पर राजकुमार इस जवाब से सन्तुष्ट नहीं था।

राजकुमार बोला — "कुछ भी हो वह जो कोई भी लड़की थी वह वहॉ सबसे अच्छी थी। मैं उसको अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ। मैं उसको किसी तरह से भी ढूँढ निकालूँगा।"

तीसरे दिन डायोनिशिया अपनी आसमान और उसमें सारे तारों के रंग वाली पोशाक पहन कर गयी। उस दिन तो राजकुमार बस उसके पीछे पागल ही हो गया।

उसको वह यह पूछने के लिये भी नहीं मिली जो वह उससे यह पूछ लेता कि वह कौन थी कहॉ रहती थी पर उसने उसको एक जवाहरात दे दिया।

जब राजकुमार घर वापस लौटा तो उसने खाना खाना ही छोड़ दिया। वह दुबला होता गया और पीला पड़ता गया। वहॉ के सारे लोगों ने अपनी अपनी कोशिशें कर लीं उसको नये नये खाने खिला कर देख लिये पर राजकुमार की भूख वापस नहीं आयी।

आखिर मुर्गियों की देखभाल करने वाली नौकरानी ने भी सोचा कि वह भी राजकुमार के लिये एक खाना बना कर देखेगी शायद वह खाना राजकुमार को अच्छा लगे।

सो राजकुमारी ने मॉस के पानी[148] से एक खाना बनाया और उसको राजकुमार को भेजा पर साथ में उसने राजकुमार का दिया हुआ जवाहरात उस में डाल दिया।

[148] Translated for the word "Broth". Broth is the water in which meat or vegetables are boiled.

अब जैसा कि राजकुमार ने और सब खानों के साथ किया था उसको भी वह बिना चखे ही वापस भेज देने वाला था कि उसमें पड़े चमकीले जवाहरात ने उसका ध्यान खींच लिया।

उसने पूछा — "यह मॉस का पानी मेरे लिये किसने बनाया?"

मॉ बोली — "बेटे यह उस नौकरानी ने बनाया है जो हमारी मुर्गियॉ देखती भालती है।"

"उस नौकरानी को तुरन्त ही मेरे पास भेजो। मैं जानता था कि उत्सव में आने वह लड़की हमारी मुर्गियों की देखभाल करने वाली नौकरानी ही है।"

राजकुमार ने अगले दिन ही डायोनिशिया से शादी कर ली। असल में तो डायोनिशिया उसी पल से दुनियॉ की सबसे खुश लड़की थी जिस पल उसने राजकुमार को देखा था।

पर अफसोस अपनी इस खुशी में वह अपनी बचपन की दोस्त लैबिस्मैना का नाम तीन बार लेना भूल गयी जैसा कि उसने उससे वायदा किया था। क्योंकि उस समय तो वह राजकुमार के अलावा और कुछ सोच ही नहीं सकी।

अब लैबिस्मैना के लिये फिर से राजकुमारी बनने का और कोई तरीका नहीं था। उसको अब समुद्री सॉपिन के रूप में ही रहना था। वह अब कभी राजकुमारी बन कर धरती पर नहीं आ सकती थी और न अपना सुन्दर राजकुमार ही पा सकती थी।

इसी लिये वह आज तक समुद्र में कराहती हुई सुनी जाती है। शायद जब समुद्र का पानी किनारे से टकराता है तो तुमने भी सुना होगा कि वह पुकारता है "डायोनिशिया डायोनिशिया"।

एक समुद्री सॉपिन के दुखी होने के लिये इतना ही काफी है कि जिसके लिये उसने इतना किया हो वह उसको भूल जाये।

List of Cinderella Stories

The following 23 stories are given in my two books –
"Cinderella Europe Mein-1" and "Cinderella Europe Mein-2".
They are taken from the Web Site - http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#links

List of Cinderella Stories in "Cinderella Europe Mein-1"

1. Cinderella – (Germany)
2. Green Knight – (Denmark)
3. Broken Pitcher – (Denmark/Greece)
4. Rushen Coatie – (France)
5. Cinderella or Little Glass Slippers (France)
6. Finnett Cendron (France)
7. Conkiajgharuna, the Little Rag Girl – (Georgia)
8. The Little Saddleslut – (Greece)
9. The Orphan – (Greece)
10. The Little Saddleslut – (Greece)
11. The Orphan – (Greece)

List of Cinderella Stories in "Cinderella Europe Mein-2"

1. Ashey Pelt – (Ireland)
2. Fair, Brown and Trembling – (Ireland)
3. Cinderella – (Italy)
4. Katie Woodencloak (Norway)
5. Black Bull of Norroway (Norway)
6. The Hearth Cat – (Portugal)
7. The Sharp Grey Sheep – (Scotland)
8. Rashin Coatie – (Scotland)
9. Papelyouga or the Little Girl – (Serbia)
10. The Cinder Maid (European Mixture)

1. Story of Rhodopis
2. German Cinderella
3. French Cinderella
4. Baba Yaga-2

List of Cinderella Stories in “How Many Cinderella in the World-3”

1. Moon Brow
2. Yeh-Shen: a Cinderella story
3. The Wicked Stepmother
4. Story of the Black Cow
5. Sodewa Bai
6. The Korean Cinderella
7. Maria and the Golden Slipper
8. The Wonderful Birch
9. Baba Yaga
10. Vasilissa the Wise and Baba Yaga
11. The Golden Slipper
12. The Story of Tam and Cam
13. The Poor Turkey Girl
14. The Turkey Herd
15. The Indian Cinderella
16. The Hidden One
17. The Egyptian Cinderella
18. Rhodopis and Her Little Gilded Shoes
19. A Girl Frog and a Son of the Chief
20. Naitiki
21. Nomi and the Magical Fish
22. Why the Sea Moans

Some Books on Cinderella

Dundes, Alan, ed. *Cinderella: A Casebook*. University of Wisconsin Press, 1988.
Besides the texts of Basile, Perrault, and Grimm, this volume includes essays on Cinderella. Dundes also includes a select bibliography, pp. 309-313.]

Heiner, Heidi Anne, ed. *Cinderella: Tales from Around the World*. SurLaLune Press, 2012.
This collection offers a wide variety of Cinderella stories from around the world. Classic versions, such as the Egyptian Rhodopis and "The Cat Cinderella," are offered alongside lesser known versions such as "The Hearth Cat" from Portugal. The versions of the traditional Cinderella story come from all over the world including Russia, Mexico, and Chile. The collection also includes a selection of Catskin variants, "As Much as Meat Loves Salt" retellings, and "One Eye, Two Eye, Three Eye" stories. A helpful list of primary and secondary sources is also provided. The collection is useful for students or scholars and is available in print and digital formats.] [Annotation by Martha Johnson-Olin]

Philip, Neil, ed. *The Cinderella Story: The Origins and Variations of the Story Known As "Cinderella."* London: Penguin, 1989.
Includes Introduction; Cendrillon, or, "The Little Glass Slipper" (Andrew Lang's edition of Robert Samber's translation of Perrault); "Yeh-hsien" (from Tuan Ch'êngshih's *Yu Yang Tsa Tsu* (*Miscellany of Forgotten Lore* [China] AD 850-60); "Kajong and Halock" (from A. Landes' *Contes Tjames, traduits et annotés*, Saigon, 1887); "Benizara and Kakezara" (from Keigo Seki, *Folktakes of Japan*, 1963); "Burenushka, the Little Red Cow" (from Aleksandr Afanas'ev's*Russian Fairy Tales*, 1945); "The Poor Girl and Her Cow" (from E. S. Stevens, *Folk-Tales of 'Iraq*, 1931; "An Armenian Cinderella" (from Susie Hoogasian-Villa, *100 Armenian Tales and Their Folkloristic Relevance*, 1966; "Askenbasken, Who Became Queen" (from Evald Tang Kristensen, *Jyske Folkeminder*, Copenhagen, 1881; "Ashey Pelt" (Irish version recorded by M. Damant (1895); "Rashin Coatie" (from Andrew Lang, "Rashin Coatie. A Scotch Tale," 1876); "Mossycoat" (North English version recorded by T.W.Thompson, 1915); "Dona Labismina" (from Silvio Roméro, *Contos Populares do Brazil*, 1883); "La Sendraoeula" (from Caterina Pigorini-Beri, "La Cenerentola a Parma e a Camerino," Palermo, Italy, 1883); "The Poor Turkey Girl" (from Frank Cushing, Zuni Folk Tales, 1901); "The Boy and his Stepmother" (from A. Campbell, *Santal Folk Tales*, 1891); "The Finger Lock" (recorded from Andra "Hoochten" Stewart, Perthshire, Scotland, 1971); "The Bracket Bull" (from Douglas Hyde, *Four Irish Stories*, 1898); "Fair, Brown, and Trembling" (from Jeremiah Curtin, *Myths and Folk-lore of Ireland*, 1890); "Maria" (from Fletcher Gardner, "Filipino [Tagalog] Versions of Cinderella," 1906); "The Black Cat" (from F.M.Luzel, *Contes Populaires de Bass-Bretagne*, 1887); "The Maiden, the Frog and the Chief's Son" (from William Bascom, "Cinderella in Africa," 1972); "Rushycoat and the King's Son" (from Leonard Roberts, *Old Greasybeard: Tales from the Cumberland Gap*, 1969); "Cinderella in Tuscany" (from Alessandro Falassi, *Folklore by the Fireside: Text and Context of the Tuscan Veglia*, 1980); "The Travellers' Cinderella" (from the School of Scottish Studies Sound Archives, 1976); and suggested further readings.

Sierra, Judy. *Cinderella*. Illustrated by Joanne Caroselli. The Oryx Multicultural Folktale Series. Phoenix, Arizona: Oryx Press, 1992.

A text designed for school use with apparatus on activities and resources for young scholars. Includes "Rhodopis: A Cinderella in Ancient Egypt?"; "Yeh-hsien" (China); "Cinderella, or the Little Glass Slipper" (France); "Peu d'Anisso" (France); "Aschenputtel" (Germany); "Allerleirauh, or the Many-furred Creature" (Germany); "Little One-eye, Little Two-eyes, and Little Three-eyes" (Germany); "Cap o'Rushes" (England); "Billy Beg and the Bull" (Ireland); "Fair, Brown, and Trembling" (Ireland); "Hearth Cat" (Portugal); "Katie Woodencloak" (Norway); "The Wonderful Birch" (Finland); "The Story of Mjadveig, Daughter of Mani" (Iceland); "Little Rag Girl" (Republic of Georgia); "Vasilisa the Beautiful" (Russia); "The Little Red Fish and the Clog of Gold" (Iraq); "Nomi and the Magic Fish" (Africa); "How the Cowherd Found a Bride" (India); "The Invisible One" (Native American: Micmac); "Poor Turkey Girl" (Native American: Zuni); "Ashpet" (United States: Appalachia); "Benizara and Kakezara" (Japan); "Maria" (Philippines); "The Story of Tam and Cam" (Vietnam). With Introduction and Notes.

Sierra, Julie, ed. *Cinderella*. Westport, CT: Oryx Press, 1992.

[This volume is one part of the larger *Oryx Multicultural Folktale Series*. It includes translations of many classic retellings but focuses heavier on the traditional Cinderella storyline. It includes retellings from around the world, including Scotland, Iraq, and Vietnam. The discussions about the tale at the end of the volume are brief but can represent a starting place for students studying the tale.

List of Cinderella Stories given in above sources

This list has been prepared by collecting all the titles given in the books above. Titles in red are give in my books – "Cinderella Europe Mein-1", "Cinderella Europe Mein-2"and "Cinderella in the World".

Egyptian Rhodopis and "The Cat Cinderella"
"The Hearth Cat" from Portugal.
"As Much as Meat Loves Salt" retellings,
"One Eye, Two Eye, Three Eye" stories.

Cendrillon, or, "The Little Glass Slipper" (Andrew Lang's edition of Robert Samber's translation of Perrault);
"Yeh-hsien" (from Tuan Ch'êngshih's *Yu Yang Tsa Tsu* (*Miscellany of Forgotten Lore* [China] AD 850-60);
"Kajong and Halock" (from A. Landes' *Contes Tjames, traduits et annotés*, Saigon, 1887);
"Benizara and Kakezara" (from Keigo Seki, *Folktakes of Japan*, 1963);
"Burenushka, the Little Red Cow" (from Aleksandr Afanas'ev's *Russian Fairy Tales*, 1945);
"The Poor Girl and Her Cow" (from E. S. Stevens, *Folk-Tales of 'Iraq*, 1931;
"An Armenian Cinderella" (from Susie Hoogasian-Villa, *100 Armenian Tales and Their Folkloristic Relevance*, 1966;
"Askenbasken, Who Became Queen" (from Evald Tang Kristensen, *Jyske Folkeminder*, Copenhagen, 1881;
"Ashey Pelt" (Irish version recorded by M. Damant (1895);
"Rashin Coatie" (from Andrew Lang, "Rashin Coatie. A Scotch Tale," 1876);
"Mossycoat" (North English version recorded by T.W.Thompson, 1915);
"Dona Labismina" (from Silvio Roméro, *Contos Populares do Brazil*, 1883);
"La Sendraoeula" (from Caterina Pigorini-Beri, "La Cenerentola a Parma e a Camerino," Palermo, Italy, 1883);
"The Poor Turkey Girl" (from Frank Cushing, *Zuni Folk Tales*, 1901);
"The Boy and his Stepmother" (from A. Campbell, *Santal Folk Tales*, 1891);
"The Finger Lock" (recorded from Andra "Hoochten" Stewart, Perthshire, Scotland, 1971);
"The Bracket Bull" (from Douglas Hyde, *Four Irish Stories*, 1898);
"Fair, Brown, and Trembling" (from Jeremiah Curtin, *Myths and Folk-lore of Ireland*, 1890);
"Maria" (from Fletcher Gardner, "Filipino [Tagalog] Versions of Cinderella," 1906);
"The Black Cat" (from F.M.Luzel, *Contes Populaires de Bass-Bretagne*, 1887);
"The Maiden, the Frog and the Chief's Son" (from William Bascom, "Cinderella in Africa," 1972);
"Rushycoat and the King's Son" (from Leonard Roberts, *Old Greasybeard: Tales from the Cumberland Gap*, 1969);
"Cinderella in Tuscany" (from Alessandro Falassi, *Folklore by the Fireside: Text and Context of the Tuscan Veglia*, 1980);
"The Travellers' Cinderella" (from the School of Scottish Studies Sound Archives, 1976);
"Rhodopis: A Cinderella in Ancient Egypt?";
"Yeh-hsien" (China);
"Cinderella, or the Little Glass Slipper" (France);
"Peu d'Anisso" (France);

"Aschenputtel" (Germany);
"Allerleirauh, or the Many-furred Creature" (Germany);
"Little One-eye, Little Two-eyes, and Little Three-eyes" (Germany);
"Cap o'Rushes" (England);
"Billy Beg and the Bull" (Ireland);
"Fair, Brown, and Trembling" (Ireland);
"Hearth Cat" (Portugal);
"Katie Woodencloak" (Norway);
"The Wonderful Birch" (Finland) Given in "Cinderella in the World" (Russia);
"The Story of Mjadveig, Daughter of Mani" (Iceland);
"Little Rag Girl" (Republic of Georgia);
"Vasilisa the Beautiful" (Russia);
"The Little Red Fish and the Clog of Gold" (Iraq);
"Nomi and the Magic Fish" (Africa);
"How the Cowherd Found a Bride" (India)
"The Invisible One" (Native American: Micmac);
"Poor Turkey Girl" (Native American: Zuni);
"Ashpet" (United States: Appalachia);
"Benizara and Kakezara" (Japan);
"Maria" (Philippines);
"The Story of Tam and Cam" (Vietnam).

There are some other stories also which I have written in my books but they are not given here in this list …

Links to Related Sites

The Annotated Cinderella, from the SurLaLune Fairy Tales by Heidi Anne Heiner.

Cinderella, from *Wikipedia*, the free encyclopedia.

Cinderella Bibliography. A thorough and scholarly annotated bibliography of texts, analogues, criticism, modern versions, parodies -- ranging from ancient folklore through recent popular culture, and modern scholarship. Organized by Russell A. Peck, University of Rochester.

Cox, Marian Roalfe. *Cinderella: Three Hundred and Forty-Five Variants of Cinderella, Catskin, and Cap o' Rushes*, with an introduction by Andrew Lang (London: Published for the Folk-Lore Society by David Nutt, 1893). This book is available at http://www.surlalunefairytales.com/cinderella/marianroalfecox/index.html also

The Father Who Wanted to Marry His Daughter, folktales of type 510B. These stories resemble the "Cinderella" tales (type 510A), but they also include an episode depicting attempted incest. Here DL Ashliman has given more than **22 stories** in full.

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Pig King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022